PRESS & MEDIA

CSIR-CENTRAL BUILDING RESEARCH INSTITUTE, ROORKEE, UTTARAKHAND

CSIR-CBRI in the Limelight | 27.11.2025 & 28.11.2025

केवी देहरादून के छात्रों ने किया सीएसआईआर-सीबीआरआई का दौरा

■ जिज्ञासा-2.0 छात्र वैज्ञानिक संपर्क कार्यक्रम के तहत ली तकनीकी जानकारी

सीबीआरआई का दौरा करने वाले छात्र व अधिकारी।

रुड़की, 27 नवम्बर (अनिल): पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय, आईएमए देहरादून के 101 छात्रों और 6 शिक्षकों ने मंगलवार को सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की का शैक्षणिक दौरा किया। यह भ्रमण सीएसआईआर 'जिज्ञासा 2.0' छात्र-वैज्ञानिक संपर्क कार्यक्रम के तहत आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. बिलिंग की प्रदर्शनी गैलरी के भ्रमण से हुई, जहां छात्रों ने सीबीआरआई द्वारा विकसित विभिन्न वैज्ञानिक मॉडलों, नवीन तकनीकों और शोध कार्यों को नजदीक से देखा। इस दौरान वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ताबिश आलम ने राम मंदिर मॉडल समेत कई प्रदर्शनियों की जानकारी दी। वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. नीरज जैन ने छात्रों को जिगजैग ईंट भट्ठा मॉडल और अन्य नवाचारों के बारे में विस्तार से बताया। तकनीकी भ्रमण का दूसरा चरण आरएनटी सभागार में आयोजित हुआ, जहां डॉ. ताबिश आलम ने कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ. नीरज जैन ने जिज्ञासा 2.0 कार्यक्रम के उद्देश्यों और इसकी संरचना के बारे में अवगत कराया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि यह कार्यक्रम युवाओं को वास्तविक वैज्ञानिक अवधारणाओं से जोड़ने और कक्षा से बाहर सीखने का अनूठा अवसर प्रदान करता है। छात्रों ने ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क, अग्नि सुरक्षा अभियांत्रिकी प्रयोगशाला सहित शोध प्रक्रियाओं और वैज्ञानिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की।

Presented in Garhwal Post Newspaper

दैनिक जागरण

CBRI LIBRARY ROORKEE

पीएम श्री केवि आइएमए के छात्रों ने सीबीआरआइ का किया भ्रमण

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की का पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय आइएमए देहरादून के छात्रों ने 'जिज्ञासा 2.0' कार्यक्रम के तहत भ्रमण किया। छात्र-छात्राओं ने विज्ञानियों से संवाद करने के साथ ही प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया। भ्रमण करने वालों में विद्यालय के 101 छात्र और छह शिक्षक शामिल रहे।

सीबीआरआइ में गुरुवार को छात्रों के भ्रमण कार्यक्रम की शुरुआत डा. बिलिंग प्रदर्शनी गैलरी से हुई। जहां छात्रों ने संस्थान के विज्ञानियों द्वारा निर्मित विविध वैज्ञानिक प्रदर्शनियों, नवीन तकनीकों और चल रहे शोध विकास का अवलोकन किया। वरिष्ठ विज्ञानी डा. ताबिश आलम ने राम मंदिर माडल और कई अन्य अनुसंधान के बारे में जानकारी दी। वरिष्ठ प्रधान विज्ञानी डा. नीरज जैन ने जिगजैग ईंट भट्ठा माडल और अन्य नवाचारों के बारे में अवगत कराया। अगला सत्र आरएनटी सभागार में आयोजित हुआ। इस मौके पर सीबीआरआइ के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि यह कार्यक्रम युवा शिक्षार्थियों को वास्तविक समय की वैज्ञानिक अवधारणाओं से जुड़ने और कक्षा-आधारित शिक्षा से परे अपनी समझ को व्यापक बनाने के लिए एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करता है। डा. नीरज जैन ने जिज्ञासा 2.0 कार्यक्रम के उद्देश्यों, संरचना और इसके द्वारा प्रदान किए जाने वाले अनुभवात्मक शिक्षण अवसरों की रूपरेखा प्रस्तुत की। प्रधान विज्ञानी डा. सौमित्र मैती ने अपशिष्ट से धन विषय पर व्याख्यान दिया। जिसमें उन्होंने अपशिष्ट को उपयोगी संसाधनों में बदलने की आधुनिक तकनीकों और स्थायित्व के लिए उनकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। इसके बाद छात्रों ने ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क, अग्नि सुरक्षा अभियांत्रिकी प्रयोगशाला आदि का भ्रमण किया। इस दौरान यहां चल रही शोध गतिविधियों और वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी एकत्रित की।

'जिज्ञासा 2.0' कार्यक्रम के तहत सीबीआरआइ रुड़की में भ्रमण के दौरान जानकारी हासिल करते पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय आइएमए देहरादून के विद्यार्थी • साभार-संस्थान

Presented in Dainik Jagran Newspaper

अनुसंधान | केवी देहरादून के छात्रों ने किया सीएसआईआर–सीबीआरआई रुड़की का शैक्षिक भ्रमण

'समस्याओं के समाधान को विज्ञान की खोज जारी रखें स्टूडेंट्स'

■ वैज्ञानिक जिज्ञासा और जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया आयोजन

Presented in Dainik Jagran Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 21.11.2025

देहरादून, शनिवार
22 नवंबर, 2025
हरिद्वार संस्करण

www.jagran.com

दैनिक जागरण

भारतीय स्टार्टअप को मदद देगा इजरायल: गोयल 15

घुसपैठियों को चुन-चुनकर बाहर निकालेंगे 17

शहरी सुरक्षा, बुनियादी ढांचा प्रबंधन और आपदा न्यूनीकरण पर विचार किए साझा

सीबीआरआइ की ओर से "एक स्वास्थ्य, एक विश्व" विषय पर वैश्विक सम्मेलन

जागरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की की ओर से "एक स्वास्थ्य, एक विश्व-2025" विषय पर आयोजित वैश्विक सम्मेलन के द्वितीय दिवस महत्वपूर्ण वैज्ञानिक सत्रों और संवादात्मक चर्चाएं हुईं। व्याख्यान सत्रों के अलावा प्रदर्शनी भी लगाई गई। प्रदर्शनी में अनुसंधान, प्रौद्योगिकियां और नवाचार प्रदर्शित किए गए। जिसके माध्यम से सम्मेलन में आए राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय प्रतिभागियों ने जानकारी एकत्रित की।

"एक स्वास्थ्य, एक विश्व-2025" वैश्विक सम्मेलन शुक्रवार को बहादराबाद स्थित एक होटल और सीबीआरआइ परिसर में हुई। विभिन्न सत्रों में प्रोफेसरों और विज्ञानियों ने शहरी सुरक्षा व आपदा न्यूनीकरण, बुनियादी ढांचा प्रबंधन, सतत निर्मित वातावरण आदि विषयों पर व्याख्यान दिए। जिसमें वक्ताओं ने अपनी नवीनतम अंतर्दृष्टि और विशेषज्ञता प्रस्तुत की।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास के प्रोफेसर सीवीआर मूर्ति ने शहरी सुरक्षा पर व्याख्यान दिया। उन्होंने भूकंपरोधी भवन डिजाइन और लचीली संरचनाओं के महत्व को समझाया। बीजी श्रीके कंस्ट्रक्शन टेक प्राइवेट लिमिटेड, पुणे के योगेश पी. काजले ने बुनियादी ढांचा प्रबंधन पर विचार रखे। उन्होंने आधुनिक निर्माण तकनीकों और कुशल परियोजना निष्पादन विधियों पर प्रकाश डाला। उत्तराखंड भूस्खलन न्यूनीकरण और प्रबंधन केंद्र देहरादून के निदेशक डा. शांतनु सरकार ने आपदा न्यूनीकरण पर व्याख्यान देते हुए भूस्खलन-प्रवण क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित कराया।

उन्होंने निगरानी प्रणालियों और निवारक रणनीतियों पर चर्चा की। सीबीआरआइ रुड़की के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार, वैश्विक सम्मेलन के आयोजन सचिव डा. अजय चौरसिया और अन्य विशेषज्ञों ने भी सीबीआइआइ में चल रहे सम्मेलन में अपने विचार रखे।

सीबीआरआइ रुडकी की ओर से "एक स्वास्थ्य, एक विश्व" विषय पर आयोजित वैश्विक सम्मेलन मे शामिल राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय प्रतिभागी • साभार-संस्थान

प्रतिभागियों ने किया सीबीआरआइ परिसर का दौरा

रुड़की: विभिन्न सत्रों के बाद राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों ने सीबीआरआइ परिसर का दौरा किया। जहां प्रमुख अनुसंधान और परीक्षण सुविधाओं का भ्रमण आयोजित किया गया। प्रतिभागियों ने सीबीआरआइ प्रदर्शनी गैलरी, राष्ट्रीय भूकंप इंजीनियरिंग परीक्षण सुविधा, भू-तकनीकी परीक्षण सुविधा, 3डी कंक्रीट प्रिंटिंग लैब, अग्नि अनुसंधान प्रयोगशाला, ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क, उन्नत कंक्रीट और स्टील कम्पोजिट लैब और निर्माण प्रौद्योगिकी प्रदर्शन पार्क का अवलोकन किया। इसके माध्यम से उन्होंने सीबीआरआइ के निरंतर वैज्ञानिक योगदान के बारे में जानकारी हासिल की।

Presented in Dainik jagran Newspaper

10 Garhwal Post www.garhwalpost.in Dehradun, 21 Nov, 2025 Dehradun

CBRI Roorkee hosts Global OHOW 2025 Meet

Garhwal Post Bureau

ROORKEE, 20 Nov: The One Health One World (OHOW) 2025 programme, organised by CSIR-Central Building Research Institute (CBRI) Roorkee, began its main event today at Hotel Clarks Safari, Roorkee–Haridwar. The international gathering saw participation from 13 countries, with 350+ participants and 50+ delegates from different nations.

The programme opened with ceremonial lamp lighting performed by the distinguished guests.

Dr Ajay Chourasia, (Organising Secretary) welcomed all guests and participants and delivered an overview of the event. He highlighted key themes including infrastructure, infrastructure management, public health research in Asia, climate change, sustainable development, and disaster mitigation.

The Director of CSIR-CBRI then addressed the gathering, welcoming all international and national delegates. He spoke about India's growing economy, the importance of disaster resilience, ongoing retrofitting activities, and the nation's commitment toward building a safer and sustainable future.

A professor from the University of Tokyo, (Conference, Co-Chair) Dr Wataru Takeuchi, Institute of Industrial Science, extended warm greetings to everyone present. He spoke on the OHOW vision, touching on One Health One World, infrastructure development, disaster mitigation, and disaster resilience, while also appreciating CSIR-CBRI for successfully hosting the global programme.

Professor CVR Murty welcomed all guests and shared his insights on disaster-related issues and research developments.

Dr Krishna S Vatsa, Member of the National Disaster Management Authority (NDMA), addressed the audience next. He spoke about modern engineering and infrastructure in Roorkee, the historic water canal system, and India–Japan collaboration in disaster management. He also acknowledged Japan's leadership and commitment to global disaster resilience.

The Chief Guest, Professor Kimiro Meguro, Co-Founder of the World Seismic Safety Institute, expressed gratitude for the invitation. He delivered an impactful address on climate change, industrial disasters, and the importance of scientific and sustainable approaches. He also appreciated Professor Pradeep for his vision and dedication and wished CSIR-CBRI great success for the programme.

The programme concluded with a formal Vote of Thanks delivered by Dr Ajay Chourasia.

After this, different lectures were delivered by various Professors.

A lecture was given by Professor Kimiro Meguro on the topic, "Comprehensive Disaster Management System for Minimising Negative Impact".

After this lecture was given by Dr Krishna S Vatsa and Dr Juin Fu Chai.

After this, lectures were given on Urban Safety and Disaster Mitigation, Infrastructure Management and Sustainable Built Environment, International Public Health Research in Asia, Climate Change and Green Recovery by Professors and Scientists.

Presented in Garhwal Post Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 19.11.2025

Ministry of Science & Technology

CBRI Hosts Pre-Conference Event for the 4th International Symposium on "One Health, One World"

• Pre-conference workshop titled "One World, Many Hazards" organised at CSIR–CBRI

• Participants from University of Tokyo (Japan), COER University and AcSIR India presented posters and oral talks

प्रविष्टि तिथि: 18 NOV 2025 6:38PM by PIB Dehradun

CSIR–Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, organised a pre-conference event titled "One World, Many Hazards" today as part of the upcoming 4th International Symposium on One Health, One World (OHOW-2025).

Participants from the University of Tokyo, Japan, COER University and AcSIR India actively took part in the programme, showcasing their ideas and research through hand-drawn chart-based art forms. Their posters highlighted various global hazards including earthquakes, landslides, pollution, heart-health concerns and pandemic situations. They also presented combined issues along with possible solutions, which were discussed in detail during the session. The poster display was followed by oral presentations, reflecting the participants' creativity, scientific temperament and interdisciplinary approach.

The pre-conference workshop sessions were chaired and the presentations evaluated by Dr. D. P. Kanungo and Organizing Secretary Dr. Ajay Chourasia. The programme was coordinated by Dr. Debdutta Ghosh and Dr. R. Siva Chidambaram.

The event served as a dynamic platform for knowledge exchange and strengthened international collaboration toward addressing global hazards under the overarching theme of "One Health, One World."

(रिलीज़ आईडी: 2191330) आगंतुक पटल : 162

Presented on : https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2191330

'एक स्वास्थ्य-एक विश्व' पर सम्मेलन पर चर्चा

रुड़की, 18 नवम्बर (अनिल): केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) में 'एक स्वास्थ्य, एक विश्व' विषय पर आगामी चौथी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के तहत सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला का आयोजन किया गया। 'एकविश्व-अनेकसंकट' शीर्षक से हुए इस कार्यक्रम में टोक्यो विश्वविद्यालय (जापान), सीओईआर विश्वविद्यालय तथा एसीएसआईआर इंडिया के प्रतिभागियों ने सक्रिय भागीदारी दर्ज की।

सम्मेलन में प्रतिभाग करते प्रतिनिधिगण।

प्रतिभागियों ने चार्ट पर हस्तनिर्मित कलाकृतियों के माध्यम से भूकंप, भूस्खलन, प्रदूषण, हृदय-स्वास्थ्य समस्याओं और महामारी जैसे विविध आपदाओं से जुड़े मुद्दों को प्रस्तुत किया। उन्होंने इन चुनौतियों से निपटने के संभावित समाधान भी साझा किए, जिन पर सत्र के दौरान विस्तार से चर्चा की गई। पोस्टर प्रदर्शन के बाद हुई मौखिक प्रस्तुतियों ने प्रतिभागियों की रचनात्मकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को उजागर किया। कार्यशाला के सत्रों की अध्यक्षता तथा मूल्यांकन डॉ. डीपी कानूनगो और डॉ. अजय चौरसिया ने किया।

कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. देवदत्त घोष और डॉ. आर. शिव चिदंबरम द्वारा किया गया।

यह सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला ज्ञान-विनिमय का प्रभावी मंच सिद्ध हुई और 'एक स्वास्थ्य, एक विश्व' के व्यापक विषय के अंतर्गत वैश्विक खतरों से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग को सुदृढ़ किया।

Presented in Garhwal Post Newspaper

सीएसआईआर-सीबीआरआई में “एक स्वास्थ्य, एक विश्व” अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी से पहले सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला हुई आयोजित।

सीएसआईआर-सीबीआरआई में “एक स्वास्थ्य, एक विश्व” अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी से पहले सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला हुई आयोजित।

जापान व भारत के शोधार्थियों ने आपदाओं और स्वास्थ्य चुनौतियों पर रखे विचार

रुड़की। सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर-सीबीआरआई में आगामी चौथी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी “एक स्वास्थ्य, एक विश्व” की तैयारियों के तहत आज सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। “एक विश्व, अनेक संकट” विषय पर आधारित इस विशेष सत्र में भारत, जापान और अन्य देशों के शोधार्थियों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराते हुए वैश्विक खतरों और समाधान पर गहन विचार-विमर्श किया।

रुड़की। सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर-सीबीआरआई में आगामी चौथी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी “एक स्वास्थ्य, एक विश्व” की तैयारियों के तहत आज सम्मेलन-पूर्व कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। “एक विश्व, अनेक संकट” विषय पर आधारित इस विशेष सत्र में भारत, जापान और अन्य देशों के शोधार्थियों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराते हुए वैश्विक खतरों और समाधान पर गहन विचार-विमर्श किया।

पोस्टर प्रदर्शन के बाद हुए मौखिक प्रस्तुतिकरण प्रतिभागियों की वैज्ञानिक सोच, रचनात्मकता और शोध दृष्टिकोण का उत्कृष्ट उदाहरण रहे।

कार्यशाला के सत्रों की अध्यक्षता और मूल्यांकन डॉ. डी. पी. कानूनगो और डॉ. अजय चौरसिया द्वारा किया गया, जबकि कार्यक्रम का सफल समन्वयन डॉ. देबदत्त घोष और डॉ. आर. शिव चिदंबरम ने किया।

Presented on: https://www.shrisangamnews.in/Home/NewsDetails/513

"एक स्वास्थ्य, एक विश्व" पर आयोजित होने वाली चौथी अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए सीबीआरआइ रुड़की की ओर से आयोजित सम्मेलन पूर्व कार्यक्रम में उपस्थित विज्ञानी और प्रतिभागी • सामान्य-संस्थान

आपदाओं से जुड़ी समस्याओं और संभावित समाधानों को किया प्रस्तुत

जागरण संवाददाता, रुड़की: केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की ने "एक स्वास्थ्य, एक विश्व" पर चौथी अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए मंगलवार को सम्मेलन पूर्व कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसका शीर्षक "एक विश्व, अनेक संकट" रहा। 20 नवंबर को तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ होगा।

सीबीआरआइ रुड़की परिसर में सम्मेलन पूर्व कार्यक्रम में टोक्यो विश्वविद्यालय, जापान, सीओईआर विश्वविद्यालय तथा एसीएसआइआर इंडिया के प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। इस दौरान चार्ट पर बनाई गई कलाकृतियों के माध्यम से विचारों और शोध को प्रदर्शित किया गया। जिसमें भूकंप, भूस्खलन, प्रदूषण, हृदय-स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं और विभिन्न आपदाओं से जुड़ी समस्याओं पर प्रकाश डाला गया। सम्मेलन पूर्व कार्यशाला सत्रों की अध्यक्षता एवं प्रस्तुतियों का मूल्यांकन डा. डीपी कानूनगो और डा. अजय चौरसिया व समन्वयन डा. देबदत्त घोष और डा. आर शिव चिदंबरम ने किया। अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजन सचिव एवं संस्थान के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया ने बताया कि कार्यक्रम ने ज्ञान के आदान-प्रदान को एक मंच के रूप में कार्य किया।

Presented in Sabhar Sansthan Newspaper

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय

सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में “एक स्वास्थ्य, एक विश्व” 2025 के दूसरे दिन प्री-कॉन्फ्रेंस छात्र कार्यशाला का आयोजन

- भारत और जापान के छात्रों और प्रोफेसरों ने एक व्यावहारिक संरचनात्मक इंजीनियरिंग कार्यशाला में भाग लिया।
- सात टीमों ने "भवन और पुल" विषय पर काम किया, जिसका मार्गदर्शन सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ विशेषज्ञों ने किया।

प्रविष्टि तिथि: 19 NOV 2025 7:32PM by PIB Dehradun

"एक स्वास्थ्य, एक विश्व" 2025 कार्यक्रम के दूसरे दिन सीएसआईआर-सीबीआरआई रुड़की में एक उत्साहपूर्ण प्री-कॉन्फ्रेंस कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें भारत और जापान के युवा प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस कार्यक्रम में कुल 23 छात्रों और टोक्यो विश्वविद्यालय, टोक्यो टेक्नी (जापान), टीआईईटी पंजाब, एनआईटी उत्तराखंड, सीओईआर विश्वविद्यालय तथा अकादमी ऑफ़ साइंटिफ़िक एंड इनोवेटिव रिसर्च (एसीएसआईआर) सहित विभिन्न संस्थानों के चार प्रोफेसरों ने हिस्सा लिया।

कार्यशाला के लिए छात्रों को सात टीमों में विभाजित किया गया, जिन्हें "बिल्डिंग्स एंड ब्रिजेस" की थीम पर कार्य करना था। प्रतिभागियों का उत्साह और ऊर्जा पूरे सत्र को बेहद रोचक और सहयोगात्मक बनाते रहे।
सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ विशेषज्ञों—डॉ. डी. पी. कानूंगो, डॉ. अजय चौरसिया (आयोजन सचिव), डॉ. ठेबदत्ता घोष और डॉ. आर. शिवा चिदंबरम (प्री-कॉन्फ्रेंस कार्यशाला समन्वयक)—ने छात्रों से संवाद किया और भवन डिज़ाइन, पुल संरचनाओं तथा आधुनिक अवसंरचना से जुड़े महत्वपूर्ण विचार साझा किए।
डॉ. अजय चौरसिया ने सभी छात्रों और प्रोफेसरों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा और स्ट्रक्चरल कॉन्सेप्ट समझने के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।

डॉ. डी. पी. कानूंगो ने भी छात्रों को संबोधित किया और आज के समय में अवसंरचना विकास के महत्व पर जोर दिया। सौहार्दपूर्ण माहौल बनाने के लिए डॉ. अजय चौरसिया ने सभी प्रतिभागियों को गुलाब भेंट किए।
इसके बाद डॉ. आर. शिवा चिदंबरम और डॉ. ठेबदत्ता घोष ने इमारतों और पुलों के विषय पर तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया, जिसमें उन्होंने संरचनात्मक डिज़ाइन से संबंधित व्यावहारिक पहलुओं पर चर्चा की।

डॉ. डी. पी. कानूंगो ने भी छात्रों को संबोधित किया और आज के समय में अवसंरचना विकास के महत्व पर जोर दिया। सौहार्दपूर्ण माहौल बनाने के लिए डॉ. अजय चौरसिया ने सभी प्रतिभागियों को गुलाब भेंट किए।
इसके बाद डॉ. आर. शिवा चिदंबरम और डॉ. ठेबदत्ता घोष ने इमारतों और पुलों के विषय पर तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया, जिसमें उन्होंने संरचनात्मक डिज़ाइन से संबंधित व्यावहारिक पहलुओं पर चर्चा की।

इन विचार-विमर्शों के बाद छात्रों की टीमों ने अपने-अपने स्ट्रक्चरल मॉडल तैयार किए, जिन्हें बाद में महत्वपूर्ण लोडिंग परिस्थितियों के तहत परीक्षण किया गया।
यह कार्यशाला अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक आदान-प्रदान का एक सशक्त मंच साबित हुई और छात्रों को स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग में नवाचारपूर्ण विचारों को खोजने के लिए प्रेरित किया।

(रिलीज़ आईडी: 2191825) आगंतुक पटल : 17
इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English

Presented on: https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2191825

Azadi Ka Amrit Mahotsav

CSIR-CBRI Roorkee Hosts Second Day of "One Health, One World 2025"

- Students and professors from India and Japan participated in a hands-on structural engineering workshop.
- Seven student teams worked on the theme "Buildings and Bridges," guided by senior CSIR-CBRI experts.

प्रविष्टि तिथि: 19 NOV 2025 7:19PM by PIB Dehradun

The second day of the OHOW 2025 program at CSIR-CBRI Roorkee was marked by an engaging pre-conference workshop that brought together young minds from India and Japan. A total of 23 students and four professors from University of Tokyo, Tokyo Denki from Japan, TIET Punjab, NIT Uttarakhand, COER University, AcSIR from India participated in the event.

For the workshop, the students were divided into seven teams, working on the theme "Buildings and Bridges." The energy and excitement among the participants made the session lively and collaborative.

Senior experts from CSIR-CBRI interacted with the students, including Dr. D.P. Kanungo, and Dr. Ajay Chourasia (Organising Secretary), Dr. Debdutta Ghosh and Dr. R. Siva Chidambaram (Co-ordinators of Pre-Conference Workshop). They discussed various ideas related to building design, bridge structures, and modern infrastructure.

Dr. Ajay Chourasia welcomed all the students and professors, sharing insights about the program and the importance of understanding structural concepts. Dr. D.P. Kanungo also addressed the students. He highlighted the significance of infrastructure development in today's world.

As a warm gesture, Dr. Ajay Chourasia presented roses to all the participants. Later, Dr. R. Siva Chidambaram and Dr. Debdutta Ghosh provided technical guidance on buildings and bridges, explaining practical aspects such as design approach used in building and bridge structures.

Presented on: https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2191817

CSIR-CBRI in the Limelight | 18.11.2025

दैनिक जागरण

सीबीआरआइ में जुटेंगे विश्वभर के विज्ञानी

संवाद सहयोगी, जागरण • रुड़की : सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआइ), रुड़की 20 से 22 नवंबर तक 'वन हेल्थ, वन वर्ल्ड' 2025 अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की मेजबानी करेगा। इसमें विश्वभर के विज्ञानी, शोधकर्ता और नीति-निर्माता जलवायु परिवर्तन एवं आपदा प्रबंधन पर विचार साझा करेंगे। इस आयोजन की अध्यक्षता सीएसआइआर-सीबीआरआइ में निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार और टोक्यो विश्वविद्यालय के प्रो. वातरु ताकेउची करेंगे।

टोक्यो विवि जापान के सहयोग से आयोजित इस संगोष्ठी का संयोजन सेक्रेटरी डा. अजय चौरसिया, मुख्य वैज्ञानिक सीएसआइआर सीबीआरआइ करेंगे। यह वैश्विक स्तर का सम्मेलन जलवायु परिवर्तन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण, सतत अवसंरचना और सामुदायिक सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर केंद्रित होगा। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में टोक्यो विवि के प्रो. किमीरो मेगुरो मुख्य अतिथि होंगे, जो 'जापान में आदर्श आपदा प्रबंधन उपायों' पर विशेष व्याख्यान देंगे। वहीं, एनडीएमए के सदस्य डा. कृष्ण एस वत्स 'पोस्ट-डिजास्टर नीड्स असेसमेंट और भारत की आपदा तैयारी' पर विचार प्रस्तुत करेंगे। तीन दिवसीय सम्मेलन में 70 से अधिक अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों सहित 350 से अधिक प्रतिभागियों के जुटने की उम्मीद है।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

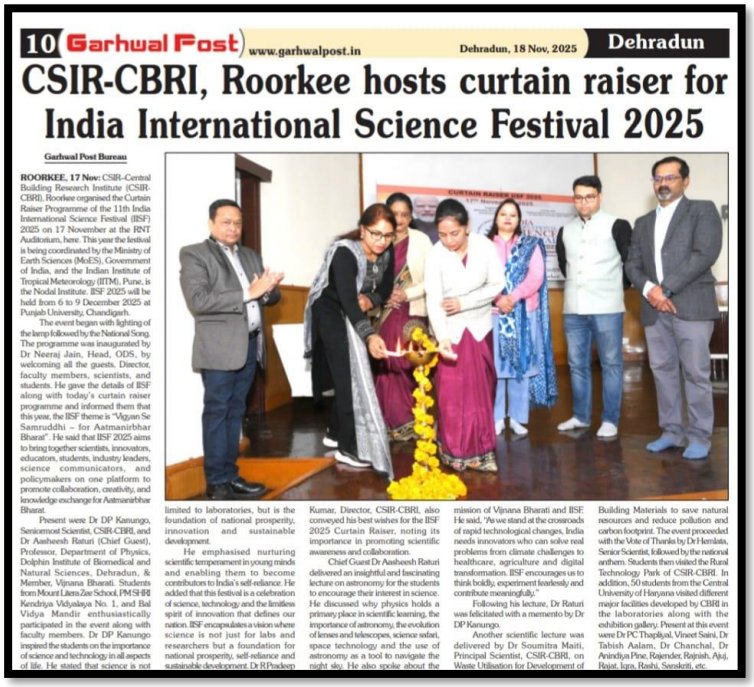

10 Garhwal Post www.garhwalpost.in Dehradun, 18 Nov, 2025 Dehradun

CSIR-CBRI, Roorkee hosts curtain raiser for India International Science Festival 2025

Garhwal Post Bureau

ROORKEE, 17 Nov: CSIR-Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee organised the Curtain Raiser Programme of the 11th India International Science Festival (IISF) 2025 on 17 November at the RNT Auditorium, here. This year the festival is being coordinated by the Ministry of Earth Sciences (MoES), Government of India, and the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune, is the Nodal Institute. IISF 2025 will be held from 6 to 9 December 2025 at Punjab University, Chandigarh.

The event began with lighting of the lamp followed by the National Song. The programme was inaugurated by Dr Neeraj Jain, Head, ODS, by welcoming all the guests, Director, faculty members, scientists, and students. He gave the details of IISF along with today's curtain raiser programme and informed them that this year, the IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat". He said that IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry leaders, science communicators, and policymakers on one platform to promote collaboration, creativity, and knowledge exchange for Aatmanirbhar Bharat.

Present were Dr DP Kanungo, Seniormost Scientist, CSIR-CBRI, and Dr Aasheesh Raturi (Chief Guest), Professor, Department of Physics, Dolphin Institute of Biomedical and Natural Sciences, Dehradun, & Member, Vijnana Bharati. Students from Mount Litera Zee School, PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 1, and Bal Vidya Mandir enthusiastically participated in the event along with faculty members. Dr DP Kanungo inspired the students on the importance of science and technology in all aspects of life. He stated that science is not limited to laboratories, but is the foundation of national prosperity, innovation and sustainable development.

He emphasised nurturing scientific temperament in young minds and enabling them to become contributors to India's self-reliance. He added that this festival is a celebration of science, technology and the limitless spirit of innovation that defines our nation. IISF encapsulates a vision where science is not just for labs and researchers but a foundation for national prosperity, self-reliance and sustainable development. Dr R Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, also conveyed his best wishes for the IISF 2025 Curtain Raiser, noting its importance in promoting scientific awareness and collaboration.

Chief Guest Dr Aasheesh Raturi delivered an insightful and fascinating lecture on astronomy for the students to encourage their interest in science. He discussed why physics holds a primary place in scientific learning, the importance of astronomy, the evolution of lenses and telescopes, science safari, space technology and the use of astronomy as a tool to navigate the night sky. He also spoke about the mission of Vijnana Bharati and IISF. He said, "As we stand at the crossroads of rapid technological changes, India needs innovators who can solve real problems from climate challenges to healthcare, agriculture and digital transformation. IISF encourages us to think boldly, experiment fearlessly and contribute meaningfully."

Following his lecture, Dr Raturi was felicitated with a memento by Dr DP Kanungo.

Another scientific lecture was delivered by Dr Soumitra Maiti, Principal Scientist, CSIR-CBRI, on Waste Utilisation for Development of Building Materials to save natural resources and reduce pollution and carbon footprint. The event proceeded with the Vote of Thanks by Dr Hemlata, Senior Scientist, followed by the national anthem. Students then visited the Rural Technology Park of CSIR-CBRI. In addition, 50 students from the Central University of Haryana visited different major facilities developed by CBRI in the laboratories along with the exhibition gallery. Present at this event were Dr PC Thapliyal, Vineet Saini, Dr Tabish Aalam, Dr Chanchal, Dr Anindiya Pine, Rajender, Rajnish, Ajuj, Rajat, Iqra, Rashi, Sanskriti, etc.

Presented in Garhwal Post Newspaper

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ) 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम आयोजित

❍ इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल के कर्टेन रेज़र कार्यक्रम के इस वर्ष की थीम विज्ञान से समृद्धि: आत्मनिर्भर भारत है ❍आईआईएसएफ 2025 का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं को एक मंच पर लाना है ❍ 11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम 17 नवंबर 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित हुआ

Presented in local Newspaper

देहरादून, मंगलवार 18 नवंबर 2025 दैनिक कलम का दायित्व पृष्ठ 7

CBRI , रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2025 का कर्टेन रेजर कार्यक्रम आयोजित

Presented in Dainik Jagran Newspaper

Science is not only for laboratories but also the foundation of national development, self-reliance and sustainable development: CBR Roorkee hosted the curtain raiser program for India International Science Festival 2025

Vo.No.22 Issue No. 48 Date:. 18-11-2025 RNI No. UTTURD/2004/14529

روزنامہ صحافت

SAHAFAT URDU DAILY, DEHRADUN

Published From DEHRADUN, Lucknow, Delhi & Mumbai

سائنس صرف تجربہ گاہوں کیلئے نہیں بلکہ قومی ترقی، خود انحصاری اور پائیدار ترقی کی بنیاد ہے

سی بی آر آئی روڑکی نے انڈیا انٹرنیشنل سائنس فیسٹیول 2025 کیلئے پردہ اٹھانے والے پروگرام کی میزبانی کی

Presented in Sahafat urdu daily Newspaper

नवाचार सोच को बढ़ावा देने पर जोर

● सीबीआरआई में साइंस फेस्टिवल का कर्टेन रेज़र

रुड़की,लोकसत्य।

सीबीआरआई, रुड़की में सोमवार को इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ) 2025 के कर्टेन रेजर कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें नवाचारों और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने पर विशेष फोकस रहा। इस वर्ष महोत्सव की थीम "विज्ञान से समृद्धि : आत्मनिर्भर भारत" तय की गई है। कार्यक्रम का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों और उद्योग विशेषज्ञों को एक मंच पर लाना है। आईआईएसएफ का मुख्य आयोजन 6 से 9 दिसंबर तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में होगा।

इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल के कर्टेन रेजर कार्यक्रम शुभारंभ करते अतिथि।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन और वंदे मातरम से हुई। ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने स्वागत भाषण में कहा कि विज्ञान राष्ट्र की प्रगति और आत्मनिर्भरता का मजबूत आधार है। उन्होंने बताया कि आईआईएसएफ आपसी सहयोग और ज्ञान-साझाकरण को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी.पी. कानूनगो और मुख्य अतिथि डॉ. आशिष रतुड़ी की उपस्थिति कार्यक्रम की मुख्य आकर्षण रही। डॉ. कानूनगो ने छात्रों को विज्ञान और तकनीक अपनाने तथा देश के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित किया। मुख्य अतिथि डॉ. रतूड़ी ने खगोल विज्ञान पर सरल और रोचक व्याख्यान दिया।

Presented in local Newspaper

कार्यक्रम | इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल के कर्टेन रेज़र कार्यक्रम के इस वर्ष की थीम "विज्ञान से समृद्धिः आत्मनिर्भर भारत है

सीबीआरआई, रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव आयोजित

◆ आईआईएसएफ 2025 का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं को एक मंच पर लाना है

अमर हिन्दुस्तान

रुड़की। सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की द्वारा 11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल आईआईएसएफ 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। इस वर्ष इस उत्सव का समन्वयन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय एमओईएस, भारत सरकार द्वारा किया जा रहा है तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मीटिरियोलॉजी आईआईटीएम, पुणे नोडल संस्थान है।

आईआईएसएफ बीते 6–9 दिसंबर तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई तथा उसके उपरांत राष्ट्रीय गीत (वंदे मातरम) प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने किया, जिन्होंने सभी अतिथियों, निदेशक, संकाय सदस्यों, वैज्ञानिकों तथा छात्रों का स्वागत किया।

उन्होंने आईआईएसएफ तथा आज के कर्टेन रेज़र कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि इस वर्ष का थीम विज्ञान से समृद्धि आत्मनिर्भर भारत है। उन्होंने कहा कि आईआईएसएफ 2025 का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं को एक मंच पर लाना है ताकि सहयोग, सृजनशीलता और ज्ञान के आदान-प्रदान के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान दिया जा सके।

कार्यक्रम में सीएसआईआर–सीबीआरआई के वरिष्ठतम वैज्ञानिक डॉ. डी. पी. कानूनगो तथा मुख्य अतिथि डॉ. आशीष रतुड़ी, प्रोफेसर, भौतिकी विभाग, डॉल्फिन इंस्टिट्यूट ऑफ बायोमेडिकल एंड नेचुरल साइंसेज, देहरादून एवं सदस्य, विज्ञान भारती की गरिमामयी उपस्थिति रही।

माउंट लिटेरा जी स्कूल, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नं. 1 तथा बाल विद्या मंदिर के विद्यार्थियों ने संकाय सदस्यों के साथ उत्साहपूर्वक भाग लिया। डॉ. डी. पी. कानूनगो ने विद्यार्थियों को जीवन के सभी क्षेत्रों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के महत्व के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि विज्ञान आईआईएसएफ उस दृष्टिकोण को दर्शाता है जिसमें विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र की प्रगति, आत्मनिर्भरता और सतत विकास की नींव है।

सीएसआईआर–सीबीआरआई के निदेशक डॉ. आर. प्रदीप कुमार ने भी आईआईएसएफ 2025 कर्टन रेज़र के लिए अपनी शुभकामनाए व्यक्त कीं और इसे वैज्ञानिक जागरूकता एवं सहयोग को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण आयोजन बताया।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. आशिष रतुड़ी ने विद्यार्थियों के लिए खगोल विज्ञान पर रोचक और प्रेरणादायी व्याख्यान दिया।

उन्होंने वैज्ञानिक शिक्षा में भौतिकी के महत्व, खगोल विज्ञान की आवश्यकता, लेंस एवं दूरबीनों के विकास, साइंस सफारी, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी तथा आकाश को समझने में खगोल विज्ञान की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने विज्ञान भारती और IISF के मिशन के बारे में भी जानकारी दी। व्याख्यान के उपरांत डॉ. रतुरी का सम्मान डॉ. डी. पी. कानूनगो द्वारा मोमेंटो भेंट कर किया गया। इसके अतिरिक्त सीएसआईआर-सीबीआरआई के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सौमित्रा मैती द्वारा "बिल्डिंग मटेरियल्स के विकास हेतु अपशिष्ट उपयोगिता विषय पर व्याख्यान दिया गया प्रदूषण एवं कार्बन फुटप्रिंट में कमी के महत्व पर चर्चा की गई।

कार्यक्रम में डॉ. पीसी थपलियाल, विनीत सैनी, डॉ. तबिश आलम, डॉ. चंचल, डॉ. अनिंद्य पाइन, राजेंद्र, रजनीश,रजत, अनुज, कु. इकरा, कु. राशी, कु. संस्कृति आदि उपस्थित रहे।

Presented in Hindustan Newspaper

Ministry of Science & Technology

CSIR-CBRI, Roorkee host curtain raiser event for the India International Science Festival (IISF) 2025

- This year IISF theme is “Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat.”

- IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry experts, science communicators, and policymakers.

- The curtain raiser event of the 11th India International Science Festival was held on November 17, 2025, at the RNT Auditorium.

प्रविष्टि तिथि: 17 NOV 2025 5:41PM by PIB Dehradun

Curtain Raiser Program of India International Science Festival (IISF) 2025 held at CSIR-CBRI Roorkee. CSIR–Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee organized the Curtain Raiser Program of the 11th India International Science Festival (IISF) 2025 on 17 November 2025 at the RNT Auditorium. This year the festival is coordinated by the Ministry of Earth Sciences (MoES), Government of India and the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune is the Nodal Institute. IISF 2025 will be held from 6–9 December 2025 at Punjab University, Chandigarh.

The event began with Lighting of the Lamp followed by the National Song (Vande Mataram). The program was inaugurated by Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, by welcoming all the guests, Director, faculty members, scientists, and students. He gave the details of IISF along with today’s curtain raiser program and informed that this year IISF theme is “Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat.” He said that IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry leaders, science communicators, and policymakers on one platform to promote collaboration, creativity, and knowledge exchange for Aatmanirbhar Bharat.

The program was graced by Dr. D. P. Kanungo, Senior most Scientist, CSIR-CBRI, and Dr. Aasheesh Raturi (Chief Guest), Professor, Department of Physics, Dolphin Institute of Biomedical and Natural Sciences, Dehradun & Member, Vijnana Bharati. Students from Mount Litera Zee School, PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 1, and Bal Vidya Mandir enthusiastically participated in the event along with faculty members.Dr. D. P. Kanungo inspired the students on the importance of science and technology in all aspects of life. He stated that science is not limited to laboratories, but is the foundation of national prosperity, innovation and sustainable development.

He emphasized nurturing scientific temperament in young minds and enabling them to become contributors to India’s self-reliance. He added that this festival is a celebration of science, technology and the limitless spirit of innovation that defines our nation. IISF encapsulates a vision where science is not just for labs and researchers but a foundation for national prosperity, self-reliance and sustainable development. Dr. R. Pradeep Kumar, The Director, CSIR-CBRI, also conveyed his best wishes for the IISF 2025 Curtain Raiser, noting its importance in promoting scientific awareness and collaboration.

Chief Guest of the function, Dr. Aasheesh Raturi, delivered an insightful and fascinating lecture on astronomy for the students to encourage their interest in science. He discussed why physics holds a primary place in scientific learning, the importance of astronomy, the evolution of lenses and telescopes, science safari, space technology and the use of astronomy as a tool to navigate the night sky. He also informed about the mission of Vijnana Bharati and IISF. He said that as we stand at the crossroads of rapid technological changes, India needs innovators who can solve real problems from climate challenges to healthcare, agriculture and digital transformation. IISF encourages us to think boldly, experiment fearlessly and contribute meaningfully.

Today’s curtain raiser is not just the launch of an event. It marks the beginning of a collective journey that reflects India’s growing role as a global leader in science and technology, and our commitment to building a future that is inclusive, sustainable and driven by knowledge. Following his lecture, Dr. Raturi was felicitated with a memento by Dr. D. P. Kanungo.

Another scientific lecture was delivered by Dr. Soumitra Maiti, Principal Scientist, CSIR-CBRI, on Waste Utilization for Development of Building Materials to save natural resources and reduce pollution and carbon footprint. The event proceeded with the Vote of Thanks by Dr. Hemlata, Senior Scientist, followed by Rashtryagaan. Students then visited the Rural Technology Park of CSIR-CBRI. In addition, 50 students from the Central University of Haryana visited different major facilities developed by CBRI in the laboratories along with the exhibition gallery. Present at this event were Dr. P. C. Thapliyal, Shri Vineet Saini, Dr. Tabish Aalam, Dr. Chanchal, Dr. Anindiya Pine, Shri Rajender, Shri Rajnish, Shri Ajuj, Shri Rajat, Kumari Iqra, Kumari Rashi, Kumari Sanskriti etc.

Published:https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2190888&reg=46&lang=45

Uttarakhand : CBRI Roorkee Hosts Curtain Raiser of India International Science Festival 2025

YUGVARTA NEWS
Lucknow, 17 Nov, 2025 08:00 PM

Roorkee : Curtain Raiser Program of India International Science Festival (IISF) 2025 was held at CSIR-CBRI, Roorkee on 17 November 2025 at the RNT Auditorium. This year, the festival is coordinated by the Ministry of Earth Sciences (MoES), Government of India, and the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune is the Nodal Institute. IISF 2025 will be held from 6–9 December 2025 at Punjab University, Chandigarh.

The event began with Lighting of the Lamp followed by the National Song (Vande Mataram). The program was inaugurated by Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, by welcoming all the guests, Director, faculty members, scientists, and students. He gave details of IISF along with today's curtain raiser program and informed that this year's theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat." He said that IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry leaders, science communicators, and policymakers on one platform to promote collaboration, creativity, and knowledge exchange for Aatmanirbhar Bharat.

The program was graced by Dr. D. P. Kanungo, Senior-most Scientist, CSIR-CBRI, and Dr. Aasheesh Raturi (Chief Guest), Professor, Department of Physics, Dolphin Institute of Biomedical and Natural Sciences, Dehradun & Member, Vijnana Bharati. Students from Mount Litera Zee School, PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 1, and Bal Vidya Mandir enthusiastically participated along with faculty members.

Dr. D. P. Kanungo inspired the students on the importance of science and technology in all aspects of life. He stated that science is not limited to laboratories but is the foundation of national prosperity, innovation, and sustainable development. He emphasized nurturing scientific temperament in young minds and enabling them to become contributors to India's self-reliance. He added that this festival is a celebration of science, technology, and the limitless spirit of innovation that defines our nation.

Dr. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, also conveyed his best wishes for the IISF 2025 Curtain Raiser, noting its importance in promoting scientific awareness and collaboration.

Chief Guest Dr. Aasheesh Raturi delivered an insightful and fascinating lecture on astronomy to encourage scientific interest among students. He discussed the primary importance of physics, the relevance of astronomy, evolution of lenses and telescopes, science safari, space technology, and the use of astronomy to navigate the night sky. He also informed attendees about the mission of Vijnana Bharati and IISF. He said that as India stands at the crossroads of rapid technological transformations, the nation needs innovators who can solve real-world challenges—from climate issues to healthcare, agriculture, and digital transformation.

Published in : https://yugvartanews.com/state/uttrakhand/post/uttarakhand-CBRI-Roorkee-Hosts-Curtain-Raiser-of-India-International-Science-Festival-2025-3754

Ministry of Science & Technology

CSIR-CBRI, Roorkee host curtain raiser event for the India International Science Festival (IISF) 2025

- This year IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat."

- IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry experts, science communicators, and policymakers.

- The curtain raiser event of the 11th India International Science Festival was held on November 17, 2025, at the RNT Auditorium.

प्रविष्टि तिथि: 17 NOV 2025 5:41PM by PIB Dehradun

Curtain Raiser Program of India International Science Festival (IISF) 2025 held at CSIR-CBRI Roorkee. CSIR–Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee organized the Curtain Raiser Program of the 11th India International Science Festival (IISF) 2025 on 17 November 2025 at the RNT Auditorium. This year the festival is coordinated by the Ministry of Earth Sciences (MoES), Government of India and the Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM), Pune is the Nodal Institute. IISF 2025 will be held from 6–9 December 2025 at Punjab University, Chandigarh.

The event began with Lighting of the Lamp followed by the National Song (Vande Mataram). The program was inaugurated by Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, by welcoming all the guests, Director, faculty members, scientists, and students. He gave the details of IISF along with today's curtain raiser program and informed that this year IISF theme is "Vigyan Se Samruddhi – for Aatmanirbhar Bharat." He said that IISF 2025 aims to bring together scientists, innovators, educators, students, industry leaders, science communicators, and policymakers on one platform to promote collaboration, creativity, and knowledge exchange for Aatmanirbhar Bharat.

11/18/25, 12:28 PM Press Release:Press Information Bureau

The program was graced by Dr. D. P. Kanungo, Senior most Scientist, CSIR-CBRI, and Dr. Aasheesh Raturi (Chief Guest), Professor, Department of Physics, Dolphin Institute of Biomedical and Natural Sciences, Dehradun & Member, Vijnana Bharati. Students from Mount Litera Zee School, PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. 1, and Bal Vidya Mandir enthusiastically participated in the event along with faculty members.Dr. D. P. Kanungo inspired the students on the importance of science and technology in all aspects of life. He stated that science is not limited to laboratories, but is the foundation of national prosperity, innovation and sustainable development.

He emphasized nurturing scientific temperament in young minds and enabling them to become contributors to India's self-reliance. He added that this festival is a celebration of science, technology and the limitless spirit of innovation that defines our nation. IISF encapsulates a vision where science is not just for labs and researchers but a foundation for national prosperity, self-reliance and sustainable development. Dr. R. Pradeep Kumar, The Director, CSIR-CBRI, also conveyed his best wishes for the IISF 2025 Curtain Raiser, noting its importance in promoting scientific awareness and collaboration.

Chief Guest of the function, Dr. Aasheesh Raturi, delivered an insightful and fascinating lecture on astronomy for the students to encourage their interest in science. He discussed why physics holds a primary place in scientific learning, the importance of astronomy, the evolution of lenses and telescopes, science safari, space technology and the use of astronomy as a tool to navigate the night sky. He also informed about the mission of Vijnana Bharati and IISF. He said that as we stand at the crossroads of rapid technological changes, India needs innovators who can solve real problems from climate challenges to healthcare, agriculture and digital transformation. IISF encourages us to think boldly, experiment fearlessly and contribute meaningfully.

Today's curtain raiser is not just the launch of an event. It marks the beginning of a collective journey that reflects India's growing role as a global leader in science and technology, and our commitment to building a future that is inclusive, sustainable and driven by knowledge. Following his lecture, Dr. Raturi was felicitated with a memento by Dr. D. P. Kanungo.

Another scientific lecture was delivered by Dr. Soumitra Maiti, Principal Scientist, CSIR-CBRI, on Waste Utilization for Development of Building Materials to save natural resources and reduce pollution and carbon footprint. The event proceeded with the Vote of Thanks by Dr. Hemlata, Senior Scientist, followed by Rashtryagaan. Students then visited the Rural Technology Park of CSIR-CBRI. In addition, 50 students from the Central University of Haryana visited different major facilities developed by CBRI in the laboratories along with the exhibition gallery. Present at this event were Dr. P. C. Thapliyal, Shri Vineet Saini, Dr. Tabish Aalam, Dr. Chanchal, Dr. Anindiya Pine, Shri Rajender, Shri Rajnish, Shri Ajuj, Shri Rajat, Kumari Iqra, Kumari Rashi, Kumari Sanskriti etc.

(रिलीज़ आईडी: 2190888) आगंतुक पटल : 18
इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Hindi_Ddn

Published in: https://www.pib.gov.in/PressReleseDetail.aspx?PRID=2190888&reg=46&lang=45

कार्यक्रम | इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल के कर्टेन रेजर कार्यक्रम के इस वर्ष की थीम "विज्ञान से समृद्धि: आत्मनिर्भर भारत है

सीबीआरआई, रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव आयोजित

■ आईआईएसएफ 2025 का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं को एक मंच पर लाना है

अमर हिन्दुस्तान

रुड़की। सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की द्वारा 11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल आईआईएसएफ 2025 का कर्टेन रेजर कार्यक्रम आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। इस वर्ष इस उत्सव का समन्वयन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय एमओईएस, भारत सरकार द्वारा किया जा रहा है तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मीटिरियोलॉजी आईआईटीएम, पुणे नोडल संस्थान है।

आईआईएसएफ बीते 6–9 दिसंबर तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई तथा उसके उपरांत राष्ट्रीय गीत (वंदे मातरम) प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने किया, जिन्होंने सभी अतिथियों, निदेशक, संकाय सदस्यों, वैज्ञानिकों तथा छात्रों का स्वागत किया।

उन्होंने आईआईएसएफ तथा आज के कर्टेन रेजर कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि इस वर्ष का थीम विज्ञान से समृद्धि आत्मनिर्भर भारत है। उन्होंने कहा कि आईआईएसएफ 2025 का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं को एक मंच पर लाना है ताकि सहयोग, सृजनशीलता और ज्ञान के आदान-प्रदान के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान दिया जा सके।

कार्यक्रम में सीएसआईआर–सीबीआरआई के वरिष्ठतम वैज्ञानिक डॉ. डी. पी. कानूनगो तथा मुख्य अतिथि डॉ. आशीष रतुड़ी, प्रोफेसर, भौतिकी विभाग, डॉल्फिन इंस्टिट्यूट ऑफ बायोमेडिकल एंड नेचुरल साइंसेज, देहरादून एवं सदस्य, विज्ञान भारती की गरिमामयी उपस्थिति रही।

माउंट लिटेरा जी स्कूल, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नं. 1 तथा बाल विद्या मंदिर के विद्यार्थियों ने संकाय सदस्यों के साथ उत्साहपूर्वक भाग लिया। डॉ. डी. पी. कानूनगो ने विद्यार्थियों को जीवन के सभी क्षेत्रों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के महत्व के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि विज्ञान आईआईएसएफ उस दृष्टिकोण को दर्शाता है जिसमें विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र की प्रगति, आत्मनिर्भरता और सतत विकास की नींव है।

सीएसआईआर–सीबीआरआई के निदेशक डॉ. आर. प्रदीप कुमार ने भी आईआईएसएफ 2025 कर्टन रेजर के लिए अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं और इसे वैज्ञानिक जागरूकता एवं सहयोग को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण आयोजन बताया।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. आशिष रतुड़ी ने विद्यार्थियों के लिए खगोल विज्ञान पर रोचक और प्रेरणादायी व्याख्यान दिया।

उन्होंने वैज्ञानिक शिक्षा में भौतिकी के महत्व, खगोल विज्ञान की आवश्यकता, लेंस एवं दूरबीनों के विकास, साइंस सफारी, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी तथा आकाश को समझने में खगोल विज्ञान की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने विज्ञान भारती और IISF के मिशन के बारे में भी जानकारी दी। व्याख्यान के उपरांत डॉ. रतुरी का सम्मान डॉ. डी. पी. कानूनगो द्वारा मोमेंटो भेंट कर किया गया। इसके अतिरिक्त सीएसआईआर-सीबीआरआई के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सौमित्रा मैती द्वारा "बिल्डिंग मटेरियल्स के विकास हेतु अपशिष्ट उपयोगिता विषय पर व्याख्यान दिया गया प्रदूषण एवं कार्बन फुटप्रिंट में कमी के महत्व पर चर्चा की गई।

कार्यक्रम में डॉ. पीसी थपलियाल, विनीत सैनी, डॉ. तबिश आलम, डॉ. चंचल, डॉ. अनिंद्य पाइन, राजेंद्र, रजनीश,रजत, अनुज, कु. इक़रा, कु. राशी, कु. संस्कृति आदि उपस्थित रहे।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा

विज्ञान से समृद्धि’ थीम के साथ आईआईएसएफ 2025 का आगाज़

by cradmin November 17, 2025 0 43

देहरादून/रुड़की। सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में 11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ) 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम धूमधाम से आयोजित किया गया। कार्यक्रम आरएनटी ऑडिटोरियम में संपन्न हुआ। इस वर्ष महोत्सव की थीम “विज्ञान से समृद्धि: आत्मनिर्भर भारत” निर्धारित की गई है। आईआईएसएफ 2025 का मुख्य आयोजन 6 से 9 दिसंबर 2025 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में होगा।

इस वर्ष विज्ञान महोत्सव का समन्वयन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस), भारत सरकार द्वारा किया जा रहा है तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मीटिरियोलॉजी (आईआईटीएम), पुणे नोडल संस्थान है। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन एवं वंदे मातरम के साथ हुई। ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने सभी अतिथियों, वैज्ञानिकों, संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए आईआईएसएफ की थीम और कार्यक्रम के उद्देश्यों पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि महोत्सव का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों और नीति-निर्माताओं को एक साझा मंच प्रदान कर भारत की वैज्ञानिक प्रगति और आत्मनिर्भरता को नई दिशा देना है।

कार्यक्रम में सीएसआईआर–सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी. पी. कानूनगो और मुख्य अतिथि डॉ. आशीष रतुड़ी (प्रोफेसर, भौतिकी विभाग, डॉल्फिन इंस्टीट्यूट, देहरादून एवं सदस्य, विज्ञान भारती) की गरिमामयी उपस्थिति रही। माउंट लिटेरा ज़ी स्कूल, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नं. 1 एवं बाल विद्या मंदिर के विद्यार्थी भी बड़ी संख्या में कार्यक्रम में शामिल हुए।

डॉ. कानूनगो ने विद्यार्थियों को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के महत्व पर प्रेरक संदेश देते हुए कहा कि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि राष्ट्र की समृद्धि और सतत विकास की आधारशिला है। उन्होंने युवाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। सीएसआईआर–सीबीआरआई के निदेशक डॉ. आर. प्रदीप कुमार ने भी आयोजन के लिए शुभकामनाएं दीं और इसे वैज्ञानिक जागरूकता एवं सहयोग को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण कदम बताया।

मुख्य अतिथि डॉ. रतुड़ी ने विद्यार्थियों के लिए खगोल विज्ञान पर रोचक व्याख्यान दिया। उन्होंने भौतिकी की भूमिका, दूरबीनों के विकास, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, साइंस सफारी तथा आकाश को समझने में खगोल विज्ञान की भूमिका पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि बदलते तकनीकी युग में भारत को ऐसे नवोन्मेषकों की आवश्यकता है, जो जलवायु, स्वास्थ्य, कृषि एवं डिजिटल परिवर्तन जैसे क्षेत्रों में समाधान प्रस्तुत कर सकें।

कार्यक्रम में सीबीआरआई के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सौमित्रा मैती ने "बिल्डिंग मटेरियल्स के विकास हेतु अपशिष्ट उपयोगिता" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, प्रदूषण कम करने तथा कार्बन फुटप्रिंट घटाने पर महत्वपूर्ण विचार साझा किए।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. हेमलता ने आभार व्यक्त किया और राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन हुआ। कार्यक्रम उपरांत विद्यार्थियों ने ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का भ्रमण किया। साथ ही हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के 50 विद्यार्थियों ने सीबीआरआई की प्रयोगशालाओं एवं प्रदर्शनी गैलरी का अवलोकन किया।

कार्यक्रम में डॉ. पी. सी. थपलियाल, विनीत सैनी, डॉ. तबिश आलम, डॉ. चंचल, डॉ. अनिंद्य पाइन, राजेंद्र, रजनीश, रजत, अनुज, कु. इक़रा, कु. राशी एवं कु. संस्कृति सहित कई अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

Published in : https://prabhatchingari.com/iisf-2025-begins-with-the-theme-science-to-prosperity/

Uttarakhand News

सीबीआरआई, रुड़की में भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम आयोजित

Admin - Er. Kapil Garg (B.E. Electronics)

November 17, 2025

कार्यक्रम में सीएसआईआर–सीबीआरआई के वरिष्ठतम वैज्ञानिक डॉ. डी. पी. कानूनगो तथा मुख्य अतिथि डॉ. आशीष रतुड़ी, प्रोफेसर, भौतिकी विभाग, डॉल्फिन इंस्टिट्यूट ऑफ बायोमेडिकल एंड नेचुरल साइंसेज़, देहरादून एवं सदस्य, विज्ञान भारती की गरिमामयी उपस्थिति रही। माउंट लिटेरा ज़ी स्कूल, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नं. 1 तथा बाल विद्या मंदिर के विद्यार्थियों ने संकाय सदस्यों के साथ उत्साहपूर्वक भाग लिया। डॉ. डी. पी. कानूनगो ने विद्यार्थियों को जीवन के सभी क्षेत्रों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के महत्व के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय समृद्धि, नवाचार और सतत विकास की आधारशिला है। उन्होंने युवा मस्तिष्कों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने और उन्हें भारत की आत्मनिर्भरता में योगदानकर्ता बनने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि यह उत्सव विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार की असीम भावना का उत्सव है। आईआईएसएफ उस दृष्टिकोण को दर्शाता है जिसमें विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र की प्रगति, आत्मनिर्भरता और सतत विकास की नींव है। सीएसआईआर–सीबीआरआई के निदेशक डॉ. आर. प्रदीप कुमार ने भी आईआईएसएफ 2025 कर्टन रेज़र के लिए अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त कीं और इसे वैज्ञानिक जागरूकता एवं सहयोग को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण आयोजन बताया।

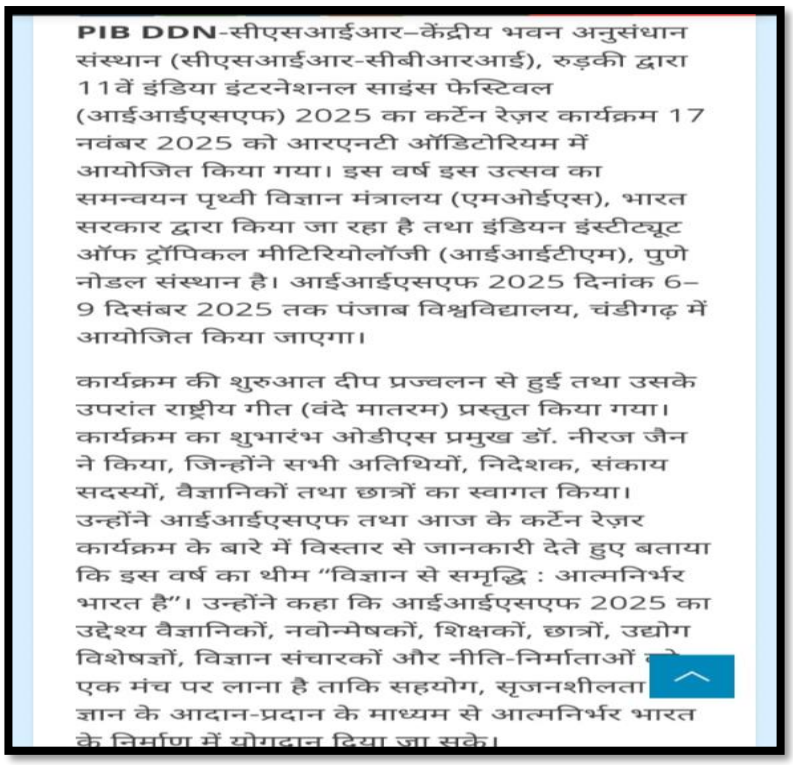

PIB DDN-सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की द्वारा 11वें इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ) 2025 का कर्टेन रेज़र कार्यक्रम 17 नवंबर 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। इस वर्ष इस उत्सव का समन्वयन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस), भारत सरकार द्वारा किया जा रहा है तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मीटिरियोलॉजी (आईआईटीएम), पुणे नोडल संस्थान है। आईआईएसएफ 2025 दिनांक 6–9 दिसंबर 2025 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में आयोजित किया जाएगा।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई तथा उसके उपरांत राष्ट्रीय गीत (वंदे मातरम) प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ओडीएस प्रमुख डॉ. नीरज जैन ने किया, जिन्होंने सभी अतिथियों, निदेशक, संकाय सदस्यों, वैज्ञानिकों तथा छात्रों का स्वागत किया। उन्होंने आईआईएसएफ तथा आज के कर्टेन रेज़र कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि इस वर्ष का थीम "विज्ञान से समृद्धि : आत्मनिर्भर भारत है"। उन्होंने कहा कि आईआईएसएफ 2025 का उद्देश्य वैज्ञानिकों, नवोन्मेषकों, शिक्षकों, छात्रों, उद्योग विशेषज्ञों, विज्ञान संचारकों और नीति-निर्माताओं को एक मंच पर लाना है ताकि सहयोग, सृजनशीलता ज्ञान के आदान-प्रदान के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान दिया जा सके।

Published in : https://galaxyinformer.com/archives/34373

CSIR-CBRI in the Limelight | 08.11.2025

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय

Azadi Ka Amrit Mahotsav

जिज्ञासा 2.0 के अंतर्गत सीएसआईआर–सीबीआरआई में बाल दिवस पर उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

- कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों में उद्यमिता और नवाचार को बढ़ावा देना, भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम से परिचित कराना तथा उपलब्ध संसाधनों, सहायता प्रणालियों और फंडिंग अवसरों की जानकारी देना था।

- विद्यार्थियों ने ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का भ्रमण किया जहाँ उन्होंने सीबीआरआई की सतत, कम-लागत तथा सामुदायिक आवश्यकताओं पर आधारित तकनीकों को देखा।

Posted On: 14 NOV 2025 10:25PM by PIB Dehradun

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रूड़की ने एनएसआई द्वारा समर्थित जिज्ञासा 2.0 कार्यक्रम के अंतर्गत उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम (ईएपी) आयोजित कर बाल दिवस मनाया। यह कार्यक्रम राजकीय इंटर कॉलेज, पुरकाजी, मुजफ्फरनगर की प्रिंसिपल प्रीति चौधरी के नेतृत्व में आए 125 विद्यार्थियों के लिए आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों में उद्यमिता और नवाचार की अवधारणा को बढ़ावा देना, भारत के स्टार्ट-अप इकोसिस्टम से परिचित कराना, तथा उपलब्ध संसाधनों, सहायता प्रणालियों और फंडिंग अवसरों की जानकारी देना था, जिनका उपयोग युवा नवाचारकर्ता अपने विचारों को आगे बढ़ाने के लिए कर सकते हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं जिज्ञासा 2.0 के नोडल अधिकारी डॉ. नीरज जैन के स्वागत वक्तव्य से हुई, जिसके बाद प्रधान वैज्ञानिक एवं सह नोडल अधिकारी डॉ. चंदन स्वरूप मीना ने छात्रों को सीएसआईआर-सीबीआरआई की शोध दृष्टि और समाजोपयोगी योगदानों से अवगत कराया। इस अवसर पर निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने बढ़ती बेरोज़गारी और सीमित रोजगार अवसरों के संदर्भ में उद्यमिता जागरूकता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को वास्तविक जीवन की समस्याओं की पहचान करने, नवाचारपूर्ण विचार विकसित करने तथा "मेक इन इंडिया" जैसी राष्ट्रीय पहलों के अनुरूप उन्हें व्यावहारिक उद्यमों में बदलने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने बताया कि उद्यमिता रचनात्मक सोच, जोखिम उठाने की क्षमता, नेतृत्व गुण, समस्या समाधान कौशल और समग्र व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देती है, जिससे युवा आत्मनिर्भर और भविष्य-तैयार बनते हैं। व्याख्यान सत्रों से पहले विद्यार्थियों ने ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का भ्रमण किया, जहाँ उन्होंने सीबीआरआई की सतत, कम-लागत तथा सामुदायिक आवश्यकताओं पर आधारित तकनीकों को देखा और यह समझा कि वैज्ञानिक अनुसंधान समाज के विकास में कैसे योगदान देता है। तकनीकी सत्रों में "भारत के उद्यमिता एवं स्टार्टअप इकोसिस्टम का परिचय—इनोवेशन, उद्यमिता एवं स्टार्टअप की समझ" तथा "समस्या पहचान, समाधान निर्माण, स्टार्टअप कैसे शुरू करें और सफलता की कहानियाँ" शामिल थीं।

व्याख्यान श्री सिद्धांत कुमार नायक (प्रोग्राम मैनेजर, टीआईडीईएस, आईआईटी रुड़की), श्री गौरव दीक्षित (सीईओ एवं संस्थापक, गोहेम्प) और डॉ. शिवानी शर्मा (मैनेजर, टीआईडीईएस, आईआईटी रुड़की) द्वारा प्रदान किए गए, जिन्होंने नवाचार समर्थन प्रणालियों, इनक्यूबेशन अवसरों और स्टार्टअप यात्रा के व्यावहारिक पहलुओं पर विस्तृत जानकारी साझा की। कार्यक्रम का समापन प्रधान वैज्ञानिक ई. आशीष पिप्पल और वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ताबिश आलम के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। संपूर्ण आयोजन ने वैज्ञानिक सीख, नवाचार जागरूकता और व्यावहारिक अनुभव का उत्कृष्ट समन्वय प्रस्तुत किया, जिसने विद्यार्थियों को रचनात्मक सोच और समाजोपयोगी समाधान विकसित करने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर रजनीश कुमार, मोहित नपाल, संस्कृति शर्मा, इकरा, अनुज कुमार, मंजीत कुमार , अमजद, अजय कुमार, रजत कुमार, विकास कुमार और राकेश कुमार भी उपस्थित रहे।

Published in : https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2190247

CSIR-CBRI in the Limelight | 07.11.2025

क्विक रीड

छात्रों को दिया एडवांस सॉफ्टवेयर प्रशिक्षण

प्रशिक्षण लेने वाले छात्र-छात्राएं।

रुड़की, 6 नवम्बर (अनिल): सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई) रुड़की में सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव कार्यक्रम के तहत कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला का उद्देश्य मल्टीफिजिक्स मॉडलिंग और सिमुलेशन तकनीकों की गहन जानकारी देना था। प्रशिक्षण में विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया और सॉफ्टवेयर के माध्यम से व्यावहारिक सिमुलेशन सीखा। तकनीकी सत्रों का संचालन कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड की विशेषज्ञ टीम कृतिका राजे, शारजेद और हिमांशु अग्रवाल ने किया।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

हिन्दुस्तान

Share Copy url Save Font Size D'load Image Image Text Listen

छात्रों को सॉफ्टवेयर प्रशिक्षण दिया

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टिट्यूट (सीबीआरआई) ने गुरुवार को सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव के तहत कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की।

इसमें लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया और सॉफ्टवेयर के माध्यम से व्यावहारिक सिमुलेशन प्रशिक्षण प्राप्त किया।कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों में मल्टीफिजिक्स मॉडलिंग और सिमुलेशन तकनीकों की समझ को

■ सीबीआरआई के प्रशिक्षण में 40 छात्रों ने किया प्रतिभाग

सुदृढ़ करना और वैज्ञानिक सिद्धांतों व व्यावहारिक प्रयोगों के बीच संबंध स्थापित करना था। उद्घाटन सत्र में सीबीआरआई के हेड डॉ. नीरज जैन ने कहा कि ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम तकनीकी कौशल को निखारने का उत्कृष्ट अवसर प्रदान करते हैं।

कॉम्सोल इंडिया की विशेषज्ञ टीम ने तकनीकी सत्रों का संचालन किया और प्रतिभागियों को प्रायोगिक अभ्यासों के जरिए मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. ताबिश आलम ने किया।

सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने कहा कि आधुनिक सिमुलेशन टूल्स अपनाकर युवा शोधकर्ता नवाचार, डिजाइन अनुकूलन और अनुसंधान-आधारित अधिगम को बढ़ावा दे सकते हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम की सफलता में सीबीआरआई और कॉम्सोल टीम के कर्मचारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

Presented in Hindustan Newspaper

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की द्वारा सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव के अंतर्गत कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

रुड़की(आफताब खान वरिष्ठ विशेष संवाददाता)। सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टिट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव कार्यक्रम के अंतर्गत कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 6 अक्टूबर 2025 को किया गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रतिभागियों की मल्टीफिजिक्स मॉडलिंग एवं सिमुलेशन तकनीक की समझ को सुदृढ़ करना तथा वैज्ञानिक सिद्धांतों और व्यावहारिक प्रयोगों के बीच सेतु बनाना था।

कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स एक जनरल-पर्पज़ सिमुलेशन सॉफ्टवेयर है, जिसका उपयोग इंजीनियरिंग, वैज्ञानिक अनुसंधान, शिक्षा एवं औद्योगिक क्षेत्रों में डिजाइन, मॉडलिंग और विश्लेषण के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। इस कार्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया और कॉम्सोल सॉफ्टवेयर पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

तकनीकी सत्रों का संचालन कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स इंडिया प्रा. लि. की टीम — सुश्री कृतिका राजे (एप्लिकेशन इंजीनियर), श्री शारजेद (सीनियर एप्लिकेशन इंजीनियर) एवं श्री हिमांशु अग्रवाल (टेक्निकल सेल्स इंजीनियर) द्वारा किया गया। उन्होंने सॉफ्टवेयर की प्रमुख विशेषताओं का प्रदर्शन किया और प्रतिभागियों को प्रायोगिक सिमुलेशन अभ्यासों के माध्यम से मार्गदर्शन प्रदान किया।

इस कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. ताबिश आलम, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र के दौरान डॉ. नीरज जैन, हेड, ओडीएस, ने सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम तकनीकी कौशल को व्यावहारिक रूप में निखारने का एक उत्कृष्ट माध्यम हैं। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने प्रतिभागियों को कॉम्सोल जैसे आधुनिक सिमुलेशन टूल्स को अपनाने हेतु प्रेरित किया, जिससे वे नवाचार, डिजाइन अनुकूलन और अनुसंधान-आधारित अधिगम को प्रोत्साहित कर सकें। कार्यक्रम का समापन एक संवादात्मक सत्र एवं प्रतिभागियों की सकारात्मक प्रतिक्रियाओं के साथ हुआ, जिसने सीएसआईआर-सीबीआरआई की तकनीकी उत्कृष्टता, क्षमता निर्माण और उन्नत कौशल विकास के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता को पुनः स्थापित किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल संचालन कॉम्सोल टीम के सहयोग एवं सीबीआरआई के कर्मचारियों — राशी, इक़रा, रजत, अमज़द, संस्कृति, महेश, अनुज, विकास एवं अजय — के समर्पित योगदान से संभव हो पाया, जिनके प्रयासों से कार्यक्रम का प्रभावी एवं सुचारु आयोजन सुनिश्चित हुआ।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

Mon. Nov 17th, 2025 10:46:18 AM

सहारा लाइव NEWS

हर खबर पर पैनी नजर

अंतरराष्ट्रीय | राज्य | टेक्नोलॉजी | ट्रेवल | राष्ट्रीय | लोकल न्यूज़ | स्वास्थ्य | LIVE TV | CONTACT

उत्तराखंड

रुड़की द्वारा "सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव"

By Sahara Live News

NOV 6, 2025

CSIR–CBRI, Roorkee Organizes Training Program on COMSOL Multiphysics Software under CSIR Integrated Skill Initiative

Roorkee, November 6, 2025:

The CSIR–Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, organized a one-day training program on COMSOL Multiphysics software on 6th October 2025 under the CSIR Integrated Skill Initiative Program. The workshop aimed to strengthen the participants' understanding of multiphysics modeling and computational simulation, bridging scientific theory with practical applications.

COMSOL Multiphysics is a general-purpose simulation software widely used for modelling, design, and analysis in engineering, scientific research, education, and industry. Around 40 students from various universities participated in the program and received hands-on training in computational modeling using the COMSOL environment.

The technical sessions were conducted by the COMSOL Multiphysics India Pvt. Ltd. team — Ms. Kritika Raje (Applications Engineer), Mr. Sharjed (Senior Applications Engineer), and Mr. Himanshu Agrawal (Technical Sales Engineer) — who demonstrated the software's key features and guided the participants through interactive simulation exercises.

The program was coordinated by Dr. Tabish Alam, Senior Scientist, CSIR–CBRI. During the inaugural session, Dr. Neeraj Jain, Head, ODS, outlined the objectives of the CSIR Integrated Skill Initiative, emphasizing the importance of enhancing technical capabilities through hands-on learning. Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR–CBRI, encouraged participants to adopt modern simulation tools like COMSOL to support innovation, design optimization, and research-oriented learning.

The program concluded with an interactive discussion and highly positive feedback from the participants, reflecting CSIR–CBRI's ongoing commitment to promoting technical excellence, capacity building, and advanced skill development through the CSIR Integrated Skill Initiative Program.

The training was effectively coordinated with the cooperation of the COMSOL Team, and dedicated support from CBRI staff members — Rashi, Iqra, Rajat, Amzad, Sanskriti, Mahesh, Anuj, Vikas, and Ajay, whose efforts ensured the successful execution of the event.

सीएसआईआर–सीबीआरआई, रुड़की द्वारा "सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव" के अंतर्गत कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

रुड़की, 6 नवंबर 2025:

सीएसआईआर–सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टिट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव कार्यक्रम के अंतर्गत कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स सॉफ्टवेयर पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 6 अक्टूबर 2025 को किया गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रतिभागियों की मल्टीफिजिक्स मॉडलिंग एवं सिमुलेशन तकनीक की समझ को सुदृढ़ करना तथा वैज्ञानिक सिद्धांतों और व्यावहारिक प्रयोगों के बीच सेतु बनाना था।

कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स एक जनरल-पर्पज़ सिमुलेशन सॉफ्टवेयर है, जिसका उपयोग इंजीनियरिंग, वैज्ञानिक अनुसंधान, शिक्षा एवं औद्योगिक क्षेत्रों में डिज़ाइन, मॉडलिंग और विश्लेषण के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। इस कार्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों के लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया और कॉम्सोल सॉफ्टवेयर पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

तकनीकी सत्रों का संचालन कॉम्सोल मल्टीफिजिक्स इंडिया प्रा. लि. की टीम — सुश्री कृतिका राजे (एप्लिकेशन इंजीनियर), श्री शारजेद (सीनियर एप्लिकेशन इंजीनियर) एवं श्री हिमांशु अग्रवाल (टेक्निकल सेल्स इंजीनियर) द्वारा किया गया। उन्होंने सॉफ्टवेयर की प्रमुख विशेषताओं का प्रदर्शन किया और प्रतिभागियों को प्रायोगिक सिमुलेशन अभ्यासों के माध्यम से मार्गदर्शन प्रदान किया।

इस कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. ताबिश आलम, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआर–सीबीआरआई द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र के दौरान डॉ. नीरज जैन, हेड, ओडीएस, ने सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम तकनीकी कौशल को व्यावहारिक रूप में निखारने का एक उत्कृष्ट माध्यम हैं। सीएसआईआर–सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने प्रतिभागियों को कॉम्सोल जैसे आधुनिक सिमुलेशन टूल्स को अपनाने हेतु प्रेरित किया, जिससे वे नवाचार, डिज़ाइन अनुकूलन और अनुसंधान-आधारित अभिगम को प्रोत्साहित कर सकें।

कार्यक्रम का समापन एक संवादात्मक सत्र एवं प्रतिभागियों की सकारात्मक प्रतिक्रियाओं के साथ हुआ, जिसने सीएसआईआर–सीबीआरआई की तकनीकी उत्कृष्टता, क्षमता निर्माण और उन्नत कौशल विकास के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता को पुनः स्थापित किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल संचालन कॉम्सोल टीम के सहयोग एवं सीबीआरआई के कर्मचारियों — राशी, इक़रा, रजत, अमज़द, संस्कृति, महेश, अनुज, विकास एवं अजय — के समर्पित योगदान से संभव हो पाया, जिनके प्रयासों से कार्यक्रम का प्रभावी एवं सुचारु आयोजन सुनिश्चित हुआ।

Published in : https://www.saharalivenews.com/archives/10022

CSIR-CBRI in the Limelight | 27.10.2025

सहारा लाइव NEWS
हर खबर पर पैनी नजर

अंतरराष्ट्रीय | राज्य | टेक्नोलॉजी | ट्रेवल | राष्ट्रीय | लोकल न्यूज़ | स्वास्थ्य | LIVE TV | CONTACT

उत्तराखंड

School students of PM Shri Kendriya Vidyalaya Visited CBRI Roorkee

By Sahara Live News
OCT 27, 2025

CSIR–CBRI, Roorkee Hosts Jigyasa 2.0 Program for Students from PM Shri Kendriya Vidyalaya, ITBP, Dehradun

Roorkee, October 2025:

CSIR–Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee successfully organized a Jigyasa 2.0 Program for 120 students and 6 faculty members from PM Shri Kendriya Vidyalaya, ITBP, Dehradun, aimed at nurturing scientific curiosity and promoting experiential learning among young minds.

The program began with a visit to Dr. Billing's Exhibition Gallery, where students witnessed several live demonstrations of CBRI's cutting-edge technologies — including the Shri Ram Mandir model with the Surya Tilak mechanism, High Draught Zig-Zag Brick Kiln Technology for energy-efficient brick production, and disaster-resilient building systems promoting safe and sustainable construction.

An interactive session held at the RNT Auditorium commenced with a welcome address by Dr. Neeraj Jain, Senior Principal Scientist & Nodal Officer (Jigyasa 2.0), followed by Dr. S.K. Panigrahi, Chief Scientist, who highlighted the importance of developing scientific temperament among students through practical exposure and learning.

Insightful lectures were delivered by Dr. Tabish Alam, Senior Scientist, on "Utilisation of Solar Energy in Houses", emphasizing the role of solar architecture and renewable technologies in sustainable living, and Dr. Hemlata, Senior Scientist, on "Waste Plastic Composites as Building Components", introducing innovative ways of recycling plastic waste into eco-friendly construction materials.

Students also visited the Rural Technology Park, Fire Safety Engineering Laboratory, and Structural Engineering Division (3D Printing Facility), where they experienced firsthand the applications of scientific research in real-life construction and safety scenarios.

The program concluded with an engaging interaction between students and scientists, encouraging them to pursue science and innovation for a sustainable future. The initiative reflected CSIR–CBRI's continuous efforts under the Jigyasa 2.0 initiative to connect laboratory research with classroom learning and inspire the next generation of innovators.

The visit was coordinated with active participation and support from Shri V.K. Nautiyal, Principal and teachers, PM Shri Kendriya Vidyalaya, ITBP, Dehradun, along with CBRI staff members Rashi, Rajat, Amzad, Sanskriti, Mahesh, Anuj, Vikas, and Ajay, who ensured the smooth execution and coordination of the program activities.

*Director CBRI emphasises that JIGYASA is one of the most significant initiatives that the CSIR undertook at the national level during its Platinum Jubilee Celebration Year, as an inspired vision of a new India and Scientific Social Responsibility (SSR) of the Institution. He also wishes bright future for all the student participants.

Published in : https://www.saharalivenews.com/archives/9967

CSIR-CBRI in the Limelight | 07.10.2025

उन्नत आवासीय समाधानों के लिए शोध नवाचार और प्रशिक्षण को प्राथमिकता

जागरण संवाददाता, रुड़की : विश्व आवास दिवस पर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका उद्देश्य टिकाऊ, किफायती एवं सुरक्षित आवास निर्माण के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों एवं नवाचारों को बढ़ावा देना था।

संस्थान में सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि सीबीआरआइ सतत, किफायती और तकनीकी दृष्टि से उन्नत आवासीय समाधानों के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। इस दिशा में शोध, नवाचार और प्रशिक्षण को प्राथमिकता दी जा रही है। मुख्य वैज्ञानिक डा. नीरज जैन ने टिकाऊ आवास के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता सुधारने की आवश्यकता पर जोर दिया। वहीं अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित एईओएन इंटीग्रेटेड बिल्डिंग डिजाइन कंसल्टेंट्स एलएलपी के मैनेजिंग पार्टनर आशीष रखेजा, डा. पीके दास, प्रो. भूपिंदर सिंह, प्रो. राजशेखर, डा. केएस कुलकर्णी और इंजीनियर अस्वथी ने व्याख्यान के माध्यम से आवासीय विकास में अनुसंधान, नई एवं टिकाऊ तकनीकों, स्मार्ट सिटी अवधारणाओं, पर्यावरण अनुकूल निर्माण और समाज में आवास की गुणवत्ता बढ़ाने के उपायों पर जानकारी दी। साथ ही आधुनिक आवासीय निर्माण के नवीनतम रुझानों, चुनौतियों और संभावित समाधानों के बारे में जागरूक किया। इस दौरान आवास पर केंद्रित एक वीडियो प्रदर्शित किया गया। जिसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आवास निर्माण की चुनौतियों, ऊर्जा कुशल तकनीकों और पर्यावरणीय अनुकूल समाधानों को दर्शाया गया। वहीं पैनल चर्चा में विशेषज्ञों ने शहरी और ग्रामीण आवास, टिकाऊ निर्माण, ऊर्जा कुशल तकनीक, स्मार्ट सिटी और समाज में आवास की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए अपनाए जाने वाले उपायों पर विचार साझा किए। पैनल चर्चा में उपस्थित सभी वक्ताओं ने तकनीकी दृष्टिकोण, प्रशासनिक पहल और नीति निर्माण में सहयोग के महत्व पर जोर दिया। कार्यक्रम में प्रमुख विज्ञानी डा. मिक्की दलबेहरा, डा. ताबिश आलम, डा. नवीन निशांत, आर्किटेक्ट अनूप, डा. चंदन स्वरूप मीणा, डा. हेमलता आदि उपस्थित रहे।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में विश्व आवास दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थिति प्रतिभागी • साभार-संस्थान

Presented in Dainik Jagran Newspaper

टिकाऊ आवास से जीवन की गुणवत्ता सुधारने पर जोर

■ विश्व आवास दिवस पर सीबीआरआई में विशेष कार्यक्रम का आयोजन

रुड़की, 6 अक्तूबर (अनिल): विश्व आवास दिवस के अवसर पर सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई) में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य टिकाऊ, किफायती और सुरक्षित आवास निर्माण के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों व नवाचारों को बढ़ावा देना था।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य वैज्ञानिक डॉ. नीरज जैन ने इस अवसर की प्रासंगिकता बताते हुए टिकाऊ आवास के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता सुधारने की आवश्यकता पर जोर दिया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने उद्घाटन भाषण दिया और संस्थान की आवास निर्माण तथा शहरी और ग्रामीण विकास में अपनी प्रतिबद्धताओं की जानकारी साझा की।

डॉ. केएस कुलकर्णी, डॉ. ताबिश आलम और डॉ. नवीन निशांत द्वारा आवास पर केंद्रित एक विशेष वीडियो प्रदर्शित किया गया, जिसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आवास निर्माण की चुनौतियों, ऊर्जा कुशल तकनीकों और पर्यावरणीय अनुकूल समाधानों को दर्शाया गया। डॉ. नीरज जैन, डॉ. चंदन स्वरूप मीणा, डॉ. हेमलता, डॉ. ताबिश आलम, इंजीनियर अस्वथी और अन्य शामिल थे। कार्यक्रम का समापन डॉ. नीरज जैन द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

कार्यक्रम में प्रतिभाग करते अतिथि।

Presented in Dainik Jagran Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 06.10.2025

सुरक्षित आवास निर्माण की जानकारी दी

रुड़की, संवाददाता। विश्व आवास दिवस के अवसर पर सोमवार को सीबीआरआई में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य टिकाऊ, किफायती और सुरक्षित आवास निर्माण के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों व नवाचारों को बढ़ावा देना था। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य वैज्ञानिक डॉ. नीरज जैन ने किया। संस्थान के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने संस्थान की आवास निर्माण, शहरी और ग्रामीण विकास में अपनी प्रतिबद्धताओं की जानकारी साझा की। उन्होंने कहा कि सीबीआरआई सतत, किफायती दृष्टि से आवासीय समाधानों के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है।

Presented in Swatantra Chetna Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 01.10.2025

CCM N/A

सीबीआरआई ने दिखाई ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राहः डॉ. पेम्मासानी

सीबीआरआई ने दिखाई ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राहः डॉ. पेम्मासानी

- देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन
- पीएमएवाई–(ग्रामीण) के तहत 3.85 करोड़ मकान हुए स्वीकृत

भास्कर समाचार सेवा

देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन करते डॉ. पेम्मासानी।

रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चंद्रशेखर ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर–सीबीआरआई), रुड़की में देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चंद्रशेखर ने कहा कि कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहां आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना–ग्रामीण (पीएमएवाई–जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अस्पताल जाने के मामलों में 14 प्रतिशत की कमी आई है। 72 प्रतिशत घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है। सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है। इस अवसर पर उन्होंने 'रुद्राक्ष – उत्तराखंड में ग्रामीण आवास' नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है। उन्होंने सीबीआरआई से आग्रह

एसबीआई सेलाकुई ने लगाया शिविर

देहरादून। भारत सरकार के वित्तीय समावेशन अभियान को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से भारतीय स्टेट बैंक, सेलाकुई द्वारा आज एक वित्तीय समावेशन शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने भागीदारी की। शिविर में रोशन चंद ठाकुर, निदेशक (डीएफएस), नीता, महाप्रबंधक (आरबीआई), शशि कुमार, महाप्रबंधक (नाबार्ड), दीपेश राज, महाप्रबंधक (एसबीआई) तथा विनोद कुमार, उप महाप्रबंधक (एसबीआई) उपस्थित रहे। इन अधिकारियों ने ग्रामीणों को विभिन्न बैंकिंग सेवाओं और सरकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान की। शिविर के दौरान ग्रामीणों को प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना और री-केवाईसी प्रक्रिया के महत्व के बारे में बताया गया।

Published in Dainik Bhaskar

देश के प्रथम श्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

देश के प्रथम थ्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

केंद्रीय राज्य मंत्री डा पेम्मासानी ने सीबीआरआइ का किया दौरा

- डा. पेम्मासानी ने कहा, नवाचार से ग्रामीण आवास को सपने से हकीकत में बदल रहे
- भारत की ग्रामीण आवास यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है : केंद्रीय राज्यमंत्री

सीबीआरआइ रुड़की के टेक्नोलाजी पार्क में बनाया गया 3डी प्रिंटेड घर का माडल • सहारा-संस्थान

जागरण संवाददाता, रुड़कीः केंद्रीय ग्रामीण विकास एवं संचार राज्य मंत्री डा. चंद्रशेखर पेम्मासानी ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की में प्रधानमंत्री आवास योजना–ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) के तहत देश के प्रथम थ्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि पीएमएवाई-जी के तहत थ्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण घर सरकार के "विकसित भारत @ 2047" के दृष्टिकोण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

बुधवार को केंद्रीय ग्रामीण विकास एवं संचार राज्य मंत्री डा. चंद्रशेखर पेम्मासानी ने सीबीआरआइ रुड़की का दौरा किया। उन्होंने थ्रीडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन करते हुए कहा कि नवाचार और प्रतिबद्धता के साथ हम ग्रामीण आवास को सपने से हकीकत में बदल रहे हैं। आज का थ्रीडी प्रिंटेड घर विकसित भारत का प्रतीक है। साथ ही, भारत की ग्रामीण आवास यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जो प्रत्येक ग्रामीण परिवार के लिए सुरक्षित, किफायती और लचीले घर उपलब्ध कराने की सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। डा. पेम्मासानी ने ग्रामीण आवास और स्वच्छता के लिए नवाचारी, किफायती व आपदा-प्रतिरोधी समाधान विकसित करने में सीएसआइआर-सीबीआरआइ की भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने संस्थान के योगदानों को उजागर किया। जैसे कि ग्रामीण आवास प्रकारों का पहल संकलन, जो अब 250 से अधिक आपदा-प्रतिरोधी आवास प्रकारों का डिजिटल भंडार बन गया है। दो-पिट पोर-फ्लश शौचालय तकनीक को स्वच्छ भारत मिशन के तहत पांच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों में लागू किया गया है। उन्होंने नान-इराडिबल मड प्लास्टर और अन्य कम-लागत उपायों का भी उल्लेख किया। उन्होंने सीबीआरआइ में पूर्ण-स्तरीय भूकंप और अग्नि परीक्षण सुविधाओं की सराहना की। इसके बाद उन्होंने डा. बिलिंग्स प्रदर्शनी गैलरी का दौरा किया। जहां उन्होंने प्रधान विज्ञानी डा. चंदन स्वरूप मीणा द्वारा विकसित सौर एयर कंडीशनर और जल हीटर प्रौद्योगिकी का निरीक्षण किया। यह नवाचार ऊर्जा-कुशल हीटिंग और स्पेस कंडीशनिंग समाधान देती है। जो स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देने के साथ-साथ कार्बन उत्सर्जन को कम करता है। इसके अलावा उन्होंने राष्ट्रीय भूकंप अभियांत्रिकी परीक्षण सुविधा, फायर रिसर्च टेस्ट सुविधा, कंस्ट्रक्शन टेक्नोलाजी डेमोंस्ट्रेशन पार्क का भी दौरा किया। उन्होंने संस्थान के लान में "सिंदूर" का पौधा रोपित किया। इसके अलावा ग्रामीण आवास संकलन "रुद्राक्ष" का विमोचन किया। सीबीआरआइ रुड़की के निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने संस्थान के ग्रामीण विकास और भवन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में नवाचारों में महत्वपूर्ण योगदान के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन मुख्य विज्ञानी प्रो. एसके सिंह ने किया।

Published in Rashtriya Sahara

देश की पहली 3 डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास योजना शुरू

देश की पहली 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास योजना शुरू

- ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डा.पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने किया उद्घाटन
- पीएमएवाई(ग्रामीण) के तहत 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत 2.87 करोड़ पूर्ण
- केंद्रीय मंत्री ने रुद्राक्ष उत्तराखंड में ग्रामीण आवास पुस्तक का भी किया विमोचन

देहरादून/रुड़की(एसएनबी)। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डा.पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआरसीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डा.पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा कि कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊघर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। यह 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहां आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा। डा. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं।

3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन करते ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डा.पेम्मासानी चन्द्र शेखर।

स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17 की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14 की कमी आई है और 72 घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

उद्घाटन समारोह में सीएसआईआरसीबीआर आई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in Rashtriya Sahara

Union MoS inaugurates country's first 3D concrete printed rural house at CBRI

Union MoS inaugurates country's first 3D concrete printed rural house at CBRI

PIONEER NEWS SERVICE ■ Roorkee

The union Minister of State for Rural Development, Pemmasani Chandra Sekhar, inaugurated the country's first 3D concrete printed rural house at the Central Building Research Institute (CSIR–CBRI) here on Wednesday.

Speaking on the occasion, Sekhar observed, "From mud walls to 3D printing, India has demonstrated its unwavering commitment to providing safe, strong, and sustainable homes for all. These 3D printed houses are not merely about technology but they represent a future where housing is affordable, adaptable, and environmentally responsible."

Highlighting the achievements of Pradhan Mantri Awaas Yojana – Gramin (PMAY–G) the union minister said that 3.85 crore houses have been sanctioned and 2.87 crore completed. He informed that independent assessments show a 17 per cent rise in household incomes, 14 per cent decline in hospital visits and 72 per cent houses in the names of women, strengthening women's empowerment and family well-being.

Applauding CBRI's contributions, Sekhar noted the institute's 250 region-specific, disaster-resilient housing designs and innovations such as non-erodible mud plaster, low-cost strengthening technologies, and the two-pit pour-flush system that has enabled over five crore rural households to live with dignity under Swachh Bharat Mission.

On this occasion, the Minister also released a book titled 'Rudraksh – Rural Housing in Uttarakhand', which documents culturally rooted, sustainable, and climate-resilient housing practices of the State.

The union minister urged CBRI to pilot 100 cost-effective 3D printed houses to demonstrate scalability for rural India. He also urged the institute to focus on thermal comfort, renewable energy integration, climate resilience, and mason training to ensure scientific innovations directly empower rural families.

"Development is not just about building houses, but about creating homes filled with light, dignity, and self-reliance. With CBRI's scientific excellence aligned with the vision of Viksit Bharat 2047, we are laying the foundation for a stronger, healthier, and more sustainable rural India," he said.

Senior scientists of CSIR–CBRI, faculty of IIT Roorkee, representatives of the ministry of Rural Development, social organisations and students attended the programme.

Published in Pioneer

कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक : सीबीआरआई ने ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह दिखाई : डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर

कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक : सीबीआरआई ने ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह दिखाई : डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर

न्यूज वायरस नेटवर्क

रुड़की 02 अक्टूबर : ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्रशेखर ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर–सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

- डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर–सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन
- पीएमएवाई–(ग्रामीण) के तहत 3.85 करोड़ मकान हुए स्वीकृत और 2.87 करोड़ हुए पूरे, करोड़ों ग्रामीण परिवारों को मिला सम्मान और सुरक्षा
- केंद्रीय मंत्री द्वारा "रुद्राक्ष – उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" पुस्तक का भी किया गया विमोचन
- पीएमएवाई–ग्रामीण के तहत 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों के पायलट प्रोजेक्ट का किया आह्वान

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चंद्रशेखर ने कहा, "कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।"

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना–ग्रामीण (पीएमएवाई–जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है।

इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ पेम्मासानी ने "रुद्राक्ष – उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है।

भविष्य की दिशा पर चल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करे, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सके।

अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा – "विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।"

उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर–सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in News Virus

डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला उडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला उडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

सुमित तिवारी / उत्तराखंड प्रहरी ब्यूरो

रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर–सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, "कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना–ग्रामीण (पीएमएवाई–जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है। सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिज़ाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है। इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ पेम्मासानी ने "रुद्राक्ष – उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है।

भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिज़ाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा – "विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।" उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर–सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in Uttrakhand Prahari

रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

अमर हिन्दुस्तान

रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर सीबीआरआई रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है। वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, "कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल

तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहां आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना–ग्रामीण पीएमएवाई की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14 प्रतिशत की कमी आई है और 72प्रतिशत घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिज़ाइन तैयार किए हैं। इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ पेम्मासानी ने रुद्राक्ष उत्तराखंड में ग्रामीण आवास नामक पुस्तक का विमोचन भी किया जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है।भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके।

उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिज़ाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सके।अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है।

बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।

Published in Amar Hindustan

Dr Pemmasani Chandra Sekhar inaugurates Nation's First 3D Concrete Printed Rural House At CSIR–CBRI, Roorkee

Dr Pemmasani Chandra Sekhar inaugurates Nation's First 3D Concrete Printed Rural House At CSIR–CBRI, Roorkee

- **From Mud Walls to 3D Printing: CBRI Pioneers Affordable Homes for Rural India : Dr. Pemmasani**
- **Over 3.85 crore houses sanctioned and 2.87 crore completed under PMAY–G, bringing dignity and security to crores of rural families**
- **CBRI develops 250 region-specific, disaster-resilient housing designs; innovates non-erodible mud plaster, low-cost strengthening techniques, and two-pit pour-flush toilets under Swachh Bharat Mission**
- **Book "Rudraksh – Rural Housing in Uttarakhand" released by Union Minister**
- **Call for piloting 100 cost-effective 3D printed houses under PMAY–G**

Roorkee (The Hawk): Union Minister of State for Rural Development, Dr. Pemmasani Chandra Sekhar, inaugurated the country's first 3D concrete printed rural house at the Central Building Research Institute (CSIR–CBRI), Roorkee today. The landmark innovation marks a defining moment in India's rural housing journey, bridging traditional knowledge with cutting-edge technology.

Addressing scientists, researchers, and stakeholders, Dr. Sekhar observed, "From mud walls to 3D printing, India has demonstrated its unwavering commitment to providing safe, strong, and sustainable homes for all. These 3D printed houses are not merely about technology—they represent a future where housing is affordable, adaptable, and environmentally responsible."

Highlighting the achievements of Pradhan Mantri Awaas Yojana–Gramin (PMAY–G) under the leadership of Prime Minister Shri Narendra Modi, Dr. Sekhar stated that 3.85 crore houses have been sanctioned and 2.87 crore completed. He shared that independent assessments show a 17% rise in household incomes, 14% decline in hospital visits, and 72% houses in the names of women, strengthening women's empowerment and family well-being.

Applauding CBRI's contributions, Dr. Sekhar noted the institute's 250 region-specific, disaster-resilient housing designs and innovations such as non-erodible mud plaster, low-cost strengthening technologies, and the two-pit pour-flush system that has enabled over 5 crore rural households to live with dignity under Swachh Bharat Mission.

On this occasion, the Minister also released a book titled "Rudraksh – Rural Housing in Uttarakhand", which documents culturally rooted, sustainable, and climate-resilient housing practices of the hill state.

Looking ahead, Dr. Sekhar urged CBRI to pilot 100 cost-effective 3D printed houses to demonstrate scalability for rural India. He also urged the institute to focus on thermal comfort, renewable energy integration, climate resilience, and mason training to ensure scientific innovations directly empower rural families.

Concluding his address, the Minister said, "Development is not just about building houses, but about creating homes filled with light, dignity, and self-reliance. With CBRI's scientific excellence aligned with the vision of Viksit Bharat 2047, we are laying the foundation for a stronger, healthier, and more sustainable rural India."

The inauguration ceremony was attended by senior scientists of CSIR–CBRI, faculty of IIT Roorkee, representatives of the Ministry of Rural Development, social organisations, and students.

Published in The Hawk

डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक : सीबीआरआई ने ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह दिखाई : डॉ. पेम्मासानी

इंडिया वार्ता ब्यूरो

रुड़की : ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिज़ाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है।

इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ पेम्मासानी ने रुद्राक्ष - उत्तराखंड में ग्रामीण आवास नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है।

भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिज़ाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा - विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।

उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

"ग्रीन दून - क्लीन दून" विषय पर विशाल दौड़ एवं स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन

Published in India Warta

اجراءرسم کا کتاب رہائش، دیہی میں اتراکھنڈ درکش رو

'رودرکش-اتراکھنڈ میں دیہی رہائش' کتاب کا رسم اجراء

ڈاکٹر پیمسانی چندر شیکھر نے CBRI-CSIR، روڑکی میں ملک کے پہلے 3D کنکریٹ پرنٹ شدہ دیہی گھر کا افتتاح کیا

روڑکی: دیہی ترقی کے وزیر مملکت ڈاکٹر پیمسانی چندر شیکھر نے آج روڑکی کے سنٹرل بلڈنگ ریسرچ انسٹی ٹیوٹ (CBRI-CSIR) میں ملک کے پہلے 3D کنکریٹ پرنٹ شدہ دیہی گھر کا افتتاح کیا۔ یہ تاریخی اختراع ہندوستان کے دیہی رہائشی سفر میں ایک اہم لمحے کی نشاندہی کرتی ہے، جو روایتی علم کو جدید ٹیکنالوجی کے ساتھ مربوط کرتی ہے۔ سائنسدانوں، محققین، اور اسٹیک ہولڈرز سے خطاب کرتے ہوئے، ڈاکٹر پیمسانی چندر شیکھر نے کہا، "مٹی کی دیواروں سے لے کر 3D پرنٹنگ تک، ہندوستان نے سب کے لیے محفوظ، مضبوط اور پائیدار مکانات فراہم کرنے کے لیے ایک غیر متزلزل عزم کا مظاہرہ کیا ہے۔ یہ 3D پرنٹ شدہ گھر صرف ٹیکنالوجی نہیں ہیں، بلکہ مستقبل کی ایک علامت ہیں، جہاں ایک قابل اعتماد اور قابل اعتماد مستقبل ہے۔" وزیر اعظم جناب نریندر مودی کی قیادت میں پردھان منتری آواس یوجنا گرامین (G-PMAY) کی کامیابیوں پر روشنی ڈالتے ہوئے، ڈاکٹر شیکھر نے کہا کہ اس اسکیم کے تحت اب تک 38.5 ملین مکانات کو منظوری دی گئی ہے، اور 28.7 ملین مکمل ہو چکے ہیں۔ آزادانہ جائزوں سے دیہی گھریلو آمدنی میں 17 فیصد اضافہ، ہسپتالوں میں داخل ہونے میں 14 فیصد کمی اور 72 فیصد گھروں کی ملکیت خواتین کی ہے، جس سے خواتین کی بااختیاریت اور خاندانی بہبود کو تقویت ملی ہے۔ سی بی آر آئی کے تعاون کی تعریف کرتے ہوئے، انہوں نے کہا کہ انسٹی ٹیوٹ نے 250 علاقائی مخصوص تباہی سے بچنے والے مکانات کے ڈیزائن تیار کیے ہیں۔ مزید برآں، اختراعات جیسے نان ریزیوڈ پلاسٹرنگ، کم لاگت کنک بنانے کی تکنیک، اور ٹوپٹ ٹوائلٹ سسٹم نے 50 ملین سے زیادہ دیہی خاندانوں کو سوچھ بھارت مشن کے تحت باوقار زندگی گزارنے کے قابل بنایا ہے۔

اس موقع پر مرکزی وزیر مملکت ڈاکٹر پیمسانی نے کتاب "رودرکش - اتراکھنڈ میں دیہی رہائش" کا بھی اجراء کیا جو ریاست اتراکھنڈ کی ثقافتی طور پر جڑی ہوئی، پائیدار، اور آب و ہوا سے متعلق حساس ہاؤسنگ روایات کو مرتب کرتی ہے۔ مستقبل کی سمت پر زور دیتے ہوئے، ڈاکٹر شیکھر نے CBRI پر زور دیا کہ وہ 100 سستی 3D پرنٹ شدہ مکانات کا پائلٹ پروجیکٹ کرے تاکہ دیہی ہندوستان کے لیے اس ٹیکنالوجی کی فزیبلٹی کا مظاہرہ کیا جا سکے۔ انہوں نے انسٹی ٹیوٹ پر زور دیا کہ وہ تھرمل سکون، قابل تجدید توانائی کے انضمام، آب و ہوا کے لیے لچکدار ڈیزائن، اور میسن کی تربیت پر توجہ مرکوز کرے تاکہ سائنسی ایجادات سے دیہی خاندانوں کو براہ راست فائدہ پہنچ سکے۔ اپنے خطاب کو ختم کرتے ہوئے، انہوں نے کہا، "ترقی صرف مکانات بنانے کے بارے میں نہیں ہے، بلکہ ایسے گھروں کی تعمیر کے بارے میں ہے جو روشنی، وقار اور خود انحصاری سے بھرے ہوں۔ CBRI-CSIR کے سینئر سائنسدان، IIT روڑکی کے فیکلٹی ممبران، دیہی ترقی کی وزارت کے نمائندے، سماجی تنظیموں اور طلباء نے افتتاحی تقریب میں شرکت کی۔

Published in Sahafat

देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घघाटन

डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में किया

देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घघाटन

नागरिक ब्यूरो

रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएस आईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, "कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।"

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाईग्रा जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिज़ाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है।

इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ पेम्मासानी ने "रुद्राक्ष उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है। भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिज़ाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा कि "विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं। उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर आरख सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in Param Nagrik

ऐतिहासिक कदमः रुड़की में देश के पहले 3डी प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

ऐतिहासिक कदमः रुड़की में देश के पहले 3डी प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

रुड़की। ग्रामीण विकास राज्य मंत्री, डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की में देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़कर सस्ते, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की दिशा में नई राह दिखाएगा।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने इस उपलब्धि को सराहा। उन्होंने कहा, कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। उन्होंने जोर देकर कहा कि ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा। केंद्रीय मंत्री ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में चल रही प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) की सफलताओं का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि इस योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। उन्होंने स्वतंत्र आकलनों का हवाला देते हुए बताया कि इस योजना से ग्रामीण परिवारों की आय में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जबकि 72 प्रतिशत घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण को मजबूती मिली है। डॉ. शेखर ने ग्रामीण आवास में सीएसआईआर-सीबीआरआई के महत्वपूर्ण योगदान की सराहना की। उन्होंने बताया कि संस्थान ने अब तक 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अलावा, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों से पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को लाभ मिला है।

इस अवसर पर, केंद्रीय राज्य मंत्री ने रुद्राक्ष-उत्तराखंड में ग्रामीण आवास नामक पुस्तक का विमोचन भी किया। इस पुस्तक में उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का विस्तृत संकलन है। भविष्य की योजनाओं पर बल देते हुए डॉ. पेम्मासानी ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, ताकि ग्रामीण भारत के लिए इस अत्याधुनिक तकनीक की व्यावहारिकता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिज़ाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा, जिससे वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा कि, विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

Published in Vichar Suchak

Dr PC Sekhar inaugurates nation's 1st 3D Concrete Printed Rural House at CSIR-CBRI

Dehradun | Dehradun, 2 Oct, 2025 | www.garhwalpost.in | Garhwal Post 11

Dr PC Sekhar inaugurates nation's 1st 3D Concrete Printed Rural House at CSIR–CBRI

Garhwal Post Bureau

ROORKEE, 1 Oct: Union Minister of State for Rural Development, Dr Pemmasani Chandra Sekhar, inaugurated the country's first 3D concrete printed rural house at the Central Building Research Institute (CSIR-CBRI), Roorkee, today. The landmark innovation marks a defining moment in India's rural housing journey, bridging traditional knowledge with cutting-edge technology.

Addressing scientists, researchers, and stakeholders, Dr Sekhar observed, "From mud walls to 3D printing, India has demonstrated its unwavering commitment to providing safe, strong, and sustainable homes for all. These 3D printed houses are not merely about technology—they represent a future where housing is affordable, adaptable, and environmentally responsible."

Highlighting the achievements of Pradhan Mantri Awaas Yojana-Gramin (PMAY–G) under the leadership of Prime Minister Shri Narendra Modi, Dr Sekhar stated that 3.85 crore houses have been sanctioned, and 2.87 crore completed. He shared that independent assessments show a 17% rise in household incomes, 14% decline in hospital visits, and 72% houses in the names of women, strengthening women's empowerment and family well-being.

Applauding CBRI's contributions, Dr Sekhar noted the institute's 250 region-specific, disaster-resilient housing designs and innovations such as non-erodible mud plaster, low-cost strengthening technologies, and the two-pit pour-flush system that has enabled over 5 crore rural households to live with dignity under Swachh Bharat Mission.

On this occasion, the Minister also released a book titled "Rudraksh – Rural Housing in Uttarakhand", which documents culturally rooted, sustainable, and climate-resilient housing practices of the hill state.

Looking ahead, Dr Sekhar urged CBRI to pilot 100 cost-effective 3D printed houses to demonstrate scalability for rural India. He also urged the institute to focus on thermal comfort, renewable energy integration, climate resilience, and mason training to ensure scientific innovations directly empower rural families.

Concluding his address, the Minister said, "Development is not just about building houses, but about creating homes filled with light, dignity, and self-reliance. With CBRI's scientific excellence aligned with the vision of Viksit Bharat 2047, we are laying the foundation for a stronger, healthier, and more sustainable rural India."

The inauguration ceremony was attended by senior scientists of CSIR–CBRI, faculty of IIT Roorkee, representatives of the Ministry of Rural Development, social organisations, and students.

Published in Garhwal Post

सस्ते और पर्यावरण अनुकूल होंगे 3डी कंक्रीट प्रिंटेड घर

सस्ते और पर्यावरण अनुकूल होंगे 3डी कंक्रीट प्रिंटेड घर

केन्द्रीय राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी ने किया देश के पहले ग्रामीण आवास का उद्घाटन

रुड़की। केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्रशेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. चन्द्रशेखर ने कहा, कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहां आवास सस्ते और पर्यावरण अनुकूल होंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14 प्रतिशत की कमी आई है और 72 प्रतिशत घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है। सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पांच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है।

डॉ. पेम्मासानी ने रुद्राक्ष-उत्तराखंड में ग्रामीण आवास नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है। भविष्य की दिशा पर बल देते हुए उन्होंने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा, ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीधे ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें।

उन्होंने कहा कि विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं। समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in Uttar Ujala

डॉ. पेम्मासानी ने सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

डॉ. पेम्मासानी ने सीएसआईआर–सीबीआरआई, रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का किया उद्घाटन

पीआईबी

देहरादून/रुड़की १ अक्टूबर । ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआरखसीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला ३डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा, "कच्ची दीवारों से ३डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये ३डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहाँ आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण-अनुकूल होगा।"प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजनाखग्रामीण (पीएमएवाईखजी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक ३.८५ करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और २.८७ करोड़ पूरे हो चुके हैं। स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में १७% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में १४% की कमी आई है और ७२% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तिकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है।

पीएमएवाई-(ग्रामीण) के तहत 3.85 करोड़ मकान हुए स्वीकृत और 2.87 करोड़ हुए पूरे, करोड़ों ग्रामीण परिवारों को मिला सम्मान और सुरक्षा ।

सीबीआरआई ने विकसित किए 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन; नवाचार में गैर-क्षरणशील मिट्टी की पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली ।

केंद्रीय मंत्री द्वारा "रुद्राक्ष ख उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" पुस्तक का भी किया गया विमोचन ।

पीएमएवाई-ग्रामीण के तहत 100 किफायती 3डी प्रिंटेड घरों के पायलट प्रोजेक्ट का किया आह्वान ।

सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने २५० क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। इसके अतिरिक्त, गैर-क्षरणशील मिट्टी का पलस्तर, कम लागत वाली मजबूती तकनीकें और दो-गड्ढा शौचालय प्रणाली जैसे नवाचारों ने पाँच करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया है।

इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ पेम्मासानी ने "रुद्राक्ष ख उत्तराखंड में ग्रामीण आवास" नामक पुस्तक का विमोचन भी किया, जिसमें उत्तराखंड राज्य की सांस्कृतिक रूप से जुड़ी, टिकाऊ और जलवायु-संवेदनशील आवासीय परंपराओं का संकलन है। भविष्य की दिशा पर बल देते हुए डॉ. शेखर ने सीबीआरआई से आग्रह किया कि वह १०० किफायती ३डी प्रिंटेड घरों का पायलट प्रोजेक्ट संचालित करें, जिससे ग्रामीण भारत के लिए इस तकनीक की व्यवहार्यता सिद्ध हो सके। उन्होंने संस्थान को तापीय आराम, नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण, जलवायु-रोधी डिजाइन और मिस्त्री प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने को कहा ताकि वैज्ञानिक नवाचार सीध ग्रामीण परिवारों को लाभान्वित कर सकें। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा ख "विकास केवल मकान बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे घर बनाने के बारे में है जो रोशनी, गरिमा और आत्मनिर्भरता से भरे हों। सीबीआरआई की वैज्ञानिक उत्कृष्टता को विकसित भारत २०४७ की दृष्टि से जोड़ते हुए हम एक मजबूत, स्वस्थ और टिकाऊ ग्रामीण भारत की नींव रख रहे हैं।" उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर-सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

Published in Kalam Ka Daitwa

India's Ist 3D-printed rural home comes up in Roorkee

India's lst 3D-printed rural home comes up in Roorkee

Tapan Susheel | TNN

Roorkee: India's first 3D concrete-printed rural house was inaugurated at the Central Building Research Institute (CBRI) in Roorkee on Wednesday. The prototype, built under the Pradhan Mantri Awaas Yojana–Gramin (PMAY-G), was developed to offer a fast, affordable and sustainable housing solution in village settings using advanced construction technology and eco-friendly materials.

Union minister of state for rural development Chandra Sekhar Pemmasani, who inaugurated the structure, said it marked a significant milestone in India's rural housing journey. He said the house blends traditional wisdom with cutting-edge science and represents a scalable model that can be replicated in rural India.

The 3D printed rural house was inaugurated at the Central Building Research Institute

▶Continued on P 7

Published in Times of India

Agro-industrial waste used in Roorkee's 3D house

▶Continued from P 1

These 3D-printed houses are not merely about technology — they represent a future where housing is affordable, adaptable, and environmentally responsible," Pemmasani said.

In April 2021, finance minister Nirmala Sitharaman unveiled India's first 3D-printed house at IIT-Madras. Developed by the startup Tvasta Manufacturing Solutions, the 600sqft urban prototype was designed to offer affordable housing for low-income families in cities and was completed in just five days using a proprietary concrete mix. However, that house was not part of any rural housing scheme.

The Roorkee house, by contrast, is the first rural version designed under PMAY-G by scientists at CSIR-CBRI. Unlike the IIT-Madras model, it uses sustainable cement mixes incorporating agro-industrial waste such as fly ash and bagasse ash. It is also aligned with PMAY-G norms for rural homes, which include essential amenities.

Researchers said the prototype demonstrates significant time and cost efficiency. A rural house measuring 25 square metres can be printed in under a week at an estimated cost of Rs 1.8 lakh, compared to four to five months needed for traditional rural construction. The CBRI model is designed to last over 70 years. "This is the first time 3D printing has been directly applied to rural housing delivery, combining speed, affordability, and green materials for scalable village use," said Dr Ajay Chourasia, chief scientist at CBRI. He led the project along with scientist Ashish Kapoor.

Pemmasani also cited achievements under PMAY-G during PM Narendra Modi's tenure, noting that 3.85 crore houses have been sanctioned so far, with 2.87 crore already completed. He said independent studies have reported a 17% increase in household incomes and a 14% reduction in hospital visits due to better housing. Additionally, 72% of the houses were registered in the names of women, contributing to women's empowerment and family well-being.

He acknowledged CBRI's past innovations, highlighting its development of over 250 region-specific, disaster-resilient housing designs, and rural technologies like non-erodible mud plaster, simple strengthening methods, and the two-pit pour-flush toilet system that benefitted over 5 crore households under Swachh Bharat Mission. "Today's inauguration marks the beginning of its journey into the villages of India," said institute director R Pradeep Kumar.

Published in Times of India

देश के पहले उडी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

देश के पहले 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन

कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक : सीबीआरआई ने ग्रामीण भारत के लिए सस्ते घरों की राह दिखाई

पुस्तक का विमोचन करते केंद्रीय मंत्री व अन्य।

रुड़की, 1 अक्तूबर (अनिल) : ग्रामीण विकास राज्यमंत्री डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने आज केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर–सीबीआरआई), रुड़की में देश का पहला 3डी कंक्रीट प्रिंटेड ग्रामीण आवास का उद्घाटन किया। यह ऐतिहासिक नवाचार भारत की ग्रामीण आवास यात्रा का एक निर्णायक क्षण है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिकतम तकनीक से जोड़ता है।

वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और हितधारकों को संबोधित करते हुए डॉ. पेम्मासानी चन्द्र शेखर ने कहा कि कच्ची दीवारों से 3डी प्रिंटिंग तक, भारत ने सभी के लिए सुरक्षित, मजबूत और टिकाऊ घर उपलब्ध कराने की अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। ये 3डी प्रिंटेड घर केवल तकनीक नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहां आवास सस्ता, अनुकूलनशील और पर्यावरण अनुकूल होगा।

प्रधानमंत्री आवास योजना–ग्रामीण (पीएमएवाई–जी) की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए डॉ. शेखर ने बताया कि योजना के अंतर्गत अब तक 3.85 करोड़ मकान स्वीकृत हुए हैं और 2.87 करोड़ पूरे हो चुके हैं।

स्वतंत्र आकलनों से यह भी सामने आया है कि ग्रामीण परिवारों की आय में 17% की वृद्धि हुई है, अस्पताल जाने के मामलों में 14% की कमी आई है और 72% घर महिलाओं के नाम पर हैं, जिससे महिला सशक्तीकरण और पारिवारिक कल्याण को मजबूती मिली है। सीबीआरआई के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान ने 250 क्षेत्र-विशिष्ट आपदा-रोधी आवासीय डिजाइन तैयार किए हैं। उद्घाटन समारोह में सीएसआईआर–सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईआईटी रुड़की के संकाय सदस्य, ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों और विद्यार्थियों ने भाग लिया।

****

Published in Navodaya Times

CSIR-CBRI in the Limelight | 30.09.2025

Roorkee: सीबीआरआई–सीएसआईआर ने मनाया सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस

Published in : https://www.nazariyanews.com/33986/

सीबीआरआई ने 84वां स्थापना दिवस मनाया

■ बनारस हिंदू विवि के पूर्व कुलसचिव ने किया कार्यक्रम का शुभारंभ

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) ने मंगलवार को रवींद्रनाथ टैगोर ऑडिटोरियम में अपने 84वें स्थापना दिवस का भव्य आयोजन किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलसचिव एवं आईआईटी गांधीनगर के निदेशक, पद्मश्री से सम्मानित प्रो. सुधीर कुमार जैन ने मुख्य अतिथि के रूप में किया। कार्यक्रम के समापन पर मंगलवार देर शाम विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का आयोजन किया गया, जिसने समारोह को और भी आकर्षक बना दिया। प्रो. जैन ने गृह एवं यांत्रिक अनुप्रयोगों के लिए स्वचालन एवं विश्लेषण (आज्ञा) प्रयोगशाला का उद्घाटन किया, जिसे वैज्ञानिक चंद्रभान पटेल, कांती सोलंकी और डॉ. एस.के. पाणिग्राही ने संयुक्त रूप से विकसित किया है।

मुख्य अतिथि ने निर्माण प्रौद्योगिकी प्रदर्शन पार्क, राष्ट्रीय भूकंप अभियांत्रिकी परीक्षण सुविधा और 3डी कंक्रीट प्रिंटिंग प्रयोगशाला का भी दौरा किया। प्रो. जैन ने कहा, नई तकनीकें भवन विज्ञान को नई दिशा देने के साथ-साथ भारत की ऊर्जा सुरक्षा और सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। वैज्ञानिक अनुसंधान में परस्पर सहयोग, सकारात्मक सोच और प्रेरणादायक वातावरण आवश्यक तत्व हैं।

कार्यक्रम में सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने संस्थान के अब तक के योगदान और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संस्थान सतत विकास की दिशा में प्रभावी कार्य कर रहा है।

संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. चंदन स्वरूप मीना द्वारा विकसित सोलर एयर कंडीशनर और सोलर वाटर हीटर की तकनीक का प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पुणे, महाराष्ट्र की एक कंपनी को किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वैज्ञानिक एवं स्थापना दिवस आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. डी.पी. कानूनगो ने भी संस्थान द्वारा किए जा रहे नवाचारों और अनुसंधान कार्यों की जानकारी दी।

रुड़की सीबीआरआई में मंगलवार को आयोजित स्थापना दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथि। • हिन्दुस्तान

सोलह सौ मीटर दौड़ के शिवम रहे प्रथम

हरिद्वार। गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय में आयोजित अन्तर सदनीय क्रीड़ा प्रतियोगिता की 1600 मीटर दौड़ सीनियर वर्ग में शिवम ने प्रथम, जय किशन ने द्वितीय, हर्ष भाटी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 800 मीटर दौड़ जूनियर वर्ग में कार्तिक राजपूत, अनुज, जीवन ने प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया। 400 मीटर दौड़ सीनियर वर्ग में प्रथम स्थान पर अंश चौहान, द्वितीय देवेंद्र, तृतीय आर्यन ने हासिल किया।

गैस कनेक्शन

रुड़की, संवाददाता। गैस एजेंसियों की मनमानी पर अंकुश लगाने के लिए तेल कंपनी ने उपभोक्ताओं को जागरूक करना शुरू कर दिया है। इस व्यवस्था के तहत यदि कोई उपभोक्ता अपनी गैस एजेंसी की सर्विस से संतुष्ट नहीं है तो वह अपनी कनेक्शन आईडी बदले बगैर गैस कनेक्शन दूसरी एजेंसी से संबद्ध कर सकता है। उपभोक्ताओं की शिकायत को देखते हुए अब तेल कंपनी ने गैस कनेक्शन पोर्टेबिलिटी योजना को नए सिरे से लागू करने का फैसला किया है।

Published in: Swatantra Chetna Newspaper

सीबीआरआई ने मनाया सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस

स्वतंत्र चेतना

रुडकी। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर अडिटोरियम में एक भव्य कार्यक्रम के साथ सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर, भवन विज्ञान और अनुसंधान में संस्थान के उल्लेखनीय योगदानों को स्मरण किया गया। इस कार्यक्रम में कर्मचारियों, छात्रों और गणमान्य व्यक्तियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पद्मश्री प्रो. सुधीर कुमार जैन, पूर्व कुलपति, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय एवम् संस्थापक निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गांधीनगर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। समारोह की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई, इसके बाद सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने स्वागत भाषण दिया। अपने भाषण में उन्होंने संस्थान के योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने विभिन्न अनुसंधान एवं विकास सुविधाओं को भी रेखांकित किया। इसके पश्चात एक वर्ष के अंतराल में सीएसआईआर-सीबीआरआई की सेवा से अधिवर्षिता पर सेवानिवृत हुए कार्मिकों को मुख्य अतिथि द्वारा सम्मान पत्र, शल और कलाई घड़ी भेंट कर सम्मानित किया गया। साथ ही 25 वर्ष की निरंतर सेवा पूर्ण कर चुके कार्मिकों को भी कलाई घड़ी भेंट की गई, इसके उपरान्त मुख्य अतिथि की उपस्थिति में संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक ड. चन्दन स्वरूप मीना द्वारा विकसित सोलर एयर कन्डिशनर और वाटर हीटर की तकनीक का प्रौद्योगिकी हस्तांतरण ेझ त्म्छ्रॅ।ठस्म् च्ट्ज रूज्च पुणे, महाराष्ट्र को किया गया। यह अभिनव तकनीक, ऊर्जा दक्ष हीटिंग और स्पेस कंडीशनिंग समाधान प्रदान करती है तथा स्वच्छ ऊर्जा एवं कार्बन उत्सर्जन में कमी की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

इसके पश्चात ड. डीपीक्र कानूनगो, मुख्य वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, स्थापना दिवस आयोजन समिति ने मुख्य अतिथि पद्मश्री प्रो. सुधीर कुमार जैन का परिचय प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में सीएसआईआर-सीबीआरआई को उनकी उपलब्धियों पर बधाई दी और कहा कि नई तकनीक भवन विज्ञान को नई दिशा देने के साथ-साथ भारत की ऊर्जा सुरक्षा एवं सतत विकास लक्ष्यों को पूरा करने में सहायक सिद्ध होगी। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए परस्पर सहयोग एवं सकारात्मक सोच तथा प्रेरक वातावरण आवश्यक है। प्रदीप कुमार वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रक ने सभी का धन्यवाद किया। इस आयोजन समिति के अध्यक्ष ड.डीपीक्र कानूनगो, मुख्य वैज्ञानिक रहे। प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने समारोह के मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न और शल भेंट की। कार्यक्रम का संचालन प्रो. एसक्र के. सिंह, मुख्य वैज्ञानिक द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने गृह एवं यांत्रिक अनुप्रयोगों के लिए स्वचालन एवं विश्लेषण (आज्ञा) आईओटी प्रयोगशाला का उद्घाटन किया। यह प्रयोगशाला चंद्रभान पटेल, वैज्ञानिकय कांती सोलंकी, वैज्ञानिकय तथा ड.एसके पाणिग्राही, मुख्य वैज्ञानिक द्वारा विकसित की गई है। इस–ाके अतिरिक्त, निर्माण प्रौद्योगिकी प्रदर्शन पार्क, राष्ट्रीय भूकंप अभियांत्रिकी परीक्षण सुविधा (छम्म्ज्थ) और 3डी कंक्रीट प्रिंटेड प्रयोगशाला के भ्रमण का संचालन ड.अजय चौरसिया, मुख्य वैज्ञानिक, आशीष पिप्पल, प्रधान वैज्ञानिक, ड. किशोर कुलकर्णी, प्रधान वैज्ञानिक, ड.चंचल सोनकर, प्रधान वैज्ञानिक और आशीष कपूर वैज्ञानिक द्वारा किया गया, इसके साथ ही, मुख्य अतिथि ने प्रदर्शनी गैलरी का भी भ्रमण किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्र गान के साथ हुआ। इस अवसर पर एक सांस्तिक संध्या का आयोजन भी किया गया।

Published in: Swatantra Chetna Newspaper

अपने क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित करते अतिथि। संवाद

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने 84वां स्थापना दिवस मनाया

रुड़की। सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की ने रवींद्रनाथ टैगोर ऑडिटोरियम में भव्य कार्यक्रम के साथ सीएसआईआर का 84वां स्थापना दिवस मनाया।

मुख्य अतिथि पूर्व कुलपति बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और संस्थापक निदेशक आईआईटी गांधीनगर पद्मश्री प्रो. सुधीर कुमार जैन ने दीप जलाकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। निदेशक प्रो. आर प्रदीप कुमार ने स्वागत भाषण दिया और संस्थान के योगदानों पर प्रकाश डाला।

समारोह में सेवानिवृत और 25 वर्ष की सेवा पूरी कर चुके कर्मचारियों का सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि ने स्वचालन एवं विश्लेषण प्रयोगशाला का उद्घाटन किया निर्माण प्रौद्योगिकी प्रदर्शन पार्क, राष्ट्रीय भूकंप अभियांत्रिकी परीक्षण सुविधा एवं 3डी कंकरीट प्रिंटेड प्रयोगशाला का अवलोकन किया। संवाद

Published in: Dainik jagran Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 29.09.2025

राष्ट्रीय सहारा

देहरादून

सीबीआरआई की टीम ने किया आपदा क्षतिग्रस्त क्षेत्रों का सर्वेक्षण

हरिद्वार। मानसून काल के दौरान जनपद में आई बाढ़ एवं आपदाओं से हुई वास्तविक क्षति के आंकलन के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा पोस्ट डिजास्टर नीड्स असेसमेंट प्रक्रिया के तहत गठित सर्वेक्षण टीम ने सीबीआरआई के चीफ साइंटिस्ट डा.अजय चौरसिया के नेतृत्व में रविवार को जिला आपदा कार्यालय सभागार हरिद्वार में बैठक ली तथा आपदा प्रभावित एवं भूस्खलन क्षेत्रों का भ्रमण एवं सर्वेक्षण किया गया। सचिव एचआरडीए मनीष कुमार सिंह ने बैठक का संचालन करते हुए जनपद की सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक व भौगोलिक स्थिति के बारे में जानकारी देते हुए मानसून काल मे हुए नुकसान के बारे में पावर पाइन्ट प्रजेन्टेशन के माध्यम से विस्तार से जानकारी दी।

बैठक में सीबीआरआई के चीफ साइंस्टिट डा.अजय चौरसिया ने निर्देशित करते हुए कहा कि सभी अधिकारी आपसी समन्वय से बरसात के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में आने वाली बाढ़ तथा होने वाले नुकसान को रोकने के लिए प्रभावी कार्य योजना बनाकर भारत सरकार में भेजी जाये। उन्होंने सिंचाई विभाग के अभियन्ताओं को निर्देशित करते हुए कहा कि बाढ़ एवं भू-कटाव को रोकने के लिए लौंग टर्म स्थायी समाधान किया जाये ताकि संभावित बाढ़ एवं उसके नुकसान से बचा जा सके। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि हमारे एसेस्ट इस प्रकार के होने चाहिए कि भविष्य में आपदा की स्थिति उत्पन्न न हो। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि नदियों के तटबन्ध से सम्बन्धित प्रस्ताव भी प्रस्तावित की जाये। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में वश आउट हुई सड़कों के लिए भी स्थायी समाधान हेतु प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश दिये ताकि भविष्य में मार्ग बाधित न हो। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि आंकलन प्रापर किया जाये तथा जिस श्रेणी का कार्य है, उसे उसी श्रेणी में प्रस्तावित किया जाये तथा डेटा देने में विशेष सावधानी बरती जाये। उन्होंने कम्यूनिकेशन हेतु प्लान बी के तहत भी कार्य योजना बनाने के निर्देश दिये। उन्होंने सीवर, ड्रेनेज तथा एसटीपी निर्माण से सम्बन्धित कार्यों हेतु भी कार्य योजना के बारे महत्वपूर्ण निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिये। बैठक में पोस्ट डिजास्टर नीड असेसमेंट (नकट) टीम ने राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण से हरिद्वार जनपद में हुई भारी बारिश-भूस्खलन के कारण हुए जनहानि, पशुहानि एवं क्षतिग्रस्त भवनों का विवरण लिया साथ मानसून सत्र 2025 में हुए क्षति का विभागवार विवरण को जानकारी ली गई।

उन्होंने विद्युत, पिटकुल, सिंचाई, लोनिवि, शिक्षा, चिकित्सा, बाल विकास, सिंचाई सहित अन्य सम्बन्धित विभागों के अधिकारों को महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिये। उन्होंने पीडीएमए से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से जानकारी दी। भीमगोड़ा पुल के पास बार-बार रैलवे ट्रेक पर गिर रहे मलवा स्थल तथा मनसा देवी क्षेत्र में भू-स्खलन सम्भावि क्षेत्रों का भी स्थलीय निरीक्षण किया गया। उन्होंने निरीक्षण के दौरान इन समस्याओं के स्थायी समाधान हेतु महत्वपूर्ण -निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिये।

इस दौरान अपर जिलाधिकारी दीपेंद्र सिंह नेगी, एनडीएम प्रोफेसर डा.गगनदीप, असि.प्रोफेसर एपी यूनिवर्सिटी डा.एम शर्मा, स्टेट नोडल आफिसर डा.मोहित कुमार पुनिया, एचआरडीए सचिव मनीष सिंह,उप जिलाधिकारी जितेंद्र कुमार ,जिला विकास अधिकारी वेदप्रकाश, आपदा प्रबंधन अधिकारी भीरा रावत, जिला अर्थ संख्या अधिकारी नलिनी ध्यानी,जिला परियोजना प्रबंधक संजय सक्सेना,रेंज आफिसर राजाजी टाइगर रिजर्व बृजेंद्र दत्त तिवारी,जिला पर्यटन अधिकारी सुशील नौटियाल सहित अन्य संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

Published in: Rashtriye Sahara Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 26.09.2025

अमर उजाला

सूर्योदय सुबह 6:11
सूर्यास्त शाम 6:08

देहरादून | सोमवार

amarujala.co

बाढ़ और भू-कटाव को रोकने के लिए करें स्थायी समाधान

सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक ने दिए अधिकारियों को बैठक में निर्देश

मानसून के दौरान आपदाओं से हुए नुकसान का एनडीएमए की टीम ने किया सर्वेक्षण

संवाद न्यूज एजेंसी

हरिद्वार। विभागों के अधिकारी आपसी समन्वय से एक प्रभावी कार्ययोजना बनाकर केंद्र सरकार को भेजें ताकि भविष्य में बाढ़ से होने वाले नुकसान को रोका जा सके। सिंचाई विभाग बाढ़ और भू-कटाव को रोकने के लिए दीर्घकालिक और स्थायी समाधान करे।

यह बात सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई) के चीफ साइंटिस्ट डॉ. अजय चौरसिया ने रविवार को राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) द्वारा गठित सर्वेक्षण टीम की ओर से आयोजित बैठक में कही।

मानसून के दौरान जिले में आई बाढ़ और आपदाओं से हुए नुकसान का आकलन करने के लिए टीम ने हरिद्वार के जिला आपदा कार्यालय सभागार में यह बैठक आयोजित की। बैठक के बाद टीम ने आपदा प्रभावित और भूस्खलन संभावित क्षेत्रों का दौरा भी किया। बैठक में हरिद्वार-रुड़की विकास प्राधिकरण (एचआरडीए) के अधिकारी मनीष कुमार सिंह ने जिले की सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक और भौगोलिक स्थिति के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से मानसून काल में हुए नुकसान का ब्योरा भी प्रस्तुत किया।

पहाड़ी का निरीक्षण करते सीबीआरआई के चीफ साइंटिस्ट डॉ. अजय चौरसिया। संवाद

भूस्खलन संभावित इलाकों का किया निरीक्षण

टीम ने भीमगोड़ा पुल के पास बार-बार रेलवे ट्रैक पर गिरने वाले मलबे वाले स्थल और मनसा देवी क्षेत्र में भूस्खलन संभावित इलाकों का भी निरीक्षण किया और इन समस्याओं के स्थायी समाधान के लिए महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिए।

इस मौके पर अपर जिलाधिकारी दीपेंद्र सिंह नेगी, प्रो. डा.गगनदीप, असि.प्रोफेसर एचपी यूनिवर्सिटी डा.एम.शर्मा, स्टेट नोडल ऑफिसर डा.मोहित कुमार पूनिया, उप जिलाधिकारी जितेंद्र कुमार, जिला विकास अधिकारी वेदप्रकाश, आपदा प्रबंधन अधिकारी मीरा रावत, जिला अर्थ संख्या अधिकारी नलिनी ध्यानी, जिला परियोजना प्रबंधक संजय सक्सेना, रेंजर बृजेंद्र दत्त, जिला पर्यटन अधिकारी सुशील नौटियाल आदि मौजूद रहे।

क्षतिग्रस्त हुईं सड़कों के लिए भी बनाएं प्रस्ताव

- डॉ. चौरसिया ने जोर दिया कि हमारी संपत्तियां ऐसी होनी चाहिए कि भविष्य में आपदा की स्थिति उत्पन्न न हो। उन्होंने नदियों के तटबंधों से संबंधित प्रस्ताव तैयार करने के भी निर्देश दिए। साथ ही क्षतिग्रस्त हुईं सड़कों के लिए भी प्रस्ताव बनाने को कहा ताकि भविष्य में मार्ग बाधित न हों। उन्होंने अधिकारियों को डेटा देने में विशेष सावधानी बरतने और आकलन को उचित श्रेणी में प्रस्तावित करने का निर्देश दिया। संचार व्यवस्था के लिए उन्होंने प्लान बी के तहत भी कार्ययोजना बनाने को कहा। इसके अलावा सीवर, ड्रेनेज और एसटीपी निर्माण से संबंधित कार्यों के लिए भी योजना बनाने के निर्देश दिए गए।

Published in: Amar Ujala Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 26.09.2025

सहारा लाइव NEWS
हर खबर पर पैनी नजर

अंतरराष्ट्रीय | राज्य | टेक्नोलॉजी | ट्रेवल | राष्ट्रीय | लोकल न्यूज़ | स्वास्थ्य | LIVE TV | CONTACT

उत्तराखंड

राष्ट्र-निर्माण के प्रति सीएसआईआर-सीबीआरआई की प्रतिबद्धता

By Sahara Live News
SEP 26, 2025

इस कार्यक्रम में मेथोडिस्ट गर्ल्स डिग्री कॉलेज, रुड़की तथा पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय संख्या 1, रुड़की के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों सहित विभिन्न स्कूलों से आए प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसके अतिरिक्त, ट्रेनिंग एवं एकेडमी ऑफ साइंटिफिक एंड इनोवेटिव रिसर्च (AcSIR) के छात्र-छात्राओं ने भी सक्रिय रूप से सहभागिता की। खास बात यह रही कि बिहार सरकार के 50 नव नियुक्त सहायक वास्तुविदों का एक विशिष्ट दल शैक्षणिक-सह-तकनीकी भ्रमण हेतु संस्थान पहुँचा।

ओपन डे के दौरान प्रतिभागियों के लिए संस्थान के विभिन्न प्रमुख अनुसंधान स्थलों जैसे डॉ. बिलिंग प्रदर्शनी दीर्घा, राष्ट्रीय भूकंप परीक्षण सुविधा, अग्नि सुरक्षा अभियांत्रिकी प्रयोगशाला एवं ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क का सुव्यवस्थित भ्रमण कराया गया। यहाँ उन्हें भूकंप अभियांत्रिकी, अग्नि सुरक्षा, टिकाऊ ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं संरचनात्मक नवाचारों के क्षेत्र में किए जा रहे शोध कार्यों की जानकारी दी गई। यह जानकारी डॉ. नवीन, डॉ हेमलता , श्री नदीम, डॉ नीरज एवं ओर भी संस्थान के वैज्ञानिकों कि उपस्थिति म हुआ ।

विशेष प्रदर्शनों में श्रीराम मंदिर के सूर्य तिलक तंत्र का मॉडल, नवोदय विद्यालयों के लिए विकसित वास्तु नवाचार तथा खारे क्षेत्रों में कार्यरत श्रमिकों के लिए अग्निरोधक घरों की तकनीक शामिल थीं। इन प्रदर्शनों ने आधुनिक विज्ञान के साथ परंपरा के समन्वय और देश की बुनियादी संरचना एवं पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान हेतु संस्थान के प्रयासों को उजागर किया।

कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को अग्रणी वैज्ञानिकों से सीधे संवाद करने, उन्नत यंत्रों एवं अनुसंधान सुविधाओं को देखने तथा वैज्ञानिक अनुसंधान के व्यावहारिक पहलुओं को समझने का अवसर प्राप्त हुआ। इस अवसर पर यह भी उल्लेख किया गया कि नई दिल्ली स्थित वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) अपनी 37 राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं के नेटवर्क के साथ विश्व की सबसे बड़ी सार्वजनिक रूप से वित्तपोषित अनुसंधान संस्थाओं में से एक है। भवन विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में समर्पित एक प्रमुख संस्थान के रूप में सीएसआईआर-सीबीआरआई देश की आधारभूत संरचना के लिए सतत, लचीले एवं अभिनव समाधान विकसित करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

यह ओपन डे कार्यक्रम विशेष रूप से अगली पीढ़ी के वैज्ञानिकों, अभियंताओं एवं वास्तुविदों को प्रेरित करने और उन्हें कक्षा में प्राप्त ज्ञान को वास्तविक तकनीकी प्रगति से जोड़ने हेतु तैयार किया गया था। यह आयोजन जिज्ञासा, नवाचार और वैज्ञानिक सोच को प्रोत्साहित करने में सफल रहा तथा अनुसंधान एवं नवाचार के माध्यम से राष्ट्र-निर्माण के प्रति सीएसआईआर-सीबीआरआई की प्रतिबद्धता को एक बार फिर सशक्त रूप से प्रदर्शित किया।

Presented in: https://www.saharalivenews.com/archives/9838

CSIR-CBRI in the Limelight | 25.09.2025

www.livehindustan.com

हिन्दुस्तान

देहरादून, गुरुवार, 25 सितंबर 2025

सीएसआईआर को शोध के लिए 2277 करोड़ रुपये

केंद्र सरकार ने उच्चस्तरीय शोध को बढ़ावा देने के लिए सीएसआईआर की योजना को मंजूरी दी है। इसके तहत देश भर के शोध संस्थानों में रिसर्च फैलोशिप की शुरुआत की जाएगी। इसके लिए 2277 करोड़ रुपये मंजूर किए गए हैं। अश्विनी वैष्णव ने बताया कि योजना का क्रियान्वयन वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) द्वारा किया जाएगा। इसके दायरे में सभी केंद्रीय प्रयोगशालाएं एवं संस्थान आएंगे। योजना के तहत योग्य नौजवानों को रिसर्च फैलोशिप और पीएचडी के लिए अवसर प्रदान किए जाएंगे।

Published in: Hindustan newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 23.09.2025

उत्तराखंड–हिमाचल के छह शहरों में एक तिहाई इमारतें खतरनाक

जागरण विशेष

- उच्च जोखिम वाले इन भवनों के भूकंप के दौरान ढहने या भारी क्षति की आशंका
- केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के अध्ययन में सामने आई है यह बात

[illegible]

रुड़की: उत्तराखंड के कर्णप्रयाग, नैनीताल, मसूरी और हिमाचल प्रदेश के कंडाघाट, टटहू, पांवटा साहिब में एक तिहाई से अधिक इमारतें संरचनात्मक अभियांत्रिकी (स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग) के मानकों पर खरी नहीं हैं। इनको भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप डिजाइन नहीं किया गया है। इस कारण ये इमारतें उच्च जोखिम वाली श्रेणी में हैं, जिनके भूकंपीय घटनाओं के दौरान ढहने या भारी क्षति की आशंका रहती है। इन संरचनाओं में अस्पताल, स्कूल और प्रशासनिक कार्यालय भी चल रहे हैं। यह बात केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की के अध्ययन में सामने आई है। अध्ययन की रिपोर्ट गृह मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण को भेजी गई है।

सीबीआरआइ रुड़की के संरचना अभियांत्रिकी प्रभाग के मुख्य विज्ञानी व इस परियोजना के प्रोजेक्ट लीडर डा. अजय चौरसिया ने बताया कि जुलाई 2024 से मार्च 2025 के मध्य यह अध्ययन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य भूकंपीय खतरों का मूल्यांकन, इमारतों की भेद्यता का आकलन, संभावित मानवीय व आर्थिक नुकसान का अनुमान, भविष्य के जोखिम न्यूनीकरण और शहरी नियोजन रणनीतियों के लिए मजबूत आधार प्रदान करना था। उनके अनुसार चिह्नित क्षेत्रों का जोखिम मूल्यांकन मानचित्र तैयार करने के लिए एक व्यापक पद्धति विकसित की गई है। संस्थान के छह-सात विज्ञानी व 40 प्रोजेक्ट असिस्टेंट ने प्रत्येक शहर में 1,000 इमारतों पर अध्ययन किया।

पहाड़ों की रानी मसूरी • जागरण आर्काइव

1,000

इमारतों पर प्रत्येक शहर में यह अध्ययन किया गया संस्थान के छह–सात विज्ञानी व 40 प्रोजेक्ट असिस्टेंट की टीम की ओर से

सीबीआरआइ के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया • स्वयं

4,978 इमारतों में से अधिकांश में रहना जोखिम भरा, तत्काल पुनर्निर्माण की आवश्यकता

डा. अजय चौरसिया ने बताया कि अध्ययन में शामिल शहर भूकंपीय क्षेत्र चार व पांच में आते हैं। ये शहर तीव्र भू-गति के प्रति संवेदनशील हैं। ये खड़ी ढलानों, अनियमित विकास और संरचनात्मक अभियांत्रिकी की अनदेखी के कारण अधिक जोखिम भरे हैं। इन छह शहरों में 4,978 इमारतें चिह्नित की गई हैं, जिनमें अप्रबलित चिनाई (यूआरएम) है। इन्हें तत्काल पुनर्निर्माण की आवश्यकता है। इन इमारतों में 37,822 लोग रहते हैं।

रिपोर्ट में दिए गए सुझाव

- सभी प्रभावित शहरों में प्राथमिकता के आधार पर संरचनात्मक रेट्रोफिटिंग कार्यक्रम बने।
- आपातकालीन निकासी और प्रतिक्रिया प्रोटोकाल।
- वास्तविक समय भूकंपीय निगरानी प्रणालियां।
- संवेदनशील संरचनाओं विशेष रूप से सार्वजनिक और संस्थागत भवनों के रेट्रोफिटिंग को मिले प्राथमिकता, ताकि वहां जोखिम कम हो।
- सभी नए निर्माणों के लिए अनिवार्य भवन कोड के अनुपालन को लागू करना और पालन कराना।
- नगर पालिका नियोजन और जोनिंग विनियमों में जोखिम संवेदनशीलता मानचित्रों को एकीकृत करना, ताकि जरूरी कदम उठाए जा सकें।
- आपदा प्रतिरोधी केंद्रों में बुनियादी ढांचे का उन्नयन किया जाए। साथ ही पहुंच, क्षमता और संरचनात्मक मजबूती जरूरी।
- लचीली निर्माण प्रथाओं और आपदा तैयारियों पर सामुदायिक जागरूकता और प्रशिक्षण।

Published in: Dainik Jagran newspaper

CBRI Roorkee study found that out of 4,978 buildings surveyed in six cities of Uttarakhand and Himachal, about 40% are unsafe and 1,000 highly dangerous. Many schools, hospitals, and offices lack proper structural design, posing serious risks in earthquake-prone zones. The report calls for urgent reconstruction, strict building code compliance, and earthquake-resistant measures.

CSIR-CBRI in the Limelight | 16.09.2025

राष्ट्रीय सहारा

हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी के साथ हुआ हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ

रुड़की। सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान में सोमवार से हिन्दी पखवाड़े का शुभारंभ हो गया। 6 अक्टूबर तक पखवाड़े का आयोजन होगा। संस्थान में हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी के साथ किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डीपी कानूनगो ने किया। इस अवसर पर हिन्दी पुस्तक पर चर्चा कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम में संस्थान के प्रधान तकनीकी अधिकारी राजीव कुमार शर्मा ने हरिवंश राय बच्चन की पुस्तक 'मधुशाला' पर चर्चा प्रस्तुत की। हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी का संयोजन दीप्ति कर्मकर ने किया। हिन्दी पखवाड़ा समापन पर 6 अक्तूबर को पुरस्कार वितरण होगा। इस अवसर पर आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. पीसी थपलियाल, डा. नीरज जैन, डॉ. राजेश वर्मा, डॉ. नवल किशोर बंजारा, अवनीश कुमार, हुमैरा अतहर, अर्पणा महेश्वरी, दिनेश, अमित, भारती आदि उपस्थित रहे।

Published in: Rashtriye sahara newspaper

देहरादून, मंगलवार
16 सितंबर, 2025
हरिद्वार संस्करण
मूल्य ₹ 7.00
पृष्ठ 20
www.jagran.com

दैनिक जागरण

CBRI LIBRARY
ROORKEE

सात करोड़ से अधिक आइटीआर दाखिल 15
पहलगाम पीड़ितों के साथ दिखाना चाहते थे एकजुटता 16

रुड़की जागरण

हिंदी में कामकाज की प्रवृति को अपनाने पर दिया जोर

सीबीआरआइ रुड़की में हिंदी पखवाड़ा शुरू, विभिन्न प्रतियोगिताएं होंगी, हिंदी पुस्तक पर किया गया चर्चा

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की में हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी के साथ किया गया। इस मौके पर हिंदी में कामकाज करने की प्रवृति को गंभीरता के साथ अपनाने पर जोर दिया गया। वहीं 'हिंदी पुस्तक पर चर्चा' कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

संस्थान में सोमवार को हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन वरिष्ठ विज्ञानी डा. डीपी कानूनगो ने किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि दुनिया में वही देश आगे बढ़ रहे हैं, जिन्होंने अपनी मातृभाषा को अपनाया है। उन्होंने कहा कि कार्मिकों के बच्चों को महीने में एक बार संस्थान के पुस्तकालय में जरूर लाना चाहिए। ताकि बच्चों में पुस्तकों को पढ़ने की रुचि बढ़े। साथ ही उन्होंने सभी से मातृभाषा की पुस्तकें पढ़ने की आदत विकसित करने का अनुरोध किया। इस दौरान 'हिंदी पुस्तक पर चर्चा' कार्यक्रम में संस्थान के प्रधान तकनीकी अधिकारी राजीव कुमार शर्मा ने हरिवंश राय बच्चन की पुस्तक 'मधुशाला' पर चर्चा प्रस्तुत की। संस्थान की हिंदी अधिकारी अर्चना चौधरी ने बताया कि हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता, आशु भाषण प्रतियोगिता, हिंदी प्रश्नोत्तरी, हिंदीतर भाषी कार्मिकों के लिए हिंदी लेखन प्रतियोगिता आयोजित की जाएंगी। साथ ही कार्मिकों के बच्चों के लिए भी हिंदी कविता पाठ और भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित होंगी। हिंदी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण छह अक्टूबर को होगा। हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का संयोजन दीप्ति कर्माकर ने किया। इस मौके पर आयोजन समिति के अध्यक्ष डा. पीसी थपलियाल, डा. नीरज जैन, डा. राजेश वर्मा, डा. नवल किशोर बंजारा, अवनीश कुमार, हुमैरा अतहर, अर्पण महेश्वरी, मेहर सिंह, धर्म सिंह नेगी, अमन कुमार, विनीत सैनी, डा. चंदन स्वरूप मीना, मोहित, दिनेश, भारती आदि उपस्थित रहे।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की में हिंदी पखवाड़े के शुभारंभ के मौके पर हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का अवलोकन करते विज्ञानी और अन्य • साभार-संस्थान

Published in: Dainik Jagran newspaper

At CSIR-CBRI Roorkee, Hindi Pakhwada was inaugurated with emphasis on adopting Hindi in official work. Various competitions will be organized during the program, and discussions were held on Hindi books to promote the use of Hindi in daily functioning.

CSIR-CBRI in the Limelight | 14.09.2025

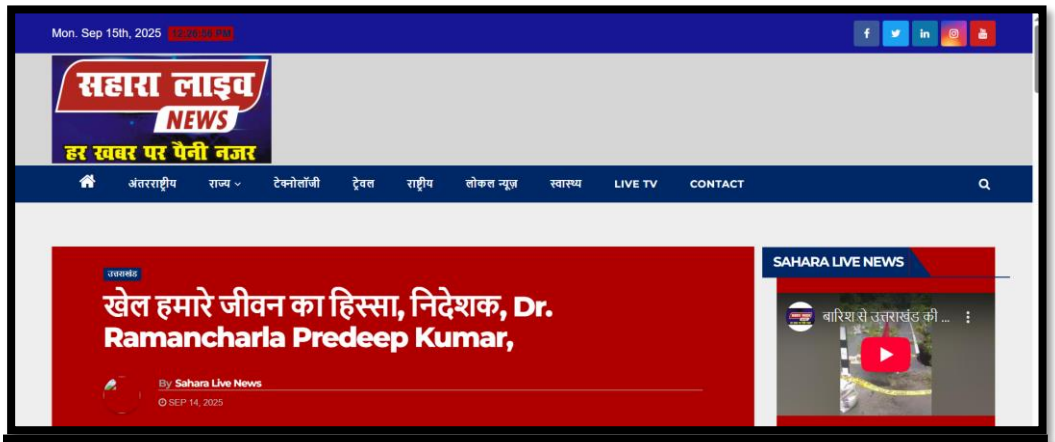

सीएसआईआर–सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रूड़की में संस्थान परिवार के बीच कबड्डी लीग का आयोजन किया गया।

इस आयोजन का शुभारंभ माननीय निदेशक, Dr. Ramancharla Predeep Kumar, सीबीआरआई द्वारा किया गया।

प्रतियोगिता में दो टीमों ने भाग लिया:

- टीम–A

हिमांशु शर्मा, शिवम सोलंकी, सूरज कुमार, सोनू, शुभम, मोहद अज़ीम, रजनीश, ए. अरविंद, शुभम, रजनीश

- टीम–B

दिनेश, मनीष, मोहित, हिमांशु, हरजीत, अमित यादव, सौरभ कुमार राय, एन के. बंजारा, पियूष, विजेंद्र

मैच का संचालन रेफरी मेहर सिंह द्वारा किया गया।

यह खेल प्रतिस्पर्धा न केवल कर्मचारियों के बीच आपसी सहयोग और खेल भावना को बढ़ावा देती है बल्कि स्वास्थ्य एवं फिटनेस के प्रति जागरूकता का भी संदेश देती है।

सीबीआरआई परिवार ने उत्साहपूर्वक इस खेल का आनंद लिया और खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया।
इस कार्यक्रम में श्री अमन, श्री अर्पण एवं Dr. Chandan Swaroop Meena भी उपस्थित थे
सोनू शर्मा + शुभम बेस्ट डिफेंडर, बेस्ट कैचर मोहित,मनीष कुमार, टीम A कप्तान श्री हिमांशु शर्मा, टीम B श्री दिनेश विजेता रही , निदेशक महोदय के उद्बोधन में भारत के पारंपरिक खेलो से युवाओं को जोड़ने और स्वास्थ व्यायाम के साथ टीम भावना से आगे बढ़ने के साथ आह्लादित रहने के लिए संदेश दिए

सोनू शर्मा एवं शुभम को बेस्ट डिफेंडर, और बेस्ट कैचर मोहित,मनीष कुमार, रहे
इन टीमों का नेतृत्व
हिमांशु शर्मा और दिनेश ने किया, निदेशक महोदय के उद्बोधन में भारत के पारंपरिक खेलो से युवाओं को जोड़ने और स्वास्थ व्यायाम के साथ टीम भावना से आगे बढ़ने के साथ आह्लादित रहने के लिए संदेश दिए
आयोजन में डॉ चंदन स्वरूप मीणा एवं रोचक कमेंट्री अमन कुमार ने की , अंत में विजेताओं को पुरस्कृत किया गया
ईश्वर चंद संवाददाता सहारा टीवी

Published in :- https://www.saharalivenews.com/archives/9761

CSIR–CBRI, Roorkee organized a Kabaddi match to promote team spirit, fitness, and traditional sports. Team A's Himanshu Sharma and Team B's Vinesh were winners, while Sobha, Shubham, and Mohit received Best Player awards. The event was graced by Director Dr. Ramancharla Pradeep Kumar and Dr. Chandan Swaroop Meena.

CSIR-CBRI in the Limelight | 01.09.2025

राष्ट्रीय सहारा

सीबीआरआई टीम ने पूरा किया तुंगनाथ के जीर्णोद्धार का सर्वे

मंदिर की भू-तकनीकी सर्वे करती तकनीकी विशेषज्ञों की टीम

रुद्रप्रयाग (एसएनबी)। समुद्र तल से 12 हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित तृतीय केदार के नाम से विख्यात तुंगनाथ मंदिर के संरक्षण एवं जीर्णोद्धार को लेकर बद्रीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति ने प्रयास तेज कर दिये है। इसको लेकर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) के तकनीकी विशेषज्ञों की टीम ने मंदिर की भू-तकनीकी सर्वे का कार्य पूरा कर लिया है। सर्वे रिपोर्ट के विश्लेषण के बाद डीपीआर बनायी जायेगी और रिपोर्ट के आधार पर डीपीआर के अनुरूप रख-रखाव संरक्षण का कार्य शुरू होगा।

बीकेटीसी अध्यक्ष हेमंत द्विवेदी ने बताया कि केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की तृतीय केदार तुंगनाथ मंदिर के निर्माण और विकासात्मक गतिविधियों के लिए बदरीनाथ केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) के अनुरोध पर विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार कर रही है। इससे पहले भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई), भारतीय भू वैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) और सीबीआरआई द्वारा भी तुंगनाथ मंदिर क्षेत्र का दौरा किया जा चुका है। उन्होंने बताया कि मंदिर के संरक्षण को लेकर बीकेटीसी हरसंभव प्रयास में जुटी हुई है। साल-दर-साल तुंगनाथ धाम आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या में इजाफा हो रहा है। साथ ही इस साल अब तक एक लाख से ज्यादा श्रद्धालु तुंगनाथ धाम पहुंचकर भगवान शिव का आशीर्वाद ले चुके है।

Published in: Rashtriye sahara newspaper

CSIR-CBRI team completed the structural survey of Tungnath temple to assess its stability. Using advanced techniques, they studied construction, materials, and condition of the temple. The data will help in its preservation and restoration.

CSIR-CBRI in the Limelight | 31.08.2025

सहारा लाइव NEWS
हर खबर पर पैनी नजर

अंतरराष्ट्रीय | राज्य | टेक्नोलॉजी | ट्रेवल | राष्ट्रीय | लोकल न्यूज़ | स्वास्थ्य | LIVE TV | CONTACT

उत्तराखंड

खेल हमारे जीवन का अंग, डॉ आर प्रदीप कुमार निदेशक CBRI

By Sahara Live News

AUG 31, 2025

राष्ट्रीय खेल दिवस के उपलक्ष्य में सीएसआईआर–सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रूड़की में 29 अगस्त से 31 अगस्त 2025 तक विभिन्न स्वास्थ्य एवं फिटनेस गतिविधियों का आयोजन किया गया।

29 अगस्त को भारत माँ के वीर सपूत एवं हॉकी जादूगर मेजर ध्यानचंद जी की जयंती के अवसर पर संस्थान परिवार ने सामूहिक प्रतिज्ञा ली कि वे स्वयं को स्वस्थ एवं फिटनेस वॉक के साथ-साथ अपने मित्रों और परिवारजनों को भी स्वस्थ जीवनशैली अपनाने हेतु प्रेरित करेंगे।

इसके उपरांत, 30 अगस्त की प्रातः 7:30 बजे कॉलोनी वासियों एवं संस्थान के अनेक कार्मिकों ने cycling में भाग लिया।

31 अगस्त की सुबह 7:30 बजे वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कानूनगो एवं वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रक के द्वारा हरी झंडी दिखाकर साइकिल यात्रा का शुभारंभ किया गया। यह यात्रा उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई और समापन फलाहार एवं भारत माँ के वीर सपूत मेजर ध्यानचंद जी के जयघोष के साथ हुआ।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ आर प्रदीप कुमार ने संदेश दिया कि खेल, पैदल चलना, साइकिलिंग और स्वस्थ आहार न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं बल्कि सामूहिक एकता और सामाजिक सौहार्द को भी मजबूत करते हैं।
ईश्वर चंद संवाददाता सहारा टीवी

Published in :- https://www.saharalivenews.com/archives/9715

CSIR–CBRI, Roorkee celebrated National Sports Day (29–31 Aug 2025) with fitness pledge, cycling events, and a bicycle rally. Director Dr. Pradeep Kumar highlighted the importance of sports, walking, cycling, and a healthy lifestyle.

CSIR-CBRI in the Limelight | 30.08.2025

4 हरिद्वारः दैनिक हाक, शनिवार, 30 अगस्त 2025 — रुड़की

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने विकसित किया अग्नि अवरोधित दरवाजा

एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को तकनीक हस्तांतरित

रुड़की (दैनिक हाक): सीएसआईआर, केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, सीबीआरआई ने शुक्रवार को इमारतों में आग की आपदा को नियंत्रित करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि दर्ज की, जब संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी "120 मिनट के लिए आंशिक रूप से अग्नि रोधित एकल पल्ले वाला एक तरफ खुलने वाला धातु का संमिश्रित दरवाजा" का सफलतापूर्वक हस्तांतरण एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को किया गया। ये प्रौद्योगिकी डॉ. नवल किशोर बंजारा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं टीम के अभिनव शोध और प्रयासों से सफलतापूर्वक विकसित हुई है।

इस अवसर पर कंपनी के प्रतिनिधि तापस दास प्रबंध निदेशक, मानस दास निदेशक, श्रीमती वानीश्री नायक, श्रीमती सुशीला वर्मा उपस्थित रहे और उन्होंने सीबीआरआई से ये प्रौद्योगिकी औपचारिक रूप से ग्रहण की, जिनका हस्तांतरण सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार के कर-कमलों द्वारा किया गया। अग्नि अवरोधित दरवाजे आग लगने के दौरान लपटों, धुएँ और गर्मी की गति को सीमित करने में मदद करते हैं। अस्पतालों, कार्यालय भवनों, शॉपिंग मॉल, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और अन्य बड़े मानव-आवासीय स्थायी ढाँचों जैसी महत्वपूर्ण इमारतों में अग्नि अवरोधित दरवाजों का उपयोग होता है। विकसित आंशिक रूप से अग्नि अवरोधित दरवाजे का परीक्षण आई.एस.ओ. 834 मानक ताप वक्र का पालन करते हुए, आई.एस. 3614:2021 के अनुसार 120 मिनट तक किया गया। दरवाजे ने 30 मिनट तक आंशिक अग्नि रोधित के मानदंडों को पूरा किया और पूरे 120 मिनट तक अपनी अखंडता और स्थिरता बनाए रखी। प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार की गरिमामयी उपस्थिति रही, तथा वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. डी. पी. कानूनगो, डॉ. एस. के. पाणिग्राही, डॉ. सौरव जैन, डॉ. नदीम अहमद, डॉ. राजकुमार, श्रीमति गायत्री देवी, एवम समस्त तकनीकी व परियोजना स्टाफ इत्यादि उपस्थित रहे।

Presented in Newspaper: Dainik Hak

epaper हिन्दुस्तान

Share | Copy url | Save | Font Size | D'load Image | Image | Text | Listen

रुड़की में सीबीआरआई ने बनाया अग्नि अवरोधित विशेष दरवाजा

रुड़की, संवाददाता। सीबीआरआई रुड़की ने इमारतों में आग की आपदा को नियंत्रित करने के लिए एक विशेष प्रकार के दरवाजा विकसित किया है। जो किसी इमारत या मकान के कमरे में आग लगने के 2 घंटे तक आग को दरवाजे से बाहर फैलने से रोक सकता है। कमरे में एक हजार डिग्री तापमान होने के बावजूद भी यह दरवाजा कारगर साबित होगा। संस्थान द्वारा शुक्रवार को एसके इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड खुर्दा औद्योगिक एस्टेट ओडिशा को

02 घंटे तक कमरे से बाहर नहीं फैलेगी आग

यह तकनीक हस्तानांतरित किया गया। ये प्रौद्योगिकी डॉ. नवल किशोर बंजारा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं टीम के अभिनव शोध और प्रयासों से सफलतापूर्वक विकसित हुई हैं। मौके पर कंपनी के प्रबंध निदेशक मानस दास, सुशीला वर्मा उपस्थित रहे। जिन्होंने सीबीआरआई से ये प्रौद्योगिकी औपचारिक रूप से ग्रहण की। जिनका हस्तांतरण सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार के द्वारा किया गया। अग्नि अवरोधित दरवाजे आग लगने के दौरान लपटों, धुएं और गर्मी की गति को सीमित करने में मदद करते हैं। अस्पतालों, कार्यालय भवनों, शॉपिंग मॉल अन्य बड़े मानव-आवासीय स्थायी ढांचों जैसी महत्वपूर्ण इमारतों में अग्नि अवरोधित दरवाजों का उपयोग होता है। इस दौरान वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. डीपी कानूनगो, डॉ. एसके पाणिग्राही, डॉ. सौरव जैन आदि मौजूद रहे।

रुड़की सीबीआरआई में शुक्रवार को अग्निरोधित एकल पल्ले वाला एक तरफ खुलने वाला धातु का संमिश्रित दरवाजा का सफलतापूर्वक हस्तांतरण एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को किया गया। • हिन्दुस्तान

यह होगा फायदा

सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने बताया कि अगर किसी मकान के कमरे में आग लग जाती है तो आग की लपटे सबसे पहले दरवाजे या खिड़की से होकर ही बाहर की ओर फैलती है। जिससे की कई बार बड़ी जनहानि हो जाती है। उन्होंने बताया कि अगर इस दरवाजे को लगा दिया जाए तो करीब 2 घंटे तक उस कमरे से आग बाहर को नहीं फैलेगी। जिससे आसानी से उस मकान या इमारत में मौजूद लोग बाहर निकल सकेंगे।

Presented in Newspaper: Hindustan

CSIR-CBRI in the Limelight | 29.08.2025

Uk Bharat
सत्य की खोज

Home / Uncategorized / सीएसआईआर–सीबीआरआई ने विकसित किया अग्नि अवरोधित दरवाजा, तकनीक हस्तांतरित.....

Dehradun Haridwar Roorkee Uncategorized

सीएसआईआर–सीबीआरआई ने विकसित किया अग्नि अवरोधित दरवाजा, तकनीक हस्तांतरित.....

Uk Bharat August 29, 2025

सीएसआईआर–केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने भवन निर्माण क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि दर्ज की है। संस्थान ने "120 मिनट के लिए आंशिक रूप से अग्नि रोधित, एकल पल्ले वाला, एक तरफ खुलने वाला धातु का संमिश्रित दरवाजा" विकसित कर उसकी प्रौद्योगिकी का सफलतापूर्वक हस्तांतरण एस.के. इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, खुर्दा औद्योगिक एस्टेट, ओडिशा को किया।

इस अभिनव तकनीक का विकास डॉ. नवल किशोर बंजारा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं उनकी शोध टीम द्वारा किया गया। कार्यक्रम में कंपनी की ओर से प्रबंध निदेशक श्री तापस दास, निदेशक श्री मानस दास, श्रीमती बानीश्री नायक और श्रीमती सुशीला वर्मा उपस्थित रहे। प्रौद्योगिकी का औपचारिक हस्तांतरण सीएसआईआर–सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार के कर-कमलों से संपन्न हुआ।

विशेषज्ञों के अनुसार, अग्नि अवरोधित दरवाजे आग लगने की स्थिति में लपटों, धुएँ और गर्मी के प्रसार को सीमित करने में मदद करते हैं। इनका उपयोग अस्पतालों, कार्यालयों, शॉपिंग मॉल, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और अन्य बड़े सार्वजनिक भवनों में सुरक्षा हेतु किया जाता है।

संस्थान द्वारा विकसित दरवाजे का परीक्षण आईएसओ 834 मानक ताप वक्र का पालन करते हुए आईएस 3614:2021 के अंतर्गत किया गया। दरवाजे ने 30 मिनट तक आंशिक अग्नि-रोधित मानदंडों को पूरा किया और पूरे 120 मिनट तक अपनी अखंडता व स्थिरता बनाए रखी।

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम में वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. डी. पी. कानूनगो, डॉ. एस. के. पाणिग्राही, डॉ. सौरभ जैन, डॉ. नदीम अहमद, डॉ. राजकुमार, श्रीमती गायत्री देवी सहित तकनीकी और परियोजना स्टाफ मौजूद रहा।

Published in :- https://ukbharat.com/csir-cbri-work-for-fair/

CSIR–CBRI, Roorkee developed a fire-resistant composite metal door (120-minute rating) and successfully transferred the technology to S.K. Engineers India Pvt. Ltd., Odisha.

CSIR-CBRI in the Limelight | 21.08.2025

सहारा लाइव NEWS
हर खबर पर पैनी नजर

अंतरराष्ट्रीय | राज्य | टेक्नोलॉजी | ट्रेवल | राष्ट्रीय | लोकल न्यूज़ | स्वास्थ्य | LIVE TV | CONTACT

उत्तराखंड

शोध और प्रयास से सीबीआरआई रुड़की को बड़ी सफलता

By Sahara Live News
AUG 21, 2025

सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा पिडिलाइट उद्योग को द्वि-प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

दिनांक : 21 अगस्त 2025

रुड़की स्थित सीएसआईआर–केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) ने 21 अगस्त 2025 को भवन निर्माण क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि दर्ज की, जब संस्थान द्वारा विकसित दो अभिनव प्रौद्योगिकियों का सफलतापूर्वक हस्तांतरण पिडिलाइट इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड, मुंबई को किया गया। दोनों प्रौद्योगिकियां श्री राजेश कुमार शर्मा (प्रधान वैज्ञानिक) एवं टीम के शोध और प्रयासों से विकसित हुईं हैं । इस अवसर पर कंपनी के प्रतिनिधि डॉ. अनिल बांडेले (वरिष्ठ उपाध्यक्ष, पिडिलाइट उद्योग) उपस्थित रहे और उन्होंने सीबीआरआई से ये प्रौद्योगिकियाँ औपचारिक रूप से ग्रहण कीं, जिनका हस्तांतरण सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने की प्रौद्योगिकियों की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—संरचनात्मक ग्रेड/भार-वहन करने वाला हल्का कंक्रीट, ढलाई के समय किसी यांत्रिक कंपन की आवश्यकता नहीं होने वाली स्वसंपीड्य प्रकृति, नव पीढ़ी का सीमेंट अर्थात् एलसी3 (LC3) प्रौद्योगिकी के कारण क्लोराइड प्रवेश और सल्फेट आक्रमण के विरुद्ध बेहतर ये नवाचार संयुक्त राष्ट्र (UN) के सतत विकास लक्ष्य- 9, 11 और 12 के अनुरूप हैं। द्वि-प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार की गरिमामयी उपस्थिति रही, तथा वैज्ञानिक समुदाय से डॉ. एस. के. पाणिग्राही, एवं समस्त तकनीकी व परियोजना स्टाफ इत्यादि उपस्थित रहे।

Published in :- https://www.saharalivenews.com/archives/9680

On 21st August 2025, CSIR-CBRI Roorkee transferred two innovative construction technologies to Pidilite Industries, including a self-compacting lightweight concrete and advanced LC3 cement. These sustainable technologies support UN SDGs and were developed under the leadership of Chief Scientist Rajesh Kumar Sharma.

CSIR-CBRI in the Limelight | 21.08.2025

Dehradun: The Aug 5 flash flood in Uttarkashi's Dharali was likely triggered by a "cloudburst-induced moraine debris flow along the Kheer Gad stream", as per a five-member multi-institutional team of scientists who spent four days surveying the areas flattened by the deluge.

Advertisement

Tired of too many ads? Go Ad Free Now

"The debris may have accumulated from a past event, obstructing the stream's course, which then breached catastrophically," said Shantanu Sarkar, director of Uttarakhand Landslide Mitigation and Management Centre (ULMMC), who led the team. The scientists from ULMMC, Geological Survey of India, IIT Roorkee, Wadia Institute of Himalayan Geology, and the Central Building Research Institute (CBRI) surveyed Dharali and Harsil between Aug 13 and 16. They interviewed locals, ground search teams, and village elders before returning to Dehradun on Saturday.

"A key part of the exercise was attempting to reach the glacier site but thick cloud cover prevented us from reaching the glaciated portion directly", said Sarkar. However, the team was the first to conduct an aerial survey of the affected area after the tragedy. He added, "Our chopper ascended to around 8km above Dharali. We observed the Kheer Gad stream and the debris." Sarkar said that once cloud-free satellite images of the glaciated area are available, the team will finalise its findings in a report which will be submitted to the govt.

Advertisement

Debi Prasanna Kanungo, chief scientist at CBRI, added, "Combined rainfall and snowmelt likely triggered the cloudburst-induced glaciofluvial debris flow due to elevated daytime temperatures. Data from Wadia Institute shows around 100mm of rainfall occurred on Aug 4 and 5 in the area. This substantial precipitation, combined with snowmelt runoff, appears to have played a critical role in mobilising the debris."

Based on the aerial survey, the team has ruled out both Glacial Lake Outburst Flood (GLOF) and Landslide Lake Outburst Flood (LLOF) as causes of the flash flood. "We did not see any fresh active landslide marks for LLOF along the Kheer Gad or depressions that could indicate a glac lake for GLOF," Kanungo said.

The scientists also dismissed the possibility of an ice-rock avalanche. "In the 2021 Rishiganga disaster in Chamoli, debris travelled nearly 25km and carried huge ice and rock pieces. Here, the debris moved just 8km and contained no ice or large rocks. We specifically asked locals and rescue teams about sightings of ice and rock, but they denied it, which rules out the avalanche theory," the team noted.

Advertisement

Published in :- https://timesofindia.indiatimes.com/city/dehradun/1st-aerial-survey-by-scientists-identifies-cloudburst-induced-debris-flow-as-likely-trigger-of-dharali-flood/amp_articleshow/123349265.cms

The August 4, 2025 flash flood in Uttarakhand's Chaurali area was likely caused by a cloudburst-triggered landslide that deposited moraine debris into the Kheer Ganga stream, blocking it and leading to a glacial lake outburst. A team of scientists from various institutes found no signs of a major avalanche but confirmed rainfall and temperature shifts played key roles in triggering the disaster.

CSIR-CBRI in the Limelight | 08.08.2025

कुदरत का कहर

2000 से अधिक फूड पैकेट देहरादून से हेलीकाप्टर से भेजे गए हैं आपदा प्रभावित क्षेत्र धराली में

2023 में जनपद के ही सिलक्यारा में निर्माणाधीन सुरंग ढहने से फंसे थे 41 श्रमिक

दैनिक जागरण
देहरादून/हरिद्वार, 8 अगस्त, 2025
www.jagran.com

आपदाओं का जोखिम कम करने को मजबूत प्रबंधन की जरूरत

आपदा से पहले रोकथाम, न्यूनीकरण व तैयारी और बाद में प्रतिक्रिया, पुनर्वास और पुनर्निर्माण महत्वपूर्ण

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी गुरुवार सुबह उत्तरकाशी में राहत बचाव कार्य में जुटे कार्मिकों के साथ • सूचना

रीना डंडरियाल • जागरण

रुड़की: भारतीय हिमालय आपदाओं जैसे बाढ़, भूकंप, भूस्खलन, ग्लेशियर टूटना, ग्लेशियर झील, बादल फटना आदि की दृष्टि से संवेदनशील है। क्योंकि, वह नया एवं कमजोर पर्वत है। वहीं, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्यों में धराली जैसी प्राकृतिक आपदाओं का जोखिम हमेशा बना रहता है। इसलिए इन राज्यों में मजबूत आपदा प्रबंधन योजना बेहद जरूरी है। इससे भले ही प्राकृतिक आपदाओं को रोका न जा सके, लेकिन जान-माल के खतरे को काफी कम किया जा सकता है। यह कहना है केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की के संरचना अभियांत्रिकी प्रभाग के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया का।

डा. चौरसिया बताते हैं कि आपदा प्रबंधन योजना के छह कंपोनेंट (अवयव) होते हैं। जिसमें किसी भी प्रकार की आपदा से पहले रोकथाम, न्यूनीकरण (मिटिगेशन) और तैयारी शामिल है। जबकि, आपदा के बाद प्रतिक्रिया, पुनर्वास और पुनर्निर्माण महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं को रोका नहीं जा सकता। ऐसे में बाकी पांच कंपोनेंट पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। साथ ही पहाड़ी क्षेत्रों में निर्माण को लेकर नियम-कायदे तय करने और उनके पालन की सख्त जरूरत है। चिंता की बात है कि पर्वतीय क्षेत्रों में करीब 85 प्रतिशत गैर इंजीनियर्ड इमारतें हैं। यानी इन्हें किसी पेशेवर इंजीनियर की ओर से डिजाइन एवं प्रमाणित नहीं किया गया है। नियमानुसार नदियों के 50 मीटर के दायरे में मकान आदि का निर्माण नहीं किया जा सकता।

सीबीआरआइ रुड़की के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया।

2013 की आपदा उत्तराखंड को छह से आठ हजार करोड़ का नुकसान

डा. चौरसिया के अनुसार हिमाचल में 2023 की आपदा के कारण वहां के पर्यटन को करीब 10 हजार करोड़ रुपये का सालाना और उत्तराखंड को 2013 की आपदा के बाद छह से आठ हजार करोड़ रुपये का सालाना नुकसान हुआ था। बताया कि किसी भी प्रकार की आपदा का प्रभाव लंबे समय तक रहता है, इसलिए आपदाओं से होने वाले जान-माल के जोखिम को कम करने की दिशा में ठोस कदम उठाने की जरूरत है।

राहत पहुंचाने की पहले से हो तैयारी

विज्ञानी डा. चौरसिया कहते हैं कि आपदा के बाद राहत एवं बचाव कार्य में काफी दिक्कतें आती हैं। ऐसे में धराली जैसी आपदा के पीड़ितों को तुरंत राहत पहुंचाने के लिए पहले से व्यवस्था होनी चाहिए। वहीं इनके कुछ सुरक्षित स्थानों पर स्कूल, अस्पताल आदि में कमरों की व्यवस्था करनी चाहिए। ताकि आपदा के लिहाज से संवेदनशील क्षेत्रों में किसी भी प्रकार की आपदा आने पर पीड़ितों को तत्काल राहत पहुंचाई जा सके।

Presented in Newspaper: Dainik Jagran

प्राथमिक कक्षा से ही पढ़ाया जाए आपदा प्रबंधन

रीना डंडरियाल • जागरण

- जापान, ताइवान और नेपाल जैसे देशों ने इसे स्कूली पाठ्यक्रम में किया है शामिल
- पूर्वजों से सीख लेते हुए भवन निर्माण में भूकंपरोधी तकनीक के प्रयोग की जरूरत

रुड़की: भारतीय हिमालय क्षेत्र भूकंप, भूस्खलन, ग्लेशियर टूटना, ग्लेशियर झील, बादल फटना, बाढ़ की दृष्टि से हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा है। आपदा से निपटने के लिए होमवर्क जरूरी है। यही वजह है कि आपदाओं के लिहाज से संवेदनशील राज्य उत्तराखंड, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर आदि में प्राचीन काल में परंपरागत तरीके से निर्माण कार्य किया जाता था, जो आपदारोधी भी होता था और किफायती भी। जापान, ताइवान और नेपाल जैसे देशों ने आपदा प्रबंधन को प्राथमिक विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी शामिल किया है। वहां बच्चों को आपदाओं से सबक लेते हुए तैयारियों में जुटने का पाठ पढ़ाया जाता है।

केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की के संरचना अभियांत्रिकी प्रभाग के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया बताते हैं कि आपदाओं से होने वाले जान-माल के नुकसान को कम करने के लिए इन तीन देशों से सीख लेने की आवश्यकता है। इन देशों ने आपदाओं से सबक लेते हुए तैयारियों पर जोर दिया। यही वजह है कि ताइवान में वर्ष 2024 में 7.2 तीव्रता का भूकंप आने पर 10 से भी कम लोगों की जान गई। जबकि, वर्ष 1999 में इसी देश में 7.6 तीव्रता के भूकंप में लगभग 2500 लोगों की जान गई थी और हजारों इमारतें तबाह हो गई थीं।

डा. अजय चौरसिया के अनुसार, पूर्व में जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड व हिमाचल में पारंपरिक तकनीक काठकुनी से भवनों का निर्माण किया जाता था। जिस तरह पूर्वजों ने अपने अनुभवों से सीख लेकर आपदारोधी भवनों का निर्माण किया, उसी तरह वर्तमान में पर्वतीय क्षेत्रों से लेकर मैदानी इलाकों तक आपदारोधी इमारतों का निर्माण करना जरूरी है।

सीबीआरआइ रुड़की के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया।

कन्फाइंड मेसनरी तकनीक का करें उपयोग

डा. अजय चौरसिया बताते हैं कि भवन निर्माण में कन्फाइंड मेसनरी तकनीक का उपयोग करना चाहिए। इस तकनीक से भवन भूकंपरोधी व अन्य आपदारोधी बनाए जा सकते हैं। इसमें स्थानी निर्माण सामग्री का इस्तेमाल होता है। इस तकनीक में दीवार के दोनों कोनों के पास कंक्रीट व हल्के सरिये का इस्तेमाल किया जाता है, जो चारों तरफ से भवन को जकड़ लेते हैं। ऐसे में भूकंप आने पर भवन में दरारें तो आ सकती हैं, वो धराशायी नहीं होगा। इसमें आरसीसी तकनीक की तुलना में 40 प्रतिशत कम लागत आती है।

350 प्रतिशत अधिक भार सहने की क्षमता

डा. चौरसिया के अनुसार, सीबीआरआइ ने कन्फाइंड तकनीक की सफलतापूर्वक टेस्टिंग की है। प्रयोगशाला में जांच के दौरान पाया गया कि कन्फाइंड मेसनरी से निर्मित निर्माण में सामान्य चिनाई के मुकाबले 350 प्रतिशत अधिक भार सहने की क्षमता है।

पहाड़ों में ढलान पर न हो निर्माण

डा. चौरसिया बताते हैं कि पहाड़ों में ढलान पर निर्माण नहीं होना चाहिए। इससे जब तीव्र गति से वर्षा का पानी आएगा तो इमारत को साथ लेकर चला जाएगा या नींव को कमजोर कर देगा। साथ ही पहाड़ों पर अधिक बहुमंजिला भवन न बनाया जाए।

Presented in Newspaper: Jagran

जोखिम कम करने को चाहिए मजबूत प्रबंधन

टीना डंडरियाल ● जागरण

रुड़की: भारतीय हिमालय आपदाओं जैसे बाढ़, भूकंप, भूस्खलन, ग्लेशियर टूटना, ग्लेशियर झील, बादल फटना आदि की दृष्टि से संवेदनशील है। क्योंकि, वह नया एवं कमजोर पर्वत है। वहीं, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्यों में धराली जैसी प्राकृतिक आपदाओं का जोखिम हमेशा बना रहता है। इसलिए इन राज्यों में मजबूत आपदा प्रबंधन योजना बेहद जरूरी है। इससे भले ही प्राकृतिक आपदाओं को रोका न जा सके, लेकिन जान-माल के खतरे को काफी कम किया जा सकता है। यह कहना है केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) रुड़की के संरचना अभियांत्रिकी प्रभाग के मुख्य विज्ञानी डा. अजय चौरसिया का।

डा. चौरसिया बताते हैं कि आपदा प्रबंधन योजना के छह कंपोनेंट (अवयव) होते हैं। जिसमें किसी भी प्रकार की आपदा से पहले रोकथाम, न्यूनीकरण (मिटिगेशन) और तैयारी शामिल है। जबकि, आपदा के बाद प्रतिक्रिया, पुनर्वास और पुनर्निर्माण महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं को रोका नहीं जा सकता। ऐसे में बाकी पांच कंपोनेंट पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। साथ ही पहाड़ी क्षेत्रों में निर्माण को लेकर नियम-कायदे तय करने और उनके पालन की सख्त जरूरत है। चिंता की बात है कि पर्वतीय क्षेत्रों में करीब 85 प्रतिशत गैर इंजीनियर्ड इमारतें हैं। यानी इन्हें किसी पेशेवर इंजीनियर की ओर से डिजाइन एवं प्रमाणित नहीं किया गया है। नियमानुसार नदियों के 50 मीटर के दायरे में मकान आदि का निर्माण नहीं किया जा सकता। बावजूद इसके पहाड़ी क्षेत्रों में नदियों के आसपास निर्माण हो रहा है। उनके अनुसार 2023 में जोशीमठ भूधंसाव की वजह नियमों का पालन नहीं होना था। जोशीमठ में लूज मलबे में लोगों ने मकान बना रखे हैं। ड्रेनेज की कोई व्यवस्था नहीं है।

डा. अजय चौरसिया ● जागरण

- आपदा से पहले रोकथाम, न्यूनीकरण व तैयारी और बाद में प्रतिक्रिया पुनर्वास और पुनर्निर्माण महत्वपूर्ण
- पहाड़ी क्षेत्रों में निर्माण को लेकर नियम-कायदे तय करने और उनका सख्ती से पालन कराने की जरूरत

राहत की पहले से हो तैयारी

विज्ञानी डा. चौरसिया कहते हैं कि आपदा के बाद राहत एवं बचाव कार्य में काफी दिक्कतें आती हैं। ऐसे में धराली जैसी आपदा के पीड़ितों को तुरंत राहत पहुंचाने के लिए पहले से व्यवस्था होनी चाहिए। सर्वे करके कुछ सुरक्षित स्थानों पर स्कूल, अस्पताल आदि में कमरों की व्यवस्था करनी चाहिए। ताकि किसी भी प्रकार की आपदा आने पर पीड़ितों को तत्काल राहत पहुंचाई जा सके।

उत्तराखंड को छह से आठ हजार करोड़ का नुकसान

डा. चौरसिया के अनुसार हिमाचल में 2023 की आपदा के कारण वहां के पर्यटन को करीब 10 हजार करोड़ रुपये का सालाना और उत्तराखंड को 2013 की आपदा के बाद छह से आठ हजार करोड़ रुपये का सालाना नुकसान हुआ था। आपदा का प्रभाव लंबे समय तक रहता है, इसलिए जोखिम को कम करने की दिशा में ठोस कदम उठाने चाहिए।

विशेषज्ञों ने आपदाग्रस्त क्षेत्र में की पड़ताल

उत्तरकाशी। धराली में आपदा से प्रभावित क्षेत्र का स्थलीय निरीक्षण करने और इस घटना के संभावित कारणों को जानने के लिए शासन की ओर से गठित विशेषज्ञों की टीम बुधवार को धराली पहुंची।

टीम ने प्रभावित क्षेत्र में आपदा से हुए नुकसान, उसकी प्रवृत्ति और कारणों की मौके पर पड़ताल की। पांच सदस्यीय विशेषज्ञों की यह टीम पूरे आपदाग्रस्त क्षेत्र का सर्वे करने के बाद अपनी रिपोर्ट शासन को सौंपेगी।

विशेषज्ञों की इस टीम में उत्तराखंड भूस्खलन शमन एवं प्रबंधन केंद्र के निदेशक शांतनु सरकार, केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रुड़की के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. डीपी कानूनगो, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के निदेशक रवि नेगी, वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. अमित कुमार, उत्तराखंड भूस्खलन न्यूनीकरण और प्रबंधन केंद्र के प्रधान सलाहकार मोहित कुमार शामिल हैं। बुधवार को विशेषज्ञों ने धराली में फैले मलबे के नमूनों को भी परखा। खीरगंगा के प्रवाह क्षेत्र और मलबे के प्रसार का भी जायजा लिया।

स्थानीय लोगों से घटना के बारे में जानकारी प्राप्त की। बृहस्पतिवार को भी विशेषज्ञों की टीम धराली में अलग-अलग स्थानों पर जाकर बीते पांच अगस्त को खीर गंगा में आई तबाही के कारणों को तलाशने का काम करेंगी। ज्ञात हो कि यह टीम दो दिन से मौसम खराब होने के कारण प्रभावित क्षेत्र में नहीं पहुंच सकी थी। ब्यूरो

Presented in Newspaper: Jagran

Dr. Ajay Chourasia, senior scientist at CSIR-CBRI, emphasizes the need for strong disaster management through risk assessment, early warnings, and preparedness. Citing the 2013 Kedarnath and 2023 Uttarakhand disasters, he highlights the importance of coordinated response and long-term recovery to reduce future risks.

CSIR-CBRI in the Limelight | 02.08.2025

पब्लिक न्यूज राष्ट्रीय 5

Visit us at: www.facebook.com/publicnewsindia/ www.publicnews.live

सीबीआरआई रुड़की और एचपीएसडीएमए का संयुक्त प्रयास आपदा प्रबंधन में नई दिशा

SHUBHAM PROPERTIES AND BUILDERS

Published in Public News Newspaper

CSIR-CBRI in the Limelight | 30.07.2025

Low cost construction technologies book published by cbri researcher.

• The Voice Of Nation

Dr Rakesh Vashishtha

News Room Roorki –CSIR CBRI Roorkee published a book titled "Low-Cost Construction Technologies (1947 -2025) by CSIR-CBRI Researchers" on 30th July 2025. This Book is a humble tribute to the visionary scientists whose groundbreaking contributions have redefined the construction technology landscape in India. Their relentless pursuit of excellence has transformed scientific research into real-world solutions, directly impacting the lives of millions, from vulnerable rural communities to large-scale urban developments. Their contributions have significantly enhanced buildings' safety, durability, and efficiency, particularly benefiting those in economically weaker sections and disaster-prone areas.

Ar. S.K.Negi, who has conceptualized and authored the book, has been working on the book for the last few months. The book he has lived on, worked on, and seen being developed for more than 35 years of his service in CBRI Roorkee.

The book will be helpful for building practitioners looking for the time-tested low-cost construction technologies and students visiting the Rural Technology Park, curious about the technical building details behind the time-tested technologies demonstrated there.

The occasion was graced by CBRI Director Prof. R Pradeep Kumar and the editorial team of the book, Ar. S.K.Negi, Ar. Anup Kumar Prasad, Dr. Naveen Nishant, Er. Nikhil Singh, Ar. Shivangi Pal, Ar. Nitin Singh Negi and Er. Harsh Gautam and other eminent scientists of CSIR CBRI Roorkee.

Published in the Newspaper "The Voice of Nation"

Low cost construction technologies book published by cbri researcher.

• The Times Of Suncity
(Dr Rakesh Vashishtha) N.O. Roorki

CSIR CBRI Roorkee published a book titled "Low-Cost Construction Technologies (1947 -2025) by CSIR-CBRI Researchers" on 30th July 2025. This Book is a humble tribute to the visionary scientists whose groundbreaking contributions have redefined the construction technology landscape in India. Their relentless pursuit of excellence has transformed scientific research into real-world solutions, directly impacting the lives of millions, from vulnerable rural communities to large-scale urban developments. Their contributions have significantly enhanced buildings' safety, durability, and efficiency, particularly benefiting those in economically weaker sections and disaster-prone areas.

Ar. S.K.Negi, who has conceptualized and authored the book, has been working on the book for the last few months. The book he has lived on, worked on, and seen being developed for more than 35 years of his service in CBRI Roorkee.

The book will be helpful for building practitioners looking for the time-tested low-cost construction technologies and students visiting the Rural Technology Park, curious about the technical building details behind the time-tested technologies demonstrated there.

The occasion was graced by CBRI Director Prof. R Pradeep Kumar and the editorial team of the book, Ar. S.K.Negi, Ar. Anup Kumar Prasad, Dr. Naveen Nishant, Er. Nikhil Singh, Ar. Shivangi Pal, Ar. Nitin Singh Negi and Er. Harsh Gautam and other eminent scientists of CSIR CBRI Roorkee.

Published in the Newspaper "The Times of Suncity"

CSIR-CBRI Roorkee released a book titled *"Low-Cost Construction Technologies (1947–2025)"* by Ar. S.K. Negi on 30th July 2025, showcasing affordable, sustainable, and disaster-resilient building solutions. The launch was led by CBRI Director Prof. R. Pradeep Kumar and senior scientists.

CSIR-CBRI in the Limelight | 29.07.2025

उत्तराखंड

Skill Initiative Program.

By **Sahara Live News**

JUL 28, 2025

Inauguration of Five-Day Training Program on Seismic Retrofitting and DPR Preparation at CSIR-CBRI, Roorkee

Roorkee, July 28, 2025:

A five-day Training Program on Seismic Retrofitting and DPR Preparation commenced today at CSIR–Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee, under the CSIR Integrated Skill Initiative Program. Scheduled from July 28 to August 1 2025, the workshop is sponsored by the Himachal Pradesh State Disaster Management Authority (HPSDMA) and coordinated by Er. Ashish Pippal, Senior Scientist, CSIR-CBRI. The inaugural session was graced by the Chief Guest, Prof. R. Pradeep Kumar, Director, CSIR-CBRI, along with Ar. S.K. Negi, Chief Scientist, and other eminent dignitaries including Dr. Ajay Chaurasiya, Sh. Nadeem Ahmad, Dr. Leena Chaurasiya, Dr. Chandan Swaroop Meena, and Dr. Naveen Nishant. Along with that, Sh. Rajnish Kumar, Technical Assistant, Ms. Sanskriti Sharma, Sh. Amzad, Sh. Mahesh, and other staff members from the ODS Division also extended their valuable support and presence. Dr. Ajay Chaurasia briefed the participants about the objectives and structure of the training program. He motivated the participants by highlighting the importance of such technical workshops in enhancing practical knowledge and skills. Thereafter, Ar. S.K. Negi expressed heartfelt appreciation for the unwavering support and trust shown by the Himachal Pradesh Government towards CSIR-CBRI. He remarked that such collaborations not only strengthen institutional ties but also play a pivotal role in advancing safer and more resilient infrastructure across vulnerable regions. Director Prof. R. Pradeep Kumar, in his inaugural address underlined the importance of hands-on training and real-world experience in the field of structural engineering. He remarked, "It is through practice that knowledge becomes wisdom. In hilly regions, the risk of structural failures is significantly higher, and hence, engineers must meticulously examine every aspect on the ground." He also introduced the participants to CSIR-CBRI's vision, capabilities, and ongoing research in earthquake-resistant construction and retrofitting technologies. The vote of thanks was proposed by Sh. Nadeem Ahmad, Chief Scientist, who extended a warm welcome to all participants and conveyed his best wishes for a productive and enriching training experience. He acknowledged the collective efforts of the organizing team and emphasized the value of collaborative learning in strengthening disaster resilience. The training program comprises expert lectures, technical sessions, and hands-on demonstrations designed to enhance the practical skills and awareness of engineers and professionals engaged in structural safety and disaster risk mitigation.

Ishwar chand reporter sahara tv uttrakhand

Published in :- https://www.saharalivenews.com/archives/9548

www.livehindustan.com

हिन्दुस्तान

देहरादून, मंगलवार, 29 जुलाई 2025 04

'इंजीनियरों को हर पहलू का निरीक्षण करना चाहिए'

रुड़की, संवाददाता। सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर प्रदीक कुमार ने कहा कि संरचनात्मक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में व्यावहारिक प्रशिक्षण और कार्यस्थल अनुभव का विशेष महत्व है। अभ्यास से ही ज्ञान में परिपक्वता आती है। पहाड़ी क्षेत्रों में संरचनात्मक असफलताओं की संभावना अधिक होती है। इसलिए इंजीनियरों को प्रत्येक पहलू का गहन निरीक्षण करना चाहिए। सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने प्रतिभागियों को सीबीआरआई की गतिविधियों, क्षमताओं और भूकंपरोधी निर्माण तथा रेट्रोफिटिंग तकनीकों पर किए जा रहे अनुसंधान से भी अवगत कराया।

सीबीआरआई में भूकंपीय रेट्रोफिटिंग और डीपीआर तैयारी पर आधारित पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ सोमवार को किया गया। जिसका प्रयोजन हिमाचल प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

सीबीआरआई में भूकंपीय रेट्रोफिटिंग तैयारी पर प्रशिक्षण शुरू

(एचपीएसडीएमए) द्वारा किया गया है। सीबीआरआई के मुख्य वैज्ञानिक एसके नेगी ने सीबीआरआई के प्रति हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा प्रदर्शित सहयोग और विश्वास के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार का सहयोग संस्थागत साझेदारी को आगे बढ़ाता है।

इस दौरान डॉ. अजय, नदीम, डॉ. लीना, डॉ. सीएस मीना, डॉ. नवीन निशांत आदि मौजूद रहे। पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम विशेषज्ञ व्याख्यान, तकनीकी सत्रों और व्यावहारिक प्रदर्शन के माध्यम से प्रतिभागियों की संरचनात्मक सुरक्षा और आपदा जोखिम न्यूनीकरण से संबंधित व्यावहारिक दक्षताओं को बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है।

रुड़की सीबीआरआई में सोमवार को आयोजित कार्यशाला में उपस्थित लोग। • हिन्दुस्तान

Published in Hindustan Newspaper

सीबीआरआइ में स्वास्थ्य शिविर का शुभारंभ करते संस्थान के निदेशक • संस्थान

सीबीआरआइ में स्वास्थ्य परीक्षण शिविर शुरू

जागरण संवाददाता, रुड़की : केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) में सोमवार को स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ संस्थान के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार ने किया। उन्होंने कहा कि समय-समय पर स्वास्थ्य परीक्षण जरूरी है। जिस तरह की लाइफ स्टाइल हो चली है उसमें तमाम विकार शरीर में उत्पन्न हो रहे हैं। इनको शुरुआत में अनदेखा करने से बाद में यह बड़ी बीमारी बन जाते हैं। आज डायबिटीज, ब्लड शुगर, कोलेस्ट्राल का बढ़ना, हाई बीपी आदि की समस्या बढ़ती जा रही है। यह शिविर 30 जुलाई तक चलेगा। सोमवार को संस्थान के 55 प्रतिभागियों ने स्वास्थ्य जांच कराई। इस मौके पर समन्वयक सीबीआरआइ के डा. राजेश कुमार वर्मा, सह समन्वयक डा. नीरज जैन आदि मौजूद रहे।

Published in Dainik Jagran

CSIR–CBRI, Roorkee started a five-day training on Seismic Retrofitting and DPR Preparation on 28 July 2025, supported by HPSDMA. Inaugurated by Prof. R. Pradeep Kumar, the program focuses on practical training for disaster resilience and structural safety.

CSIR-CBRI in the Limelight | 19.07.2025

Shah directs formation of team to address Himachal natural disasters

Jayashree Nandi
letters@hindustantimes.com

NEW DELHI: Union home minister Amit Shah has directed the formation of a multi-sectoral central team to study and address increasing frequency and intensity of natural disasters in Himachal Pradesh, the ministry of home affairs (MHA) said in a statement.

In a recent meeting chaired by Shah, it was observed that the Himalayan state has witnessed an increase in the frequency and intensity of cloudbursts, flash floods, landslides and torrential rainfall, causing widespread loss of life, damage to infrastructure, livelihoods and environmental degradation.

To address these concerns, the MHA constituted a multi-sectoral central team, comprising experts from National Disaster Management Authority (NDMA), Central Building Research Institute (CBRI) Roorkee, Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM) Pune, Geologist, and Indian Institute of Technology (IIT) Indore, the statement said.

At least 85 lives have been lost, and 34 people are still missing in rain-related incidents in the hill state in the ongoing monsoon so far. →P8

Published in Hindustan Times Newspaper

Set up multi-sectoral team for natural disasters, says Shah

TIMES NEWS NETWORK

New Delhi: In view of the increasing frequency and intensity of natural disasters and the need to mitigate losses, Union home minister Amit Shah on Sunday directed the formation of a multi-sectoral central team.

Shah recently held a review meeting on the natural disasters in Himachal Pradesh, where massive loss of lives and livelihoods have been reported due to an increase in the frequency and intensity of cloudbursts, flash floods, landslides and torrential rainfall, causing widespread damage to infrastructure and environmental degradation in the state.

The multi-sectoral central team would comprise experts from National Disaster Management Authority (NDMA), Central Building Research Institute (CBRI) Roorkee, Indian Institute of Tropical Meteorology (IITM) Pune, and Indian Institute of Technology (IIT) Indore.

To provide immediate relief to affected people in Himachal Pradesh, the Union govt has already deputed an Inter-Ministerial Central Team (IMCT) for a first-hand assessment of the damages. IMCT is visiting the affected areas of the state from July 18-21.

Shah recently held a review meeting on the natural disasters in Himachal Pradesh, where massive loss of lives and livelihoods have been reported

A high-level committee chaired by Shah has already approved an outlay of over Rs 2,006 crore to Himachal Pradesh for recovery and reconstruction in areas affected by disasters like floods, landslides and cloudbursts in 2023, releasing the first instalment of this package (Rs 451 crore) on July 7.

Earlier on June 18, Centre released an instalment of Rs 198 crore for relief measures in Himachal Pradesh under State Disaster Response Fund.

Published in Times New Network Newspaper

हिमाचल प्रदेश में आपदाओं पर केंद्र गंभीर, बनाएगा विशेष टीम

गृह मंत्री शाह का निर्देश-पता लगाएं, क्यों बढ़ीं आपदाएं

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। हिमाचल प्रदेश में बादल फटने, अचानक बाढ़ आने और भूस्खलन की बढ़ती घटनाओं पर केंद्र सरकार गंभीरता से ध्यान दे रही है। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति के कारणों का पता लगाने के लिए एक बहु-क्षेत्रीय समिति के गठन का निर्देश दिया है। इसमें कई प्रमुख संस्थानों के विशेषज्ञ शामिल होंगे।

गृह मंत्री शाह की अध्यक्षता में हुई एक बैठक में इस बात पर मंथन किया गया कि हिमाचल प्रदेश में बादल फटने, भूस्खलन और मूसलाधार बारिश की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हुई है। इससे राज्य में व्यापक जनहानि, बुनियादी ढांचे और आजीविका को नुकसान और पर्यावरण क्षरण भी हुआ है। शाह ने तुरंत राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एडीएमए), केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) रुड़की, भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम) पुणे, भूविज्ञानी और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) इंदौर के विशेषज्ञों की एक बहु-क्षेत्रीय केंद्रीय टीम गठित करने का निर्देश दिया।

बैठक में कहा गया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, केंद्र सरकार आपदाओं के समय बिना किसी भेदभाव के राज्यों के साथ मजबूती से खड़ी है। अमित शाह की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय समिति वर्ष

अंतर-मंत्रालयी दल ले रहा हालात का जायजा...हिमाचल प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में दक्षिण-पश्चिम मानसून 2025 के दौरान बाढ़, अचानक आई बाढ़ और भूस्खलन के मद्देनजर केंद्र सरकार राज्य के ज्ञापन का इंतजार किए बिना ही नुकसान के प्रत्यक्ष आकलन के लिए एक अंतर-मंत्रालयी केंद्रीय दल को 18 जुलाई को ही भेज चुका है। यह केंद्रीय दल 21 जुलाई तक राज्य के प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करेगा।

अन्य राज्यों की भी लगातार की जा रही है मदद...हिमाचल प्रदेश के आपदा प्रभावित लोगों की सहायता के लिए केंद्र सरकार 18 जून को राज्य आपदा मोचन निधि से 198.80 करोड़ रुपये की केंद्रीय हिस्सेदारी की पहली किस्त भी दे चुकी है। केंद्र ने हिमाचल समेत सभी राज्यों को आवश्यक राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एडीआरएफ) टीमें, सेना टीमें और वायु सेना की तैनाती सहित सभी प्रकार की रसद सहायता भी प्रदान की है।

2023 के लिए आपदाओं से प्रभावित क्षेत्रों में पुनर्वास और पुनर्निर्माण के लिए हिमाचल प्रदेश को 2006.40 करोड़ के परिव्यय को पहले ही मंजूरी दे चुकी है। 7 जुलाई 2025 को 451.44 करोड़ रुपये की पहली किस्त भी जारी कर दी गई थी।

Published in Amar Ujaala Newspaper

Union Home Minister Amit Shah has called for the formation of a multi-sectoral central team to tackle natural disasters, following increased incidents in Himachal Pradesh. The proposed team will include experts from various institutions like CSIR-CBRI and focus on damage assessment, infrastructure restoration, and long-term disaster management planning.

CSIR-CBRI in the Limelight | 19.07.2025

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में तीन दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण का भव्य समापन — युवाओं को मिली ऊर्जा दक्ष और सतत भवन निर्माण तकनीकों की गहन जानकारी

bahadrabadnews July 19, 2025 11:21 am

(शहजाद अली हरिद्वार)रुड़की, 18 जुलाई 2025: सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम "भवन निर्माण प्रौद्योगिकियों में नवीनतम प्रवृत्तियाँ" का समापन शुक्रवार को संस्थान परिसर में उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

यह प्रशिक्षण 16 से 18 जुलाई तक आयोजित किया गया, जिसमें देश के विभिन्न तकनीकी संस्थानों से आए प्रतिभागी छात्रों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

यह प्रशिक्षण 16 से 18 जुलाई तक आयोजित किया गया, जिसमें देश के विभिन्न तकनीकी संस्थानों से आए प्रतिभागी छात्रों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

समापन समारोह में मुख्य [illegible] श्री एस.के. नेगी ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि इस प्रकार के तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम न केवल छात्रों को ज्ञान [illegible] की दिशा में प्रेरित करते हैं,

बल्कि उन्हें सतत और ऊर्जा दक्ष निर्माण तकनीकों से भी अवगत कराते हैं। उन्होंने भवन निर्माण क्षेत्र में तकनीकी विकास और पर्यावरणीय स्थायित्व को एक साथ जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया।

ओडीएस प्रमुख श्री नदीम अहमद ने युवाओं में व्यावहारिक कौशल विकसित करने के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि आज का निर्माण उद्योग उन्नत तकनीकों और स्मार्ट समाधानों की ओर बढ़ रहा है, ऐसे में प्रशिक्षण कार्यक्रमों की उपयोगिता और भी अधिक बढ़ जाती है।

इस कार्यक्रम का संयोजन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ताबिश आलम द्वारा किया गया, जिनके नेतृत्व में श्री रजनीश सहित आउटरीच एवं प्रचार-प्रसार सेवा प्रभाग (ओडीएस) की टीम ने उत्कृष्ट समन्वय किया। प्रतिभागियों को ऊर्जा दक्ष भवन निर्माण, स्मार्ट निर्माण प्रणालियाँ और टिकाऊ तकनीकों पर व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई।

अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। यह कार्यक्रम प्रतिभागियों के लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायी अनुभव रहा।

Published in :- https://bahadrabadnews.com/csir-cbri-grand-closing-of-three-day-national-training-in-roorkee-energy-of-energy-and-sustainable-building-construction-techniques-received-by-the-youth/

CSIR-CBRI in the Limelight | 16.07.2025

उत्तराखंड

“Latest Trends in Building Construction

By **Sahara Live News**

JUL 16, 2025

Three-Day Training Program on “Latest Trends in Building Construction Technologies” Begins at CSIR-CBRI, Roorkee

Roorkee, July 16, 2025 — A three-day national-level training program on “Latest Trends in Building Construction Technologies” commenced today at the CSIR-Central Building Research Institute (CBRI), Roorkee. Scheduled from July 16 to 18, the program is specially designed for trainee students from various technical institutes across India, aiming to expose them to cutting-edge innovations and sustainable practices in the field of building construction.

The training program was inaugurated by Prof. R. Pradeep Kumar, Director of CSIR-CBRI. In his inaugural address, Prof. Kumar highlighted the importance of staying abreast of technological advancements in the construction sector. He stated, “Innovations are continuously reshaping the building construction landscape. It is crucial for today’s youth to be aware of sustainable, advanced, and environmentally friendly technologies. This program will not only impart practical knowledge but also instill confidence in young professionals to face future challenges.” He also underlined the significance of both academic education and value-based learning for holistic development.

The inauguration began with a warm welcome to all participants by Shri Nadeem Ahmad, Chief Scientist. The training is being coordinated by Dr. Tabish Alam, Senior Scientist, and includes a series of expert sessions on vital topics such as precast construction systems, prefabricated construction technology, energy-efficient building design, and smart construction methods.

To provide experiential learning, the program also features guided tours of CSIR-CBRI’s state-of-the-art labs at CSIR-CBRI, Roorkee, allowing participants to witness firsthand the practical application of the technologies discussed.

Present during the inauguration were Er. Ashish Pippal, Dr. Chandan Swaroop Meena, Mr. Rajnish Kumar (Technical Assistant), and other members of the Outreach and Dissemination Services (ODS) team. The inaugural session concluded with a vote of thanks by Er. Ashish Pippal, who urged participants to make the most of this learning opportunity and channel their knowledge towards meaningful societal and academic contributions.

Certificates will be distributed to all participants during the closing ceremony on July 18, marking the successful culmination of this impactful training initiative.

Published in :- https://www.saharalivenews.com/archives/9509

CSIR-CBRI Roorkee held a three-day training program on "Latest Trends in Building Construction Technologies" from July 16–18, 2025, for technical students across India. The program featured expert sessions, lab visits, and hands-on demonstrations on modern, sustainable construction practices.

CSIR-CBRI in the Limelight | 03.07.2025

UNCATEGORIZED

सीबीआरआई रुड़की ने धर्मशाला में आयोजित डेस्टिनेशन हिमाचल 2025 प्रदर्शनी में भाग लिया

Jan Mudde · 2 weeks ago · 1 min read

JAN MUDDE LIVE

LIVE CRICKET SCORE

RECENT | LIVE | UPCOMING

ENG 387/10(112.3) & 192/10(62.1) vs IND 387/10(119.2) & 170/10(74.5)

England win by 22 runs

Spread the love

आरिफ नियाजी।

सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की ने धर्मशाला में आयोजित डेस्टिनेशन हिमाचल 2025 प्रदर्शनी में भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ला और कांगड़ा से संसद सदस्य (लोकसभा) डॉ. राजीव भारद्वाज ने किया। दोनों ने सीबीआरआई स्टॉल का दौरा किया और हिमाचल जैसे पहाड़ी क्षेत्रों के लिए डिज़ाइन की गई तकनीकों में बहुत रुचि दिखाई।

धर्मशाला के विधायक श्री सुधीर शर्मा ने भी स्टाल का दौरा किया और देश के भवन और आवास की जरूरतों के लिए सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे महत्वपूर्ण कार्यों की सराहना की।

इस स्टाल में कई दिलचस्प प्रदर्शन थे, जिनमें राम मंदिर के मॉडल, ऊर्जा की बचत करने वाले ईंट भट्टे, मिट्टी बनाने वाली ईंट बनाने की मशीनें, सोलर water heater for high altitude region और बहुत कुछ शामिल थे। 1000 से अधिक स्कूली छात्रों ने इस स्टॉल का दौरा किया और इन नवाचारों को देखने और जानने के लिए उत्साहित थे।

इसके अलावा, सीएसआईआर-सीबीआरआई स्टाल ने गणमान्य व्यक्तियों, अधिकारियों और युवाओं की व्यापक रुचि को आकर्षित किया-जो टिकाऊ और तकनीकी निर्माण समाधानों के प्रति सीबीआरआई की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

Published in :- https://www.janmudde.com/archives/33804

उत्तराखंड

डेस्टिनेशन हिमाचल 2025

By **Sahara Live News**

JUL 3, 2025

सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की ने धर्मशाला में आयोजित डेस्टिनेशन हिमाचल 2025 प्रदर्शनी में भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन हिमाचल प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ला और कांगड़ा से संसद सदस्य (लोकसभा) डॉ. राजीव भारद्वाज ने किया। दोनों ने सीबीआरआई स्टॉल का दौरा किया और हिमाचल जैसे पहाड़ी क्षेत्रों के लिए डिज़ाइन की गई तकनीकों में बहुत रुचि दिखाई।

धर्मशाला के विधायक श्री सुधीर शर्मा ने भी स्टाल का दौरा किया और देश के भवन और आवास की जरूरतों के लिए सीबीआरआई द्वारा किए जा रहे महत्वपूर्ण कार्यों की सराहना की।

इस स्टाल में कई दिलचस्प प्रदर्शन थे, जिनमें राम मंदिर के मॉडल, ऊर्जा की बचत करने वाले ईंट भट्टे, मिट्टी बनाने वाली ईंट बनाने की मशीनें, सोलर water heater for high altitude region और बहुत कुछ शामिल थे। 1000 से अधिक स्कूली छात्रों ने इस स्टॉल का दौरा किया और इन नवाचारों को देखने और जानने के लिए उत्साहित थे।

इसके अलावा, सीएसआईआर-सीबीआरआई स्टाल ने गणमान्य व्यक्तियों, अधिकारियों और युवाओं की व्यापक रुचि को आकर्षित किया-जो टिकाऊ और लचीले निर्माण समाधानों के प्रति सीबीआरआई की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

ईश्वर चंद्र संवाददाता सहारा टीवी

Published in :- https://www.saharalivenews.com/archives/9454

From 2nd-4th July 2025, CSIR-CBRI Roorkee participated in "Destination Himachal 2025" in Dharamshala, showcasing innovative building technologies for disaster-prone, high-altitude regions. Its exhibits like prefab shelters and solar water heaters drew attention from dignitaries and visitors.

CSIR-CBRI in the Limelight | 28.06.2025

राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय खास खबर राजनीति लोकल न्यूज़ स्वास्थ्य राज्य शिक्षा एक्सक्लूसिव बॉलीवुड Live

UNCATEGORIZED

सीएसआईआर – सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट रुड़की में महानिदेशक एवं डीएसआईआर, भारत सरकार की सचिव पहुंची रूड़की,हुआ स्वागत

सीएसआईआर - सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की में सीएसआईआर की महानिदेशक एवं डीएसआईआर, भारत सरकार की सचिव डॉ. (श्रीमती) एन. Kalaiselvi तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन संस्थान के दौरे पर पहुंचे।

इस अवसर पर सीबीआरआई निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार के साथ वरिष्ठ वैज्ञानिक एस. के. नेगी, डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. डी. पी. कनुगो, डॉ. पी. सी. थपलियाल, एस. के. सिंह, डॉ. चंदन स्वरूप मीणा, आशीष पिप्पल, डॉ. हेमलता, डॉ. हीना गुप्ता, ashwathi और डॉ. लीना चौरेशिया उपस्थित रहे। आगंतुक विशिष्ट अतिथियों ने संस्थान की अत्याधुनिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं और सुविधाओं का भ्रमण किया, जिनमें विरासत दीर्घा (Virasat Dirgha), राष्ट्रीय भूकंप अभियंत्रण परीक्षण सुविधा (NEETF), डेब्रिस फ्लो सुविधा, लिक्विफेक्शन प्रयोगशाला, 3डी प्रिंटिंग लैब, अग्नि अभियंत्रण परीक्षण सुविधा एवं ऑयल वेल फायर मिटिगेशन सुविधा प्रमुख रहीं।

भ्रमण के पश्चात आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार के स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने संस्थान की उपलब्धियों और विकास यात्रा को साझा करते हुए प्रेरक नारा प्रस्तुत किया: "हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR"।

डॉ. कलाईसेवी ने अपने संबोधन में सीबीआरआई की तकनीकी क्षमताओं, सामूहिक कार्यसंस्कृति और नवाचारों की सराहना करते हुए विशेष रूप से जलवायु-प्रतिकारक भवनों, 12000 फीट की ऊँचाई or uske uppar उपयोग योग्य solar water heater सौर तापीय प्रणाली, अग्नि सुरक्षा अभियांत्रिकी, 3डी प्रिंटिंग तकनीक, और HARI Project के अंतर्गत लेह-लद्दाख जैसे उच्च हिमालयी क्षेत्रों के लिए विकसित आवासीय समाधानों की सराहना की। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों का उद्देश्य होना .

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन ने संस्थान के ऊर्जा-सम्पन्न और नवाचार केंद्रित वातावरण की सराहना करते हुए कहा कि सीबीआरआई भारत@2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भागीदार बन सकता है। उन्होंने और आपदा-रोधी भवन डिज़ाइन परियोजनाओं में सीबीआरआई की भूमिका को रेखांकित किया और संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों को देश-विदेश में प्रचारित करने की आवश्यकता पर बल दिया ताकि उनका लाभ सुदूरवर्ती और आपदा-प्रभावित क्षेत्रों तक पहुँच सके।

कार्यक्रम का समापन संस्थान निदेशक द्वारा अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट करने और प्रो. एस. के. सिंह द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

Published in :- https://www.janmudde.com/archives/33794

उत्तराखंड

हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR"।

By Sahara Live News
JUN 28, 2025

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में डीजी, सीएसआईआर और सचिव, डीएसआईआर, भारत सरकार एवं सचिव, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार का आगमन
रुड़की, 28/06/2025:

सीएसआईआर – सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की में आज सीएसआईआर की महानिदेशक एवं डीएसआईआर, भारत सरकार की सचिव डॉ. (श्रीमती) एन. कलाईसेवी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन संस्थान के दौरे पर पहुंचे।

इस अवसर पर सीबीआरआई निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार के साथ वरिष्ठ वैज्ञानिक एस. के. नेगी, डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. डी. पी. कनुगो, डॉ. पी. सी. थपलियाल, एस. के. सिंह, डॉ. चंदन स्वरूप मीणा, आशीष पिप्पल, डॉ. हेमलता, डॉ. हीना गुप्ता, ashwathi और डॉ. लीना चौरेशिया उपस्थित रहे। आगंतुक विशिष्ट अतिथियों ने संस्थान की अत्याधुनिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं और सुविधाओं का भ्रमण किया, जिनमें विरासत दीर्घा (Virasat Dirgha), राष्ट्रीय भूकंप अभियंत्रण परीक्षण सुविधा (NEETF), डेब्रिस फ्लो सुविधा, लिक्विफेक्शन प्रयोगशाला, 3डी प्रिंटिंग लैब, अग्नि अभियंत्रण परीक्षण सुविधा एवं ऑयल वेल फायर मिटिगेशन सुविधा प्रमुख रहीं।

भ्रमण के पश्चात आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार के स्वागत भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने संस्थान की उपलब्धियों और विकास यात्रा को साझा करते हुए प्रेरक नारा प्रस्तुत किया: "हर घर में CBRI, हर दिल में CSIR"।

डॉ. कलाईसेवी ने अपने संबोधन में सीबीआरआई की तकनीकी क्षमताओं, सामूहिक कार्यसंस्कृति और नवाचारों की सराहना करते हुए विशेष रूप से जलवायु-प्रतिकारक भवनों, 12000 फीट की ऊँचाई or uske uppar उपयोग योग्य solar water heater सौर तापीय प्रणाली, अग्नि सुरक्षा अभियांत्रिकी, 3डी प्रिंटिंग तकनीक, और HARI Project के अंतर्गत लेह-लद्दाख जैसे उच्च हिमालयी क्षेत्रों के लिए विकसित आवासीय समाधानों की सराहना की। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों का उद्देश्य होना चाहिए: "To touch the untouched, to reach the unreached"।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव डॉ. एम. रविचंद्रन ने संस्थान के ऊर्जा-सम्पन्न और नवाचार केंद्रित वातावरण की सराहना करते हुए कहा कि सीबीआरआई भारत@2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भागीदार बन सकता है। उन्होंने Polar Mission Centers, Coastal Marine Spatial Planning, और आपदा-रोधी भवन डिज़ाइन परियोजनाओं में सीबीआरआई की भूमिका को रेखांकित किया और संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों को देश-विदेश में प्रचारित करने की आवश्यकता पर बल दिया ताकि उनका लाभ सुदूरवर्ती और आपदा-प्रभावित क्षेत्रों तक पहुँच सके।

कार्यक्रम का समापन संस्थान निदेशक द्वारा अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट करने और प्रो. एस. के. सिंह द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

Ishwar chand reporter sahara tv

Published in :- https://www.saharalivenews.com/archives/9416

On 28 June 2025, Dr. N. Kalaiselvi (DG, CSIR & Secretary, DSIR) and Dr. M. Ravichandran (Secretary, MoES) visited CSIR-CBRI, Roorkee. They reviewed CBRI's advanced facilities and praised its innovations in disaster-resilient housing, green technologies, and its role in achieving the CSIR@2047 vision, especially for remote and high-altitude areas.

CSIR-CBRI in the Limelight | 27.06.2025

सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की में 'कम लागत वाली निर्माण तकनीकों' पर कार्यशाला का समापन

सीएसआईआर–सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई), रुड़की द्वारा आयोजित 'उत्तर-पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र की कम लागत वाली निर्माण तकनीकों' पर केंद्रित पांच दिवसीय कार्यशाला का समापन शुक्रवार को ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क, सीएसआईआर-सीबीआरआई परिसर में हुआ। यह कार्यशाला 23 जून से प्रारंभ हुई थी, जिसमें विभिन्न अभियंता, वास्तुविद, शोधकर्ता और तकनीकी पेशेवर शामिल हुए। इसमें ऐसे निर्माण तरीकों पर चर्चा की गई जो स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार, किफायती और पर्यावरण के अनुकूल हों। प्रस्तुतियों और प्रायोगिक सत्रों के माध्यम से पारंपरिक हिमालयी तकनीकों को आधुनिक निर्माण विधियों के साथ जोड़ने पर विशेष ध्यान दिया गया। समापन सत्र में कार्यशाला के प्रमुख बिंदुओं की संक्षिप्त समीक्षा की गई। वक्ताओं ने ऐसे निर्माण समाधान अपनाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया जो स्थानीय आवश्यकताओं के अनुकूल हों और प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर सके, विशेषकर ग्रामीण और पर्वतीय क्षेत्रों में। इस अवसर पर सीबीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कानूंगो ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि वैज्ञानिक शोध और पारंपरिक ज्ञान को मिलाकर निर्माण क्षेत्र की कई समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। उन्होंने बताया कि संस्थान ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोगी तकनीकों के विकास के लिए कार्य करता रहेगा। इसके पूर्व प्रमाण पत्र वितरित किए गए। प्रतिभागियों को डॉ.कानूंगो , डॉ.ताबिश आलम, आर्किटेक्ट अनुप कुमार प्रसाद, और डॉ.नवीन निशांत द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन डॉ.ताबिश आलम द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने सभी वक्ताओं, आयोजकों और उपस्थितजनों का सहयोग के लिए आभार प्रकट किया। यह कार्यशाला निर्माण तकनीकों की समझ और अनुभव साझा करने का अवसर बनी, जिससे क्षेत्र विशेष की आवश्यकताओं के अनुरूप समाधान तैयार करने में सहयोग मिल सकता है।

Published in :- https://www.janmudde.com/archives/33769

CSIR-CBRI, Roorkee held a five-day workshop from 23–27 June 2025 on low-cost, eco-friendly construction for the Himalayan region, focusing on local challenges and sustainable solutions.

CSIR-CBRI in the Limelight | 23.06.2025

उत्तराखंड

उत्तर-पश्चिमी हिमालय क्षेत्र से प्राप्त कम लागत वाली निर्माण तकनीकों”

By Sahara Live News

JUN 23, 2025

सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट, रुड़की द्वारा आयोजित “उत्तर-पश्चिमी हिमालय क्षेत्र से प्राप्त कम लागत वाली निर्माण तकनीकों” पर पांच दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन सत्र 23 जून 2025 को शुरू हुआ और यह 27 जून 2025 तक जारी रहेगा, जिसमें विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और पेशेवरों को क्षेत्रीय रूप से टिकाऊ और लागत प्रभावी निर्माण विधियों पर विचार-विमर्श करने के लिए एक साथ लाया जाएगा। उद्घाटन सत्र की शुरुआत कार्यशाला के उद्देश्यों के विस्तृत अवलोकन के साथ हुई। अनूप कुमार प्रसाद ने पुष्प के साथ निदेशकों महोदय का स्वागत किया। संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक सुरेंद्र कुमार नेगी भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर प्रदीप कुमार, रुड़की ने कम लागत वाले समाधानों के माध्यम से हिमालय क्षेत्र में निर्माण चुनौतियों से निपटने के उद्देश्य से विशेषज्ञों की भागीदारी पर प्रकाश डालते हुए उद्घाटन भाषण दिया।

Published in:- https://www.saharalivenews.com/archives/9387

CSIR-CBRI, Roorkee organized a five-day workshop from 23–27 June 2025 on low-cost construction in the Himalayan region, focusing on local challenges and sustainable solutions.

CSIR-CBRI in the Limelight | 06.06.2025

उत्तराखंड

प्रधानमंत्री आवास योजना- ग्रामीण, उदय भारत की तस्वीर

By **Sahara Live News**

JUN 6, 2025

सीबीआरआई रुड़की अपने कार्यों के लिए भारत के साथ-साथ विदेश में भी अपनी पहचान बनाए हुए हैं भारत सरकार की लोक कल्याणकारी नीतियों को धरातल पर उतरने के लिए रोजाना नए आयाम स्थापित और प्रयास करती रहती है प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण उदय भारत की एक साथ तस्वीर है सी बी आर आई विभिन्न क्षेत्रों में शोध करके कार्यों को जमीन से जुड़े हुए कार्यों को आम आदमी तक पहुंचाने के कार्य करती है यहां के वैज्ञानिक और रोजाना नए शोध कर करके भारत को एक नई पहचान देते हैं

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने पीएमएवाई-जी, एमओआरडी के तहत क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला में भाग लिया।

हमें यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई) ने ग्रामीण विकास मंत्रालय (एमओआरडी) द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएवाई-जी) के तहत आयोजित क्षेत्रीय ग्रामीण कार्यशाला में भाग लिया।

इस कार्यक्रम में गोवा के माननीय मुख्यमंत्री श्री प्रमोद सावंत ने मुख्य अतिथि के रूप में और मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री पेम्मासानी चंद्रशेखर ने सम्मानित अतिथि के रूप में भाग लिया।

कार्यशाला में प्रमुख चुनौतियों का समाधान करने, नवीन समाधानों की खोज करने और पीएमएवाई-जी योजना के लिए आगे का रास्ता तय करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।
कार्यशाला के दौरान ग्रामीण आवास महानिदेशक और रक्षा मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने पीएमएवाई-जी मिशन की सफलता में सीएसआईआर-सीबीआरआई के अपार योगदान को स्वीकार किया और उसकी सराहना की। 2016 में कार्यक्रम की स्थापना के बाद से, सीएसआईआर-सीबीआरआई ने निम्नलिखित में महत्वपूर्ण योगदान दिया है:

Published in:- https://www.saharalivenews.com/archives/9345

CSIR-CBRI, Roorkee participated in World Environment Day by contributing to rural development under Unnat Bharat Abhiyan, showcasing its efforts toward sustainable village growth.

CSIR-CBRI in the Limelight | 05.06.2025

पर्यावरण संरक्षण हम सब की जिम्मेदारी, नरेंद्र पन्त डीएसपी

रुड़की सी बी आर आई परिसर में विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण का आयोजन किया गया कार्यक्रम में पहुंचे
श्री नरेंद्र पंत , डीएसपी रुड़की और विश्व पर्यावरण दिवस के मुख्य अतिथि, डॉ डी पी कानूनगो जी, आज के कार्यवाहक निदेशक सीबीआरआई, डॉ आर के वर्मा, समिति के अध्यक्ष, सभी वरिष्ठ वक्ताओं और छात्रों ने पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए व्याख्यान दिए

कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना और हरित भारत के संकल्प को साकार करना था। इस अवसर पर फलदार, छायादार और औषधीय पौधों का रोपण किया गया, जिनमें पीपल, नीम, आम, बेल, अशोक और तुलसी प्रमुख रहे।

पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए वृक्षारोपण अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि आधुनिक जीवनशैली में बढ़ते प्रदूषण के बीच हमें प्रकृति के संरक्षण की ओर गंभीरता से ध्यान देना होगा। उन्होंने युवाओं से विशेष रूप से अपील की कि वे अधिक से अधिक पेड़ लगाएं और उनकी देखभाल भी करें, ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ और सुरक्षित पर्यावरण मिल सके।

उन्होंने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस हमें इस बात की याद दिलाता है कि प्रकृति हमारी ज़िम्मेदारी है। वृक्षारोपण केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन देने वाला प्रयास है।

कार्यक्रम का समापन देश के पर्यावरण की रक्षा हेतु सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल देते हुए किया गया

Published in :- https://www.saharalivenews.com/archives/9334

A tree plantation drive was organized at CSIR-CBRI, Roorkee on World Environment Day to promote environmental awareness. Director Dr. Naresh Batra emphasized the importance of connecting with and protecting nature.

CSIR-CBRI in the Limelight | 15.05.2025

"स्वच्छता सबका दायित्व" थीम के तहत भारत सरकार की पहल स्वच्छता पखवाड़ा 2025 चल रहे उत्सव के हिस्से के रूप में, सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीबीआरआई), रुड़की ने अपने दो सप्ताह के स्वच्छता अभियान (1-15 मई, 2025) का समापन 15 मई, 2025 को आरएनटी ऑडिटोरियम में आयोजित एक समापन समारोह के साथ किया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. तीना चौरसिया और डॉ. नीरज जेन ने किया। डॉ. तीना चौरसिया ने सम्मानित सभा का स्वागत किया और पखवाड़े के दौरान आयोजित गतिविधियों का विस्तृत अवलोकन प्रस्तुत किया, जिसमें वृक्षारोपण अभियान, सीएसआईआर-सीबीआरआई सदस्यों के लिए एक नारा प्रतियोगिता, सीएसआईआर-सीबीआरआई कर्मचारियों और बाल विद्या मंदिर स्कूल के छात्रों के बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता, बिजली के उपकरणों की सफाई और पूरे संस्थान में व्यापक सफाई अभियान आदि शामिल थे। सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने उपस्थित लोगों को संबोधित किया और सभी समन्वयकों, प्रतिभागियों और सहयोगी कर्मचारियों के सामूहिक प्रयासों की सराहना की। उन्होंने सतत विकास के महत्व पर जोर दिया, युवाओं को अपशिष्ट प्रबंधन के लिए अभिनव समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित किया और बाहरी सफाई के साथ-साथ मानसिक शांति बनाए रखने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला, उन्होंने कहा, "स्वच्छता पूजा के बाद दूसरे स्थान पर है।"

डॉ. नीरज जेन ने चित्रकला प्रतियोगिता में उल्लेखनीय उत्साह और प्रतिभा के साथ प्रतियोगिताओं के विजेताओं और उपविजेताओं के नामों की घोषणा की। प्रशंसा और प्रेरणा के रूप में, प्रो. आर. प्रदीप कुमार ने स्लोगन और चित्रकला प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए, बच्चों और प्रतिभागियों के प्रयासों और रचनात्मकता की सराहना की।

एक विशेष सम्मान के रूप में, ए.आर. एस.के. नेगी, वरिष्ठ मुख्य वैज्ञानिक ने संस्थान के सफाई कर्मचारियों को स्वच्छता बनाए रखने के उनके निरंतर प्रयासों के लिए प्रशंसा का प्रतीक देकर सम्मानित किया।

समारोह का समापन डॉ. एस. मैती द्वारा दिए गए हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने निदेशक महोदय, बाल विद्या मंदिर के शिक्षकों और छात्रों, आयोजन टीम और सीएसआईआर-सीबीआरआई में स्वच्छता पखवाड़ा 2025 के सफल आयोजन में योगदान देने वाले सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया।

Published in Sahara news :- https://www.janmudde.com/archives/33392

The valedictory ceremony of Swachhta Pakhwada 2025 was organized at CSIR-CBRI, Roorkee on 15th May 2025. Director Prof. R. Pradeep Kumar distributed prizes to children and appreciated their active participation in promoting cleanliness.
The event also saw enthusiastic involvement from scientists, staff, and officials of the institute.

CSIR-CBRI in the Limelight | 13.05.2025

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने "खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक" पैनल पर की चर्चा

Jan Mudde · 3 days ago · 1 min read

आरिफ़ नियाज़ी।

रुड़की सीएसआईआर-सीबीआरआई ने "खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक" पैनल पर चर्चा की गई जिसमें पूरे देश और विदेश के वैज्ञानिक और प्रोफेसर बड़ी संख्या में पहुंचे हैं।

Published in Jan Mudde E-newspaper

आधुनिक उपकरणों का प्रयोग जरूरी

चर्चा

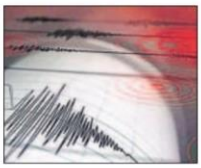

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। 2015 में नेपाल में आए विनाशकारी भूकंप के दस साल पूरे होने के उपलक्ष्य में सीबीआरआई में एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। खंडहर से लचीलापन सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण के लिए 2015 नेपाल भूकंप से सबक शीर्षक पर वैज्ञानिकों ने अपनी-अपनी राय दी। वैज्ञानिकों का मानना है कि भूकंप और भूस्खलन के जनहानि से बचने के लिए आधुनिक उपकरणों का प्रयोग करना होगा। हेल्थ और एजूकेशन सेंटर को और मजबूत करना होगा।

कार्यक्रम की शुरुआत सीबीआरआई के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार ने की। इसके बाद पैनल चर्चा हुई। चर्चा का मुख्य निष्कर्ष यह निकला कि स्थानीय इंजीनियरों, राजमिस्त्रियों और अधिकारियों के बीच क्षमता निर्माण को मजबूत करने की तत्काल आवश्यकता है। भूकंप सुरक्षा पर अधिक ध्यान केंद्रित करने के लिए इंजीनियरिंग पाठ्यक्रम को संसोधित करना है। विशेषज्ञों ने कमजोर इमारतों, विशेष रूप से स्कूलों, अस्पतालों और विरासत संरचनाओं को फिर से तैयार करने के महत्व पर प्रकाश डाला। पैनल ने भूकंप, भूस्खलन और बाढ़ के जोखिमों को नियोजन में सम्मिलित करते हुए बहु-खतरे जोखिम क्षेत्रीकरण की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने भारतीय मानकों (आईएस कोड) को नियमित रूप से अपडेट करने और गैर-संरचनात्मक तत्वों जैसे कि इनफिल दीवारों और फिक्स्चर पर अधिक ध्यान देने का भी आह्वान किया। जीआईएस, ड्रोन और त्वरित आँकलन जैसे आधुनिक उपकरणों के उपयोग को भविष्य की तैयारियों के लिए आवश्यक माना गया।

कार्यक्रम का समापन सीबीआरआई के वैज्ञानिक एसके नेगी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया। इस दौरान आशीष पिप्पल, मिकी दलबेहरा, डॉ. चन्दन स्वरूप मीना, आशीष कपूर, समीर यादव, अमित कुश, प्रो. सीवी आर मूर्ति, प्रो. डी श्रीनागेश, प्रो. योगेंद्र सिंह, अनूप कारंत, डॉ. अरुण कुमार, जितेंद्र सिंह, डॉ. हरि कुमार, प्रो. रूपेन गोस्वामी आदि शामिल रहे।

Published in Hindustan Times

खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 के नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक

सीएसआईआर-सीबीआरआई में हुई परीचर्चा

गोल्डन टाइम्स

रुड़की (आरिफ नियाजी) रुड़की सीएसआईआर –सीबीआरआई ने खंडहर से पुनर्निर्माण: 2015 नेपाल भूकंप से सीखे गए सबक" पैनल पर चर्चा की गई जिसमें पूरे देश और विदेश के वैज्ञानिक और प्रोफेसर बड़ी संख्या में पहुंचे हैं। दरअसल 2015 में नेपाल में आए विनाशकारी भूकंप के दस साल पूरे होने के उपलक्ष्य में, सीएसआईआर–केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने 13 मई, 2025 को "खंडहर से लचीलापनरू सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण के लिए 2015 नेपाल भूकंप से सबक" शीर्षक पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत सीएसआईआर

सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर प्रदीप कुमार के अध्यक्षीय सम्बोधन से हुई, जिसके बाद डॉ. अजय चौरसिया ने भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के तहत नेपाल में स्कूलों और अस्पतालों के पुनर्निर्माण में सीबीआरआई के योगदान पर प्रस्तुति दी। इन प्रयासों को प्रदर्शित करने वाली एक विशेष वृत्तचित्र फिल्म, "खंडहर से लचीलापन" भी जारी की गई। इस कार्यक्रम में भारत और नेपाल के प्रमुख विशेषज्ञ, इंजीनियर, आर्किटेक्ट और नीति निर्माता पुनर्निर्माण प्रयासों पर विचार करने और सुरक्षित बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण सबक साझा करने के लिए एक साथ आए। पैनल में प्रो. सी.वी. आर. मूर्ति, प्रो. डी. श्रीनागेश, प्रो. योगेंद्र सिंह, श्री अनूप कारंत, डॉ. अरुण कुमार, श्री जितेंद्र सिंह, डॉ. हरि कुमार, प्रो. रूपेन गोस्वामी, डॉ. अजय चौरसिया, श्री एसके नेगी और डॉ. डीपी कानूनगो जैसे प्रसिद्ध विशेषज्ञ शामिल थे।

शेष पृष्ठ 2 पर.....

Published in Golden Times E-newspaper

❖ E-News Clips:-

उत्तराखंड

समाज पर तकनीकी का बड़ा प्रभाव, निदेशक प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार सीबीआरआई

By Sahara Live News

MAY 13, 2025

सीएसआईआर-सीबीआरआई ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस 2025 का तकनीकी हस्तांतरण एवं नवाचार प्रदर्शनी के साथ किया उत्सव

रुड़की, 13 मई 2025

Published in E-Sahara News:- https://www.saharalivenews.com/archives/9252

❖ Television News :-

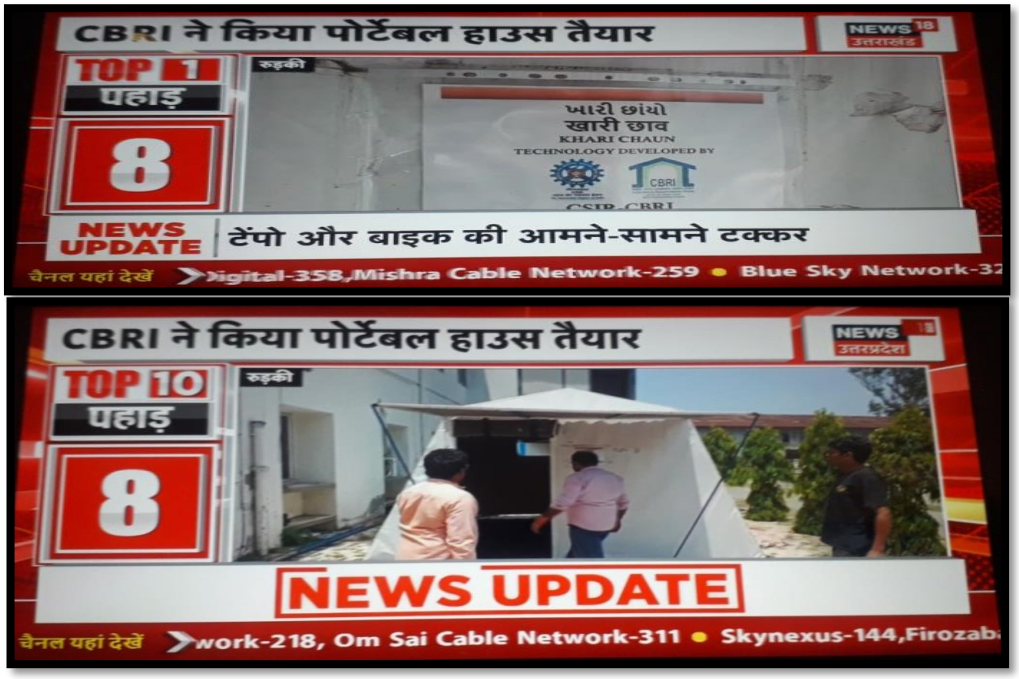

Telecasted in News Uttar Pradesh Channel

Telecasted in Nai Aawaz Channel

Media Clips of a Technical Panel-discussion on "Lessons Learned from the 2015 Nepal Earthquake" held at CSIR-CBRI, Roorkee. Experts highlighted how post-earthquake reconstruction in Nepal guided the development of disaster-resilient building technologies. The event was chaired by Director Prof. R. Pradeep Kumar and included valuable insights from national and international scientists.

CSIR-CBRI in the Limelight | 30.04.2025

ई-ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी क्रांतिकारी कदम:पंत

कृषि प्रौद्योगिकी

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. केके पंत ने कहा है कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी में एक क्रांतिकारी कदम है। जो पारंपरिक डीजल-चालित मशीनों के लिए एक हरित विकल्प प्रदान करता है। यह बात उन्होंने बुधवार को सीबीआरआई में आयोजित ई-ट्रैक्टर और ई टिलर अनावरण कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि भारत का कृषि क्षेत्र, जो देश की अर्थव्यवस्था की धड़कन है, एक उल्लेखनीय परिवर्तन के कगार पर है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों को पेश करना और उनका सफलतापूर्वक क्रियान्वयन स्थिरता, परिचालन लागत और उत्पादकता जैसी चुनौतियों से निपटने का वादा करता है।

सीबीआरआई के डायरेक्टर प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि हिमालयी क्षेत्र में सतत कृषि के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम के तहत काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च-सेंट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएसआईआर-सीएमईआरआई) दुर्गापुर ने सीबीआरआई रुड़की के सहयोग से अपने अत्याधुनिक ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर तकनीकों का प्रदर्शन किया है। जहां किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाते हुए इसकी मजबूती एवं फायदे के बारे में जानकारी ली।

- **सीबीआरआई में ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर का किया गया अनावरण**
- **किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाकर देखा इसकी मजबूती**

सीबीआरआई के डायरेक्टर ने कहा कि यह पहल भारत के स्वच्छ ऊर्जा अभियान में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जो नवाचार और स्थिरता के माध्यम से कृषि को बदलने पर केंद्रित है।

आयोजित कार्यक्रम के दौरान किसानों द्वारा पूछे गए सवालों का सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने जवाब दिया। उन्हें आधुनिक कृषि पद्धति के बारे में भी जानकारी दी। सीएसआईआर-सीएमईआरआई के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू ने कहा कि हमारी इलेक्ट्रिक कृषि मशीनरी केवल दक्षता के लिए नहीं, बल्कि समावेशिता और स्थिरता के लिए डिजाइन की गई है। हम हर क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का सामना करने वालों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

बुधवार को आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आईआईटी के निदेशक प्रो. कमल किशोर पंत, विशिष्ट अतिथि के सहायक महानिदेशक (प्रोसेस इंजीनियरिंग) आईसीएआर नई दिल्ली डॉ. नरसैयाह कैरम, डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू, डॉ. प्रदीप राजन, वैज्ञानिक चंदन कुमार मीणा आदि मौजूद रहे।

रुड़की में सीबीआरआई में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में ई ट्रैक्टर की ट्रायल करते अतिथि और संस्थान पदाधिकारी। हिन्दुस्तान

रुड़की में सीबीआरआई में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में ई ट्रैक्टर की ट्रायल करते अतिथि और संस्थान पदाधिकारी। • हिन्दुस्तान

ई-ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी क्रांतिकारी कदम:पंत

कृषि प्रौद्योगिकी

रुड़की, कार्यालय संवाददाता। आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. केके पंत ने कहा है कि इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर कृषि प्रौद्योगिकी में एक क्रांतिकारी कदम है। जो पारंपरिक डीजल-चालित मशीनों के लिए एक हरित विकल्प प्रदान करता है। यह बात उन्होंने बुधवार को सीबीआरआई में आयोजित ई-ट्रैक्टर और ई टिलर अनावरण कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि भारत का कृषि क्षेत्र, जो देश की अर्थव्यवस्था की धड़कन है, एक उल्लेखनीय परिवर्तन के कगार पर है। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों को पेश करना और उनका सफलतापूर्वक क्रियान्वयन स्थिरता, परिचालन लागत और उत्पादकता जैसी चुनौतियों से निपटने का वादा करता है।

सीबीआरआई के डायरेक्टर प्रो. आर प्रदीप कुमार ने कहा कि हिमालयी क्षेत्र में सतत कृषि के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम के तहत काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च-सेंट्रल मैकेनिकल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीएसआईआर-सीएमईआरआई) दुर्गापुर ने सीबीआरआई रुड़की के सहयोग से अपने अत्याधुनिक ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर तकनीकों का प्रदर्शन किया है। जहां किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाते हुए इसकी मजबूती एवं फायदे के बारे में जानकारी ली।

- **सीबीआरआई में ई-ट्रैक्टर और ई-टिलर का किया गया अनावरण**
- **किसानों ने ई-ट्रैक्टर चलाकर देखा इसकी मजबूती**

सीबीआरआई के डायरेक्टर ने कहा कि यह पहल भारत के स्वच्छ ऊर्जा अभियान में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। जो नवाचार और स्थिरता के माध्यम से कृषि को बदलने पर केंद्रित है।

आयोजित कार्यक्रम के दौरान किसानों द्वारा पूछे गए सवालों का सीबीआरआई के वैज्ञानिकों ने जवाब दिया। उन्हें आधुनिक कृषि पद्धति के बारे में भी जानकारी दी। सीएसआईआर-सीएमईआरआई के निदेशक डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू ने कहा कि हमारी इलेक्ट्रिक कृषि मशीनरी केवल दक्षता के लिए नहीं, बल्कि समावेशिता और स्थिरता के लिए डिजाइन की गई है। हम हर क्षेत्र के किसानों, विशेष रूप से कठिन परिस्थितियों का सामना करने वालों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

बुधवार को आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आईआईटी के निदेशक प्रो. कमल किशोर पंत, विशिष्ट अतिथि के सहायक महानिदेशक (प्रोसेस इंजीनियरिंग) आईसीएआर नई दिल्ली डॉ. नरसैयाह कैरम, डॉ. नरेश चंद्र मुर्मू, डॉ. प्रदीप राजन, वैज्ञानिक चंदन कुमार मीणा आदि मौजूद रहे।

Presented in Hindustan Times

- **Television clips :-**

Television telecast on News 18 Uttar Pradesh

CSIR-CBRI in the Limelight | 14th-17th April,2025

आधुनिकीकरण व विरासत संरक्षण के बीच संतुलन जरूरी

Figure 1

सीएसआईआर-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की में सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और पुनरुद्धार पर चल रही चार दिवसीय कार्यशाला और प्रदर्शनी "भगवान एक खोज"

उत्खनन अब केवल खुदाई नहीं है-यह विज्ञान के माध्यम से सभ्यता को डिकोड कर रहा है, सिनौली उत्खनन पर प्रो. (डॉ.) संजय मंजुल

Published in Dainik Jagran Newspaper